# बाल भारती

जुलाई 1989 बच्चों की सम्पूर्ण पत्रिका मूल्य दो रुपये



# शीर्षक बताओ



छाया : आर.के. नरूला

15 अगस्त 1989 तक उपरोक्त चित्र का शीर्षक पृष्ठ 24 पर बने कूपन में भरकर भेजे।

D-36, Street No-2
Naraini Nagar
Delhi

शीर्षक बताओ प्रतियोगिता (अप्रैल 1989) का परिणाम–
पुरस्कृत शीर्षक है ·

यह सब क्या चक्कर है मिस्टर,
डिब्बे में क्या दी है सिस्टर,
अच्छा ! लड्डू, पेड़े और मिठाई,
जन्म-दिवस की तुम्हें बधाई।

यह शीर्षक भेजा है–मयूर कुमार, उम्र 11 वर्ष, द्वारा बिशन प्रताप सिंह, बेंता चौक, लहेरिया सराय, दरभंगा बिहार ने। इन्हें 25 रुपये का नकद पुरस्कार भेजा जा रहा है।

# डायमंड कामिक्स में

चाचा भतीजा और उनका
जादुई चिराग आपके मनोरंजन
के लिए हर माह रोचक कामिक्स
पेश करते हैं।



## चाचा भतीजा
का नया कारनामा




48 पृष्ठ
मूल्य 5/-

## चाचा भतीजा के अन्य कारनामे

| | |
|---|---|
| चाचा भतीजा और उड़ने वाली छिपकली | 5.00 |
| चाचा भतीजा और मरघट की रानी | 5.00 |
| चाचा भतीजा और हत्यारा जिन्न | 5.00 |
| चाचा भतीजा और सर्पदानव | 5.00 |
| चाचा भतीजा और खतरनाक यंत्र | 5.00 |
| चाचा भतीजा और रहस्यमय दानव | 5.00 |
| चाचा भतीजा और प्रेतों की रानी | 5.00 |
| चाचा भतीजा और तिलस्मी फूल | 5.00 |
| चाचा भतीजा और पर्वत देवता | 5.00 |
| चाचा भतीजा बौनों के देश में | 5.00 |
| चाचा भतीजा और मायावी राक्षस | 5.00 |
| चाचा भतीजा और मौत का गीत | 5.00 |
| चाचा भतीजा बन्दरों के देश में | 5.00 |
| चाचा भतीजा और पत्थर की देवी | 5.00 |
| चाचा भतीजा और नील मणि | 5.00 |
| चाचा भतीजा और जालिम जादूगरनी | 5.00 |
| चाचा भतीजा और जम्बू से टक्कर | 5.00 |
| चाचा भतीजा और कातिल मशीनें | 5.00 |
| चाचा भतीजा और सर्प भवानी | 5.00 |
| चाचा भतीजा और हत्यारी तलवार | 5.00 |
| चाचा भतीजा और तिलस्मी फूल | 5.00 |
| चाचा भतीजा और दाढ़ी वाली बुढ़िया | 5.00 |
| चाचा भतीजा और खतरनाक यंत्र | 5.00 |
| चाचा भतीजा और पाताल लोक | 5.00 |
| चाचा भतीजा और दुष्ट महाकाल | 5.00 |

## नई डायमंड कामिक्स जून '89 में प्रकाशित

| | |
|---|---|
| कार्टूनिस्ट प्राण का -चाचा चौधरी का इंसाफ | 6.00 |
| फौलादी सिंह और अंतरिक्ष के सम्राट | 5.00 |
| पलटू और जादू की छड़ी | 5.00 |
| लम्बू मोटू और अजनबी कातिल | 5.00 |
| जासूस चक्रम और पार्सल का रहस्य | 5.00 |
| पिकलू और आतंकवादी | 5.00 |
| मोटू छोटू और रहस्यमय नकाबपोश | 5.00 |
| राजन इकबाल और मौत का नाच | 5.00 |
| क्रिकेट कैसे खेलें (चार रंगों में) | 5.00 |

**डायमंड कामिक्स प्रा.लि.** 2715, दरियागंज, नई दिल्ली-110002

# बाल भारती

## बच्चों की सम्पूर्ण पत्रिका

वर्ष 42,अंक 2

आषाढ़-श्रावण
जुलाई- 1989

**बाल भारती परिवार**

संपादक : शिव कुमार
उप-संपादक : वेदपाल
श्रीमती नीलमणि शर्मा

संपादकीय 387038
दूरभाष : 387341

* * *

मुखपृष्ठ : आर.गणेशन
तृतीय कवर : वृंदावन लाल वर्मा
(फोटो डिवीजन)
चतुर्थ कवर : पुराना किला, दिल्ली
(मुल्कराज सिडाना)

चित्रांकन : इसरार अहमद
मुख पृष्ठ, तृतीय तथा चतुर्थ कवर आकल्पन : आर.के. टंडन

उत्पादन अधिकारी : रामस्वरूप मुंजाल

कहानियां :


| | | |
|---|---|---|
| लाश की गवाही | मनीष कुमार चौधरी | 5 |
| जहां चाह वहां राह | चित्रेश | 7 |
| श्रम की राजकुमारी | श्रीनिवास वत्स | 10 |
| एक सपूत का बलिदान | ज्ञानदेव रा. चौधरी | 12 |
| बुद्धिमान और बुद्धिहीन में अंतर | हीरालाल नंदा 'प्रभाकर' | 14 |
| अधिकारी का चुनाव | कृष्ण कुमार 'आशु' | 16 |
| सबसे बड़ा दान | राजेन्द्र कुमार साहू | 18 |
| साहस का पुतला | राजेन्द्र भाटिया | 19 |
| कत्ल का रहस्य | राकेश कुमार | 31 |
| पहुंचा हुआ साधु | सुरेन्द्र साह | 34 |
| आशीर्वाद या शाप | नैयर आज़म | 41 |
| घड़ियाल का ब्याह | डा. वीरेन्द्र शर्मा | 42 |
| चतुर ख़रगोश | सुरजीत | 43 |


कविताएं :


| | | |
|---|---|---|
| उमड़ घुमड़ कर.... | अतुल गोस्वामी | 9 |
| छाता | मोहन लाल पुरोहित | 13 |
| तैयारी चलने की | सुषमा 'मासूम' | 13 |
| बादल के घोड़े | गफ़ूर स्नेही | 13 |
| मेघ सभा | राजेन्द्र निशेश | 17 |
| प्रतीक्षा | डी.सी. केशवराव | 18 |
| सूरज बनो | अहद 'प्रकाश' | 23 |
| नाचे बंदरिया | मदन गोपाल शर्मा | 35 |
| वृक्षारोपण | — | 37 |
| वर्षा आई | संजय द्विवेदी | 44 |
| पुट्टी का डर | मारग्रेट बोरीसन | 48 |
| पढ़ाई | अशोक 'आनन' | 48 |
| स्कूल बस | कीर्ति प्रमोद | 49 |
| मिठाई खाई | चन्दपाल सिंह यादव 'मयंक' | 49 |


लेख :


| | | |
|---|---|---|
| उपन्यास सम्राट | हेमंत कुमार चावड़ा | 25 |
| वाल्ट-डिज़नी | पी.एस. शर्मा | 26 |
| प्रकृति की घटाओं पर विमुग्ध नेहरू | विष्णु खन्ना | 36 |
| प्रतिभा के धनी वृन्दावन लाल वर्मा | पूर्णिमा | 39 |
| मोहम्मद रफ़ी | सुरेन्द्र श्रीवास्तव | 46 |
| भारत विकास की ओर | साधना श्रीवास्तव | 50 |
| पुराना किला | सुप्रिय | 52 |


अन्य सभी स्थायी स्तंभ




जहांगीर खां का नाम खेल की दुनिया में चिरस्थाई बन गया है। पाकिस्तान के इस 26 वर्षीय युवक ने सत्रह वर्ष की आयु में 1981 में स्कवाश के खेल में विश्व चैम्पियनशिप जीती थी। तब से लेकर वर्ष 1987 के अंत तक इस नवयुवक ने 550 मैच, विभिन्न विश्व प्रतियोगिताओं में खेले और सबमें विजय प्राप्त की। यह अपने आप में एक अनोखा कार्य था। 1988 से आज तक इस नवयुवक ने 100 के लगभग मैच खेले और कुल तीन या चार मैच हारे हैं।

आपको ये सब बातें बताने का हमारा उद्देश्य था कि आप पाठक, विशेषकर बच्चे, इस बात को ध्यान रखें कि किसी भी क्षेत्र में सफलता पाने के लिए हमें कड़े अनुशासन, आत्मसंयम और परिश्रम की अत्यंत आवश्यकता होती है। जब तक हम अनुशासन में नहीं रहेंगे, चाहे वह पारिवारिक अनुशासन हो या खेल के संबंध में, सफलता हमें प्राप्त नहीं होगी।

जहांगीर खां का परिवार विश्व प्रसिद्ध खैबर दर्रे के कबाईली पठानों से संबंधित है। यह खेल उनके परिवार में उनके परदादा ने खेलना शुरू किया। बाद में इसके चाचा हाशिम खां सात बार विश्व चैम्पियन रहे फिर इसके पिता रोशन खां भी काफी समय तक विश्व चैम्पियन रहे। चाचा रहमत खां ने भी इस खेल में नाम कमाया। जहांगीर का भाई, जो कि इस खेल का अच्छा खिलाड़ी था 28 वर्ष की अल्पआयु में चल बसा। उसकी मृत्यु पर जहांगीर खां ने विश्व चैम्पियनशिप जीतने की कसम खाई थी और उसकी मृत्यु के ठीक दो वर्ष बाद चैम्पियनशिप जीत ली।

आज खेल की दुनिया में, जहां एक से एक बढ़कर खिलाड़ी मैदान में आ रहे हैं, किसी एक खिलाड़ी का विश्व प्रतियोगिता में लम्बे समय तक, बिना हारे, खेल पर छाये रहना अपने आप में कीर्तिमान है। इस युवक ने अथाह पैसा कमाया किंतु कभी भी, घमंड पास तक फटकने नहीं दिया। इससे यह पूछे जाने पर कि आपकी सफलता का रहस्य क्या है? तो उसका उत्तर था अनुशासन-खेल में, खाने में, और अपनी दिनचर्या में।

उसका यह कहना है कि मैं प्रातः बहुत जल्दी उठता हूं। दस मील की दौड़ लगाता हूं और उसके बाद चार घंटे खेल का अभ्यास करता हूं। और उसके बाद खाने की बात आती है। खाने के संबंध में उसका कहना है कि वह सादा खाना पसंद करता है तथा बेकार में पैसा खर्च करने का उसका कोई शौक नहीं है। उसने जो कुछ धन कमाया है उसको अमरीका और कनाडा की प्रसिद्ध कम्पनियों में लगा दिया है ताकि उसे खेल से रिटायर होने के बाद पैसे की कमी महसूस न हो। उसका ये भी कहना है कि खेल के अतिरिक्त, वह विश्व की प्रसिद्ध, खेल का सामान बनाने वाली, कम्पनियों के लिए 'फैशन माडल' के रूप में काम करता है ; वहां से भी उसकी अच्छी आय है।

जहांगीर अपना खाली समय अपने परिवार में बिताना पसंद करता है। उसका अधिक समय यूरोप में बीतता है। किंतु तब भी वह वहां के लोगों की नकल नहीं करता, उसे भारतीय और पाकिस्तानी संगीत बहुत प्रिय है। वह बड़ों के प्रति आदर भाव रखता है और छोटों को भी यथोचित सत्कार देता है।

इससे यह स्पष्ट हो गया है कि यदि हम अपना ध्यान अनावश्यक बातों से हटाकर उन्नित मार्ग पर, चाहे वह शिक्षा हो या खेल हो या व्यवसाय, लगाएं तो सफलता हमारे कदम चूमेगी।

शिवकुमार

# प्रतिक्रियाएं

बाल भारती का मार्च 1989 अंक पढ़ा। रोचक और ज्ञानवर्द्धक जानकारी मिली। ज्ञानवर्द्धन और प्रतिभा के विकास को आगे बढ़ाने में पत्रिका का जवाब नहीं है।

**ललता मीना**
**कोकरवाडा**
**जिला होशंगाबाद (म.प्र.)**

मैं ने मार्च 1989 की बाल भारती पढ़ी। अति रोचक लगी। सत्यमूर्ति का लेख पढ़ा। ज्ञान सागर की छपाई ठीक नहीं हुई थी, आप छपाई ठीक ढंग से करें।

**मनोहर जोशी**
**कुकड़ेश्वर मंदसौर (म.प्र.)**

बाल भारती का मार्च 1989 का अंक बहुत ही प्रशंसनीय लगा। सभी कहानियां रोचक थीं। 'भुलक्कड़ भोला' कहानी बहुत ज्यादा अच्छी लगी। आशा है आगे भी इतनी अच्छी कहानियां पढ़ने को मिलेंगी।

**जयपाल वाधवानी**
**इंदौर (म.प्र.)**

बाल भारती मार्च 1989 अंक में 'रिक्शावाला' तथा 'साइकिल की सवारी' कहानियां पसंद आईं। कृपया कविताएं कम छापा करें। विज्ञान के लेख भी छापा करें।

**जगतसिंह**
**हल्द्वानी (उ.प्र.)**

मार्च 1989 की बाल भारता अच्छा लगा। कहानेयां और लेख आकर्षक लगे। कविताओं की संख्या कम करें।

**अखिलेश भारती**
**भागलपुर**

मार्च 1989 अंक देर से पाकर भी होली के रंग में रंगा हुआ लगा। कविता, लेख, स्थाई स्तंभ हृदय स्पर्शी लगे। महान अभिनेत्री मीनाकुमारी पर लेख अच्छा लगा। नई वैचारिक प्रतियोगिता आरम्भ करें। आप 'होली' 'दीवाली' की तरह ईद और क्रिसमस के भी विशेषांक निकालें।

**दिनेश चन्द्र जोशी 'दिनेश'**
**हल्द्वानी (नैनीताल)**

होली विशेषांक (मार्च 1989) पढ़कर आनंद आया। मुखपृष्ठ की छटा देखते ही बनती थी। परंतु उससे भी ज्यादा आनंद 'भुलक्कड़ भोला,' 'रंग गायब' और 'गड़बड़ विद्यालय का पारितोषिक वितरण' पढ़ कर आया। आप इसी प्रकार प्रत्येक अंक में एक-एक हास्य कहानी छापें।

**गिरनेश सिंह सोलंकी**
**(सीतापुर)**

बाल भारती का मार्च 1989 का अंक मिला। ज्ञान सागर में टेस्ट हैट्रिक की जानकारी और तालिका देखकर मन झूम गया। स्वर्गीय मीना कुमारी के बारे में जानकारी अच्छी लगी।

**जावेद खान**
**गिरिडीह (बिहार)**

## आगामी अंक के आकर्षण

**कहानियां :** श्रम देवता, जादूगरनी, राष्ट्रीय ध्वज, अहंकार का पर्दा।
**कविताएं :** करना होगा तुमको प्यार, राष्ट्रीय गीत, कैसी ये आजादी भैया।
**लेख:** अरुणा आसफ अली, छाते की कहानी, राजा हारा, जनता जीती आदि।

# लाठा चोगवाही

—मनीष कुमार चौधरी

एक राजा था। उसकी शूरवीरता, दानवीरता, न्याय की ख्याति और प्रशंसा दूर-दूर तक फैली थी। उसके राज्य के लोग हर तरह से सुखी थे। लेकिन कुछ दिनों से उसके राज्य के एक गांव में अचानक चोरियां होने लगीं। लोग बहुत घबरा गए। जब भी कोई मुसाफ़िर उस गांव में ठहरता, तो उस रात चोरी ज़रूर होती। इसीलिए डर के मारे लोग गांव में किसी मुसाफ़िर को टिकने नहीं देते।

एक बार, एक सेठ कहीं जा रहा था। जब वह उस गांव के पास पहुंचा, तो रात हो चुकी थी। रात हो जाने के कारण उसने आगे बढ़ना उचित नहीं समझा और रात भर उस गांव में ठहरने का विचार किया। उसने गांव वालों से एक रात ठहरने के लिए शरण मांगी। परंतु कोई भी उसे अपने घर टिकाने के लिए तैयार नहीं हुआ।

सेठ के बहुत कहने और मिन्नतें करने पर एक व्यक्ति को उस पर दया आ गई और रात भर उसे अपने घर में शरण देना स्वीकार कर लिया। मोतीलाल नाम का वह व्यक्ति एक बनिया (दुकानदार) था। मुसाफ़िर से उसने साफ़-साफ़ शब्दों में कह दिया था कि देखो भाई ! जब कोई बाहर का आदमी इस गांव में कहीं ठहरता है, तभी चोरी हो जाती है। मैं और सारे गांव के लोग इसलिए तुम्हें टिकाने के लिए तैयार नहीं थे।

जवाब में मुसाफ़िर सेठ ने कहा कि आपको चिंता करने की ज़रूरत नहीं है। सवेरे मैं आपको अपना सब सामान और आपका सामान पूरा-पूरा दिखाऊंगा और तब जाऊंगा।

दोनों लेट गए। मोतीलाल जल्दी ही गहरी नींद में सो गया। लेकिन नई जगह और चोरी की आशंका से सेठ को नींद नहीं आ रही थी। रात के करीब तीन बज रहे थे। अचानक सेठ की नज़र उस व्यक्ति पर पड़ी, जो मोतीलाल के घर से कुछ सामान चुराकर भाग रहा था। सेठ बिजली की-सी



फुर्ती से उठा और चोर को जा पकड़ा। पकड़े जाने पर चोर ने धीरे से कहा कि भला चाहते हो तो मुझे तुम छोड़ दो। शायद तुम जानते नहीं, मैं यहां का पहरेदार हूं। परंतु सेठ मुसाफ़िर किसी भी तरह चोर को छोड़ने को राजी नही हुआ और उसने चोर से कहा—"भाई वाह, खूब कहते हो तुम्हें छोड़ दूंगा तो मुझे ही चोर बनना पड़ेगा।"

कुछ देर दोनों में हाथापाई होती रही। सेठ ज्यादा मजबूत था। अतः जब चोर अपने आप को छुड़ा न सका तो झट चोरी का सामान एक तरफ़ फेंक दिया और सेठ को पकड़कर जोर से चिल्लाने लगा—"चोर-चोर...।" शोर सुनकर गांव के सभी लोग जाग गए और दौड़े आए। इधर वे दोनों एक दूसरे को पकड़े हुए चोर-चोर चिल्ला रहे थे। लोगों ने आकर देखा, तो दोनों में से एक

गांव का पहरेदार था और दूसरा वही सेठ मुसाफ़िर जिसने रात भर के लिए शरण मांगी थी।

चूंकि, गांव वाले पहरेदार को तो जानते थे और कुछ उससे डरते भी थे इसलिए वे उसका ही पक्ष ले रहे थे। मुसाफ़िर सेठ को चोर समझा गया और उसे पकड़ कर राजा के दरबार में पेश किया गया। सेठ ने राजा को रो-रोकर सारा हाल सुनाया और न्याय की प्रार्थना करने लगा।

राजा ने आदेश दिया कि दोनों को जेल में बंद कर दिया जाए। कल सुबह इन्हें पुनः मेरे सम्मुख पेश किया जाए। सेठ के हक में एक भी गवाह उसके पास नहीं था। सभी उसके खिलाफ़ थे।

दूसरे दिन दोनों-कथित अपराधियों को राजा के सम्मुख प्रस्तुत किया गया। राजा ने मुकदमा सुनना आरम्भ किया। उसी समय एक दरबारी आया और उसने बताया कि शहर के आठ-नम्बर दरवाजे के सामने सहायक कोतवाल की लाश कपड़ों में लिपटी पड़ी है। यह सुनते ही दरबार में सन्नाटा छा गया। राजा ने तत्काल ही पहरेदार और सेठ को आदेश दिया कि वह दोनों लाश को चारपाई पर डालकर ले आएं।

पहरेदार और सेठ दोनों चल पड़े। दरवाजे के सामने एक पेड़ के नीचे लाश कपड़े में बंधी पड़ी थी। दोनों ने उसे उठाया और चल पड़े। पहरेदार बहुत खुश था। वह जानता था कि इस मुकदमे में सेठ को सजा मिलेगी। चलते-चलते उसने सेठ से कहा—"सेठ जी ठीक तो है। अब जब कोड़ों की सजा मिलेगी तो खूब पता चलेगा।" सेठ बेचारा बहुत उदास था। कोड़ों की बात सुनकर उसे बहुत धक्का-सा लगा। उसने एक लम्बी सांस लेते हुए कहा—"मुझ निर्दोष को तुमने फंसाया है। राजा की सजा तो सह लूंगा लेकिन ईश्वर तुम्हें अवश्य सजा देगा।"

यह सुनकर पहरेदार जोर से हंस पड़ा और बोला—"चल-चल बड़ा आया है ईश्वर का डर दिखाने वाला। अरे मैंने तो पहले ही कहा था कि मैं यहां का पहरेदार हूं, मुझ पर कोई भी शक नहीं कर सकता।" ऐसी ही बातें करते-करते वे राज



के दरबार में पहुंचे। दरबार में लोग राजा के न्याय का बेसब्री से इंतजार कर रहे थे। दोनों ने लाश राजा के सामने रख दी। राजा ने अपने कर्मचारियों को लाश के बंधन तोड़ने का आदेश दिया। बंधन खुलते ही लाश की जगह सहायक कोतवाल उठ-कर खड़ा हो गया और कहा—"महाराज असली चोर यह पहरेदार है।" यह सुनकर राजा ने पहरेदार को सौ कोड़ों के मार की सजा दी और नौकरी से भी निकाल देने का आदेश दिया। लोग राजा के न्याय की प्रशंसा करने लगे और सेठ से क्षमा मांगी। लोगों व राजा ने सेठ को धन-धान्य से विदा किया।

वास्तव में राजा ने ही उन दोनों व्यक्तियों की बातें सुनने के लिए सहायक कोतवाल को लाश बनकर वहां पड़े रहने के लिए नियुक्त किया था। इसके बाद गांव में फिर कभी चोरी नहीं हुई।

**सुपुत्र श्री जगदीश नारायन**
**बिछियां जंगल तुलंसी राम**
**(खुद्दी टोला) गोरखपुर (उ.प्र.) 273001**

# जहां चाह वहां राह

—चित्रेश

बहुत दिन हुए, यूक्रेन के किसी पहाड़ी गांव में एक लड़का रहता था—स्लेपान। परिवार में उसकी मां 'अन्ना' और छोटा भाई 'दमिती' भी थे। उसके पिता पहाड़ से खिसकी एक चट्टान के नीचे दबकर मर चुके थे, इसलिए परिवार के भरण-पोषण की जिम्मेदारी 'स्लेपान' पर थी।

उसके पास दो एकड़ का खेत था जो बिल्कुल पहाड़ से सटा हुआ था। वह अपनी मेहनत से उस खेत में, परिवार के खानेभर को अनाज पैदा कर लेता था। एक दिन की बात है, स्लेपान खेत में हल चला रहा था। सहसा धूप हल्की पड़ने लगी। उसने सिर उठाकर ऊपर देखा—आसमान धूल-धूसरित होता जा रहा था।

वह समझ गया कि जोरों की आंधी आने वाली है। उसने जल्दी से बैलों को हल से मुक्त किया और उन्हें लेकर घर चल पड़ा। घर पहुंचते-पहुंचते आंधी जोर पकड़ने लगी थी। उसने मां की सहायता से बैलों को बाड़े के अंदर किया। फिर मां और भाई दमिंती के साथ घर के अंदर जाकर भीतर से दरवाजा बंद कर दिया।

समय बीतने के साथ-साथ आंधी विकराल रूप धारण करती जा रही थी। रात में तो भयानक सांय-सांय के बीच कई बार ऐसी जोरदार गड़गड़ाहट हुई कि लगा पहाड़ की चोटियां उखड़कर एक-दूसरे से टकरा रही हैं। सवेरे मौसम साफ़ था। स्लेपान घर से बाहर निकला। तूफ़ान बहुत कुछ तहस-नहस कर गया था। पेड़ों की मोटी-मोटी डालें टूटकर दूर-दूर बिखरी थीं। अनेक छोटे-बड़े पेड़ जड़ से उखड़ गए थे और कई छप्पर उड़कर नदी के किनारे जा पड़े थे। सारी विनाश लीला देखता, स्लेपान खेत की तरफ चल पड़ा।

वहां पहुंचकर उसकी आंखों के आगे अंधेरा छा गया। पहाड़ से खिसकी चिट्टानें उसके खेत में लुढ़की पड़ी थीं, जिससे हल चलाना असम्भव हो गया था, चट्टानें भी इतनी बड़ी-बड़ी कि दर्जनों आदमी मिलकर ताकत लगाते, तो भी वह अपनी जगह से न हिलतीं। स्लेपान पूरे गांव में घूम-घूमकर लोगों से सहायता की प्रार्थना करता। लेकिन कोई विशेष मदद न मिल सकी।

आखिर हारकर स्लेपान को 'तारास' नाम के जमींदार के यहां मजदूरी करने जाना पड़ा। उसके साथ अन्ना और दमिंती भी जाने लगे। तीनों 'तारास' के खेतों में खूब मेहनत करते, लेकिन जमींदार संतुष्ट न होता। छोटी-मोटी गलतियों पर भी वह आपे से बाहर होकर गालियां बकने लगता। स्लेपान अपने लिए तो सब कुछ सह लेता मगर जब तारास, अन्ना या दमिंती के साथ बदतमीजी से पेश आता तो वह तिलमिलाकर रह जाता था।

एक दिन तारास ने दमिंती को आलू खोदने पर लगाया। दमिंती अभी छोटा था, और उसने कभी यह काम किया भी नहीं था। आलू निकालने के लिए दमिंती जितनी बार कुदाल चलाता, एक दो आलू जरूर कट जाते। यह देख तारास का पारा सातवें आसमान पर चढ़ गया। उसने दमिंती को फटकार और गालियां तो सुनाई ही, चटाक-चटाक दो-तीन थप्पड़ भी जड़ दिए। स्लेपान को बहुत बुरा लगा। किसी प्रकार अपने गुस्से पर काबू रखकर उसने दमिंती को दूसरे काम में लगवा दिया और स्वयं आलू खोदने लगा।

उस दिन स्लेपान को बार-बार अपने खेतों की याद सताती रही। रात में, जब सब भोजन करके अलाव के सामने आग तापने लगे, तब भी वह खेतों के विषय में ही सोच रहा था, उसे चुप देख अन्ना ने पूछा—"क्या सोच रहे हो बेटा?"

"मां, संसार में दूसरे की गुलामी से बढ़कर कोई दुख नहीं होता। दुर्भाग्य से इन दिनों हम यही दुखमय जीवन व्यतीत कर रहे हैं। किंतु हम सच्चे दिल से प्रयास करें तो अपनी खोई जमीन वापस

पाकर इस नरक से छुटकारा पा सकते हैं।" उसने गम्भीरता से कहा।

"कैसे, बताओ तो सही ! हम कुछ भी करने को तैयार हैं।" दमिंती ने उत्साहित होकर पूछा। अन्ना भी उत्सुकता से अपने पुत्र को देख रही थी।

स्लेपान ने बताया–"हम सब मिलकर रोज रात में अपने खेत की चट्टानों को छैनी-हथौड़ा से तोड़-तोड़कर टुकड़ों में बदलेंगे। फिर नदी में फेंक देंगे।"

"लेकिन उतनी चट्टानें तोड़ने-बहाने में वर्षों का समय लग जाएगा।" अन्ना ने अपनी शंका प्रकट की।

"यह तो काम शुरू करने पर पता चलेगा कि चट्टानें कितनी तेजी से ख़त्म होती चली जाएंगी।" स्लेपान ने सबको उत्साहित किया।

सबने उसकी बात मान ली। उसी रात से काम शुरू हो गया। स्लेपान चट्टान पर छैनी ज़माता और हथौड़े से भरपूर चोट करता, बस अगले पल चटाक की आवाज करता हुआ चार-पांच किलो का टुकड़ा जमीन पर आ गिरता, जिसे अन्ना टोकरी में रखती जाती और दमिंती उसे उठाकर फेंकने चला जाता। इस तरह हफ़्ते डेढ़ में एक चट्टान समाप्त हो गई।

स्लेपान, अन्ना और दमिंती को यह काम करते-करते कई महीने गुजर गए। लोग पीठ पीछे उनका मजाक उड़ाने लगे, किंतु इन पर कोई असर न पड़ता। ये तीनों दिन भर तारास के यहां मजदूरी करते, रात में जितनी देर मन होता अपने खेत की चट्टानें साफ करते। एक रात, यह लोग ऐसे ही अपने काम में जुटे थे। तभी स्लेपान को अपने पीछे कुछ लोगों के हंसने-खिलखिलाने की आवाज सुनाई पड़ी। उसने पीछे मुड़कर देखा, सब उसके ही गांव के आदमी थे।

स्लेपान को अपनी तरफ देखते पाकर उनमें से एक व्यक्ति बोल उठा–"क्यों लड़के ! यहां क्या कर रहा है?"

"मूर्ख लड़के ! क्या तू सोचता है, इस तरह अपने खेत इस जीवन में वापस पा लेगा?" दूसरे



व्यक्ति ने हंसते हुए सवाल किया।

इस बीच दमिंती पत्थर फेंककर वापस आ गया था और भाई के पास खड़ा बातें सुन रहा था। स्लेपान ने उसे समझाया–"भाई, तुम यहां खड़े होकर अपना समय मत नष्ट करो, काम में लगे रहो।"

आगे बढ़कर दमिंती ने खाली टोकरी अन्ना के पास रख दी और भरी टोकरी उठाकर नदी की तरफ चला गया। अब स्लेपान भीड़ को सम्बोधित करके बोला–"देखिए अभी हम अपने खेत से पत्थर हटाने वाले सिर्फ तीन आदमी हैं। हमारी काम करने की क्षमता भी कम है, इस हालत में आप लोगों को हमारा लक्ष्य असम्भव दिख रहा है। किंतु मित्रों ! अनुभव और उम्र के साथ हमारी काम करने की क्षमता तो बढ़ेगी ही, साथ-साथ भविष्य में मेरी और दमिंती की पत्नियों के आने पर हमारी संख्या भी बढ़ जाएगी। यानी इन पत्थरों के खिलाफ़ लड़ने वालों की संख्या और क्षमता लगातार बढ़ेगी, जबकि बेचारी चट्टानें एक-एक करके कम ही होंगी।"



कहा–"देखिए इतने महीनों की मेहनत से हमने आलू बोने लायक पर्याप्त जमीन साफ कर ली है। क्या अब भी आप लोगों को विश्वास है कि हमें अपने खेत वापस नहीं मिलेंगे?"

उसकी उत्साह भरी बात लोगों पर जादू का सा असर डाल चुकी थी। भीड़ से निकल, एक अधेड़ व्यक्ति ने स्लेपान को गले लगा लिया, बोला–"जहां ऐसी विकट चाह है, वहां राह निकलने में देर नहीं लग सकती। आज से मैं भी तुम्हारे साथ हूं।"

अधेड़ व्यक्ति की देखा-देखी तमाम लोग स्लेपान का हाथ बढ़ाने के लिए तैयार हो गए। फिर तो दो-तीन महीने के अंदर खेत में पड़ी चट्टानें इस तरह गायब हो गईं, जैसे कभी थी ही नहीं।

लोग उसकी बात से प्रभावित हुए। हंसी ठट्टा बंद कर सबके सब उसी को आंखे फाड़े देख रहे थे। उत्साहित होकर स्लेपान ने आगे

पो. आ. जासापारा
गोसाईंगंज
सुलतानपुर (उ.प्र.) 228119

# उमड़-घुमड़कर आए बादल

–अतुल गोस्वामी

बज रहे मेढक जी ढोल,
मोर नाचता पांखे खोल,
कृषक देखे गगन की ओर,
कब बरसे बादल घनघोर।

आसमान में छाए बादल।
उमड़-घुमड़कर आए बादल॥

ले रही है नदी बलैया,
'भर दो मुझे' बोली तलैया,
कूप, पोखर ने किया तार,
मुझ पर भी कर दो उपकार।

खत वर्षा का लाए बादल।
पढ़कर उसे सुनाए बादल॥

'हार्ट' हुआ गरमी का फेल,
खत्म हुआ अब लू का खेल,
लग गया बूंदों का मेला,
मुड़े घरों को रिक्शा, ठेला।

देख-देख मुस्काए बादल।
इतना जल बरसाए बादल॥

जनप्रिय पुस्तक मंदिर
हरियाणा रोडवेज बस अड्डा
बल्लभगढ़- 121004

# प्रेम की राजकुमारी

—श्रीनिवास वत्स

एक गांव में एक किसान रहता था। उसके चार पुत्र थे। रघु, विनय, कर्ण और मदन। तीनों बड़े पुत्र बहुत मेहनती थे। परंतु सबसे छोटे पुत्र को किसान ने लाड़ प्यार से बिगाड़ दिया था। वह कोई भी कार्य नहीं करता था। बात-बात पर रूठ जाना और असम्भव बात के लिए हठ करना उसकी आदत थी।

किसान ने सोचा–'बच्चा है, बड़ा होकर समझ जाएगा।' पर ज्यों-ज्यों वह बड़ा होता गया, किसान के लिए परेशानी बढ़ने लगी। उसे चिंता हुई कि मेरे मरने के बाद इस निकम्मे और हठी लड़के को कौन रोटी देगा।'

किसान के तीनों बड़े लड़के प्रातः ही अपने खेतों में चले जाते और हर काम में अपने पिता का हाथ बंटाते,पर मदन सारा दिन इधर-उधर घूमता रहता और लोगों को तंग करने के अतिरिक्त कोई कार्य नहीं करता था।

एक दिन किसान की मृत्यु हो गई। उसके तीनों बड़े बेटों ने मदन से कहा–''अगर तुम काम करोगे तो तुम्हें रोटी मिलेगी, नहीं तो हम तुम्हें घर से निकाल देंगे।''

मदन ने तो कभी ऐसा सोचा भी नहीं था। अगले दिन प्रातः अपने भाइयों के साथ वह खेत पर गया। उसे एक हल्का-सा काम सौंपा गया पर उसने तो कभी भी कोई काम किया ही नहीं था। उसे डर लगा, अगर काम पूरा नहीं हुआ तो भाई पीटेंगे। वह उनसे छुपकर जंगल में भांग गया।

भूख प्यास से उसका बहुत बुरा हाल था।



तभी उसे एक वृक्ष के नीचे एक बौना बैठा दिखाई दिया। वह उस बौने के पास गया और बोला–"भाई ! बहुत भूखा हूं क्या मुझे कुछ खाना दे सकते हो।"

बौना उसे लेकर पास की गुफा में चला गया। मदन अंदर घुसकर हैरान रह गया। वहां शीशे की दीवारों वाला एक बहुत सुंदर कमरा था। उसमें तरह-तरह के पकवान रखे थे। पकवान देखते ही मदन के मुंह में पानी आ गया। कमरे के दरवाजे पर एक ताला लगा था। बौने ने ताला खोलने के लिए चाबी ढूंढी पर चाबी नहीं मिली। निराश मन से उसने मदन को कहा–"इस कमरे की चाबी खो गई है। अगर तुम उसे ढूंढने में मेरी मदद करो, तो, मैं तुम्हें अच्छी-अच्छी मिठाई खिलाऊंगा। मदन को बहुत भूख लगी थी। उसने कहा–"हां, मैं तुम्हारी सहायता करूंगा।"

बौना उसे लकड़ियों के ढेर के पास ले गया और कहने लगा–"मैं अभी थोड़ी देर पहले यहां बैठा था, शायद मेरी चाबी इन्हीं लकड़ियों में फंस गई है। तुम इन्हें एक-एक करके दूसरी तरफ रख दो।

मदन तो इतना काम देखकर घबरा गया, किंतु मरता क्या न करता। उसने धीरे-धीरे लकड़ियों को दूसरी तरफ रखना शुरू किया। मेहनत के कारण उसके शरीर से पसीना बहने लगा।

अंत में, उन्हें चाबी मिल ही गई। उन्होंने कमरा खोला और जी भरकर खाना खाया। तभी बौने ने मदन के फटे कपड़ों की ओर देखा जो लकड़ियां उठाते समय फट गए थे। उसने कहा–"मैं तुम्हें बहुत सुंदर-सुंदर कपड़े दूंगा, अगर तुम मेरा एक काम और कर दो।"

"कौन-सा काम?" मदन ने उत्सुकता से पूछा।

"इस शीशे के कमरे के नीचे एक कमरा और है जहां बहुत सुंदर-सुंदर कपड़े हैं, पर, उसकी चाबी भी मुझ से कुएं में गिर गई है। अगर तुम उस कुएं का पानी निकालने में मेरी मदद करो तो, मैं तुम्हें बहुत-सा धन भी दूंगा।"



"कुएं का पानी।" पहले तो मदन सकपकाया, पर, सुंदर कपड़ों के लालच ने उसे हां करने को मजबूर कर दिया।

अगली सुबह मदन और बौना कुएं से पानी निकालने लगे। सारा दिन काम करने से मदन का शरीर टूटने लगा। पर फिर भी वह लगा रहा।

अंत में, उन्हें चाबी मिल ही गई। चाबी लेकर बौने ने निचले कमरे को खोला। उसमें टंगे तरह-तरह के सुंदर कपड़े देखकर मदन हैरान था। वह समझ नहीं पा रहा था कि कौन-सी पोशाक उस पर सबसे सुंदर लगेगी।

एकाएक कमरा किसी अद्‌भुत रोशनी से चमकने लगा। मदन ने देखा एक सुंदर राजकुमारी जैसी लड़की कमरे के अंदर आ रही है।

मदन ने चुपके से बौने से पूछा–"यह कौन है?" बौना बोला–"यह श्रम-देवता की बेटी है और मैं इसका नौकर हूं। यह सुबह से शाम तक मेहनती आदमियों को देखती रहती है और उन्हें आशीर्वाद देती है पर, निकम्मे और आलसी लोगों से इसे बहुत नफ़रत है।"

निकम्मा और आलसी शब्द सुनकर मदन का सिर शर्म से झुक गया। वह भी तो आलसी था।

मदन को यूं शरमाते देख बौना बोला–"अरे

तुम तो बहुत मेहनती हो। तुमसे तो राजकुमारी खुश है।''

मुस्कुराते हुए राजकुमारी बोली–''हां-हां, अब मैं तुमसे बहुत खुश हूं। आज मैं सब कुछ देख रही हूं।''

राजकुमारी ने उसे एक सुंदर-सा कोट पहनाया और रेशम की टोपी पहनाई। अब वह एक राजकुमार लग रहा था।

मदन ने राजकुमारी से कहा–''तुम मेरे घर चलो। अब मैं बहुत मेहनत करूंगा।''

राजकुमारी हंसते हुए मदन से बोली–''पहले घर जाकर अपने भाइयों के साथ उनका हाथ बटाओं। जो मेहनत से जी नहीं चुराते, उनके पास, मैं, स्वयं ही पहुंच जाती हूं।'' मदन खुशी-खुशी परिश्रम का इरादा लिए घर की ओर चल पड़ा।

**शास्त्री सदन**
**392, बी, इंदिरा कालोनी**
**रोहतक (हरियाणा)**

# एक सपूत का बलिदान

**–ज्ञानदेव रा. चौधरी**

पबना (अब बंगलादेश में) जिले के मोहनपुर गांव में 23 जून 1901 को देशभक्त राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी का जन्म हुआ था। राजेन्द्र के बचपन का नाम 'चारू' था। देशभक्ति उनको विरासत में मिली थी। उनके बड़े भाई तथा पिता बंग-भंग आंदोलन के दौरान जेल की यातना भुगत चुके थे। जब वे 9—10 वर्ष के हुए, तब अपने भाई जितेन्द्र लाहिड़ी के पास वाराणसी चले आए। जितेन्द्र नाथ लाहिड़ी वहां चिकित्सक थे। चारू की शिक्षा-दीक्षा वाराणसी में हुई। विद्यार्थी जीवन में ही उनकी रचनाएं पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होने लगीं। यहीं, वह क्रांतिकारी 'शचीन्द्र सान्याल' के सम्पर्क में आए। वह उनसे बहुत प्रभावित हुए तथा 'हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन' के सदस्य बन गए।

'जलियांवाला बाग' के भीषण नरसंहार से राजेन्द्र और उनके साथी विदेशी शासन से क्षुब्ध थे और उनके हृदय में प्रतिशोध की ज्वाला धधक रही थी। लेकिन उनके पास धन का अभाव था। धन की यह कमी उन्हें खटक रही थी। अतः इस कमी को दूर करने के लिए, इन उत्साही देशभक्तों ने, काकोरी के समीप (लखनऊ के पास) एक यात्री-गाड़ी को जबरन रोक, सरकारी खजाना लूट लिया। इस घटना ने ब्रिटिश सरकार को झकझोर कर रख दिया। वह अपने को बुरी तरह अपमानित महसूस करने लगी। उसने षड्यंत्रकारियों को पकड़ने के लिए अपनी सारी शक्ति लगा दी। इस कांड में रामप्रसाद बिस्मिल, अशफ़ाकुल्ला, ठाकुर रोशन सिंह के अतिरिक्त राजेन्द्र लाहिड़ी का नाम भी शामिल था। गिरफ्तारी से बचने के लिए राजेन्द्र कलकत्ता चले गए। लेकिन दुर्भाग्य से वहां बम बनाते समय पकड़े गए और उन्हें 10 साल की सजा मिली। बाद में उन्हें मुकदमे के लिए लखनऊ स्थानांतरित कर दिया गया।

इस मुकदमे में उन्हें फांसी की सजा हुई और उन्हें गोंडा जेल में रखा गया। 17 दिसम्बर 1927 को 26 वर्ष का राजेन्द्र नाथ लाहिड़ी गोंडा जेल में गीता पढ़ते हुए मस्ती में झूमते हुए फांसी के तख्ते पर जा खड़ा हुआ और जोर से बोला–''वंदे मातरम्, भारत माता की जय।''

वीर राजेन्द्र लाहिड़ी ने मुस्कुराकर फांसी के टोप को पहन लिया। जल्लाद ने फुर्ती से फंदा गले में डालकर लीवर खींच दिया। अधिकारी आश्वस्त हुए और इस तरह भारत माता का यह वीर सपूत बलिदान हो गया। धन्य है वह वीर देशभक्त।

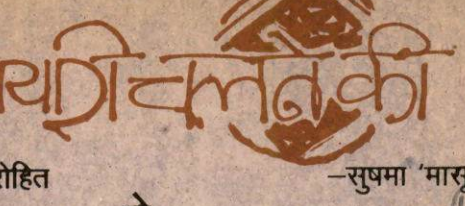
**मु.पो. सावदा सी.आर.**
**जिला–जलगांव (महाराष्ट्र) 425502**




—मोहन लाल पुरोहित

मुझको छाता छतरी कहते,
अंग्रेजी में अंबरेला कहते।
आदर इज्ज़त मेरी करते,
अपने सिर पर मुझको धरते।
साथी मैं हूं सबका भाई,
हिंदू मुस्लिम या हो ईसाई।
कड़ी धूप में उन्हें बचाता,
वर्षा में भी दौड़ा आता।
मेरा जिससे होता नाता,
भेद-भाव मैं नहीं जताता।
हो दाता या रंक भिखारी,
छोटे-मोटे नर या नारी।
सबकी मैं सेवा करता हूं,
भरसक संकट मैं हरता हूं।
बच्चों तुम यह सुनते जाना,
संकट हंसते-हंसते सहना।

द्वारा भटड़ों का चौक,
बीकानेर, (राजस्थान)




—सुषमा 'मासूम'

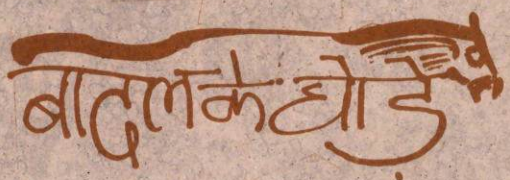
ये सावन की पावन बूंदे,
बरसी रिमझिम रिमझिम।
सूरज, चंदा, तारे छिप गए,
बादल मचा रहे ऊधम।

चुरा लिया बूंदों ने भैया,
नीलगगन से नीला रंग।
बरगद, पीपल, नीम बेरिया,
हंसे खूब हरियाली संग।

सखी हवा ने हौले-हौले
कुंडी जब खटकाई।
आंख झुकाई दरवाजे ने
खिड़की कुछ शरमाई।

गरमी रानी समझ गई,
अब दाल नहीं गलने की।
बोरी, बिस्तर उठा, करू
अब, तैयारी चलने की।

कैला भवन,
छोटा बाज़ार,
ग्वालियर




—गफ़ूर स्नेही

हवा की चाल से–
नभ पर दौड़े।
बादलों के हैं–
मस्ताने घोड़े॥
जब-जब भी-
ये हिनहिनाते।
गड़-गड़-गड़-
ये गड़गड़ाते॥
बिजली के तड़तड़-
खाते हैं कोड़े॥

इनका पसीना ही-
बूंदे बनता।
भू पर हरा-
गलीचा बिछाता॥
इन्द्रधनुष भी-
अंगड़ाई तोड़े।
बादल के हैं-
मस्ताने घोड़े॥

नयापुरा, तराना,
जिला उज्जैन (म.प्र.) 456665

# बुद्धिमान और बुद्धिहीन में अन्तर

–हीरालाल नंदा 'प्रभाकर'

एक सेठ के पास रामधन नाम का एक नौकर और एक मुनीम काम करते थे। नौकर मुनीम से अधिक पुराना था तथा वह मुनीम के कामों में भी मदद करता था किंतु वेतन मुनीम से कम पाता था। सभी कामों में राय या मशवरा भी सेठजी मुनीम से ही लिया करते थे। मान-सम्मान में भी बेचारा रामधन पीछे ही था। यह बात रामधन को बहुत अखरती थी। लेकिन सेठजी को अपने मन की बात बताने में वह डरता था।

एक दिन, बड़ा साहस करके, उसने सेठजी से कह दिया–"मालिक बरसों से आपकी सेवा कर रहा हूं। लेकिन फिर भी कल के आए हुए मुनीमजी की तनख्वाह व मान अधिक है। यह तो न्याय नहीं है, सेठजी। इसका क्या कारण है। क्या आप मुझे बताएंगे।"

सेठ ने हंसते हुए कहा–"हम तुम्हारी बात से सहमत हैं। लेकिन रामधन ! तुम्हारी सूझबूझ और मुनीम की बुद्धि में जमीन-आसमान का अंतर है। जो काम मुनीम मिनटों में चुटकी बजाते हुए करता है, वह तुमसे महीनों में भी समाप्त होना दुर्लभ है। फिर भी मैं तुम्हारी शिकायत पर विचार करूंगा और इसके लिए शीघ्र ही अपना मत तुम्हें बताऊंगा।" रात गई, बात गई, इस बात को हुए काफी दिन बीत गए। एक दिन सेठ ने रामधन को अपने पास बुलाया और उसे दो सौ रुपये दिए और कहा कि देखो तुम बाजार से एक कोरा घड़ा खरीदकर उसके ऊपर देशी घी लगा कर मेरे पास लाना। जो पैसा लगे इनमें से खर्चा कर सकते हो। लेकिन यह काम फौरन होना चाहिए। रामधन ने कहा मालिक यह कौन-सा बड़ा काम है। आपका हुक्म सिर आंखों पर है। फौरन इसे करे देता हूं।

दूसरे दिन घर के कामकाज से फुरसत पाकर रामधन ने एक मिट्टी का कच्चा मटका खरीदा और उसे लेकर वह घी वालों के पास



पहुंचा। उसने उनसे कहा कि थोड़ा-सा अच्छा देशी घी हमारे मटके के ऊपर डाल दें। बस हम इसे आपके घी से थोड़ा गीला करना चाहते हैं।

दुकानदारों ने उसका मज़ाक उड़ाया और कहा कि आपने घास तो नहीं खाई है। या फिर आपके होश ठिकाने पर नहीं है। जानते हो घी का क्या भाव है? मंहगाई के जमाने में इंसान को तो घी खाने को मिलता नहीं है। और आप चले हैं अपने मटके को घी से नहलाने। वह भी फोकट में। जाओ भाई क्या फिजूल की मगजमारी कर रहे हो। धंधे का समय खोटा नहीं करो तो ही अच्छा होगा। बोहनी-बट्टे का अवसर बेजा नहीं करो।

न जाने कितने घी वालों की दुकानों पर

बेचारा रामधन मटका लेकर घूमा लेकिन किसी ने उसकी एक नहीं सुनी। हारकर उसने सेठजी को वह दो सौ रुपया लौटा दिया यह कहते हुए कि यह काम सरल नहीं है। लिहाजा उसके बस का नहीं है। कोई भी दुकानदार कच्चे मटके पे चपोड़ने के लिए देशी घी को हाथ नहीं लगाने देता। सेठ ने कहा अच्छा फिर जाने दो। हम कुछ और करेंगे क्योंकि यह आपसे नहीं हो सकता है।

ठीक एक सप्ताह के बाद वही दो सौ रुपये सेठ ने अपने मुनीम को दिए और कहा–"इन पैसों से आप एक कच्ची मिट्टी का मटका खरीदो, उसे देशी घी से चुपड़वाओ और यह ध्यान रहे कि पैसा अधिक व्यय नहीं हो। वह मटका हमारे पास लाओ।"

मुनीम ने कहा–"ठीक है सेठजी।" दूसरे ही दिन वह बाजार गया। एक कच्चा मटका खरीदा। मटका लेकर वह घी वाले के पास गया। घी वाले से उसने कहा इस मटके में दस किलो घी तोल दो। घी वाले ने दस किलो घी तोलकर मटके में भर दिया। इसके बाद मुनीम ने घी वाले से हिसाब पूछा। घी वाले ने कहा कि बीस रुपया प्रति किलो के भाव से दो सौ रुपया हुआ। मुनीम ने कहा–"वाह भाई ! यह आपका घी तो बहुत मंहगा है। आपने भाव तो खूब जमके लगाया है। यह तो हम नहीं ले सकेंगे क्योंकि मालिक ने हमें इतना मंहगा घी खरीदने को पैसे नहीं दिए हैं। और न ही पर्याप्त धन आपके भुगतान के लिए हमारे पास है। यदि आप दस रुपये किलो घी का भाव लगाएं तो हम ले लेंगे।

घी वाला बड़ा खिन्नाया। नाराज़ होके बड़बड़ाने लगा कि जेब में पैसे नहीं, चले आए देशी घी खरीदने और उसने उक्त मटके का सारा घी अपने टीन में उड़ेल लिया और मटका वापस कर दिया।

घी वाले की खरी खोटी सुनकर मुनीम मटका लिए सेठजी के पास पहुंचा। घी का सना मटका मुनीम ने सेठजी को दे दिया और कहने लगा।–आपका काम भी कर दिया और सारा पैसा भी बचा लाया।" सेठ बड़ा खुश हुआ–"बिना खर्चे



के तुमने यह काम कैसे किया।" "सेठजी यदि मैं किसी भी घी वाले से थोड़ा-सा घी मटके के लिए लेता तो कोई नहीं देता। मैंने तो उनसे बिना भाव ताव किए सीधे-सीधे कहा कि दस किलो घी इस मटके में भर दो। जब उसने उसकी कीमत बताई तो मैंने कहा कि वह घी तो बहुत मंहगा है। हम इसे भला कैसे ले पाएंगे। ऐसे हमारा धन भी बच गया और काम भी हो गया।"

सेठ ने घरेलू नौकर रामधन को अपने पास बुलाया और यह सारी बात उसको बताई और कहा कि मुनीम में और तुममें यही अंतर है। वह हर काम बुद्धि और विवेक के बल से करता है। जो काम तुम नहीं कर सके, उसे उसने बिना खर्चे के फौरन कर दिखाया। यही वजह है जो हम उसे तुमसें अधिक वेतन देते हैं। इसका अर्थ यह नहीं कि वह कुर्सी के ऊपर पंखे के नीचे खाली बैठा रहता है। यदि तुम उसका नाम लिए बगैर अपने वेतन में बढ़ोतरी के बारे में हमसे कहते तो हम अवश्य तुम्हारा वेतन बढ़ा देते।" रामधन बहुत लज्जित हुआ और फिर उसने कभी मुनीम के विरुद्ध बोलने का दुस्साहस नहीं किया।

**सी- 008, श्रीराम भवन,**
**मार्वे रोड, मलाड पश्चिम, बम्बई- 400095**

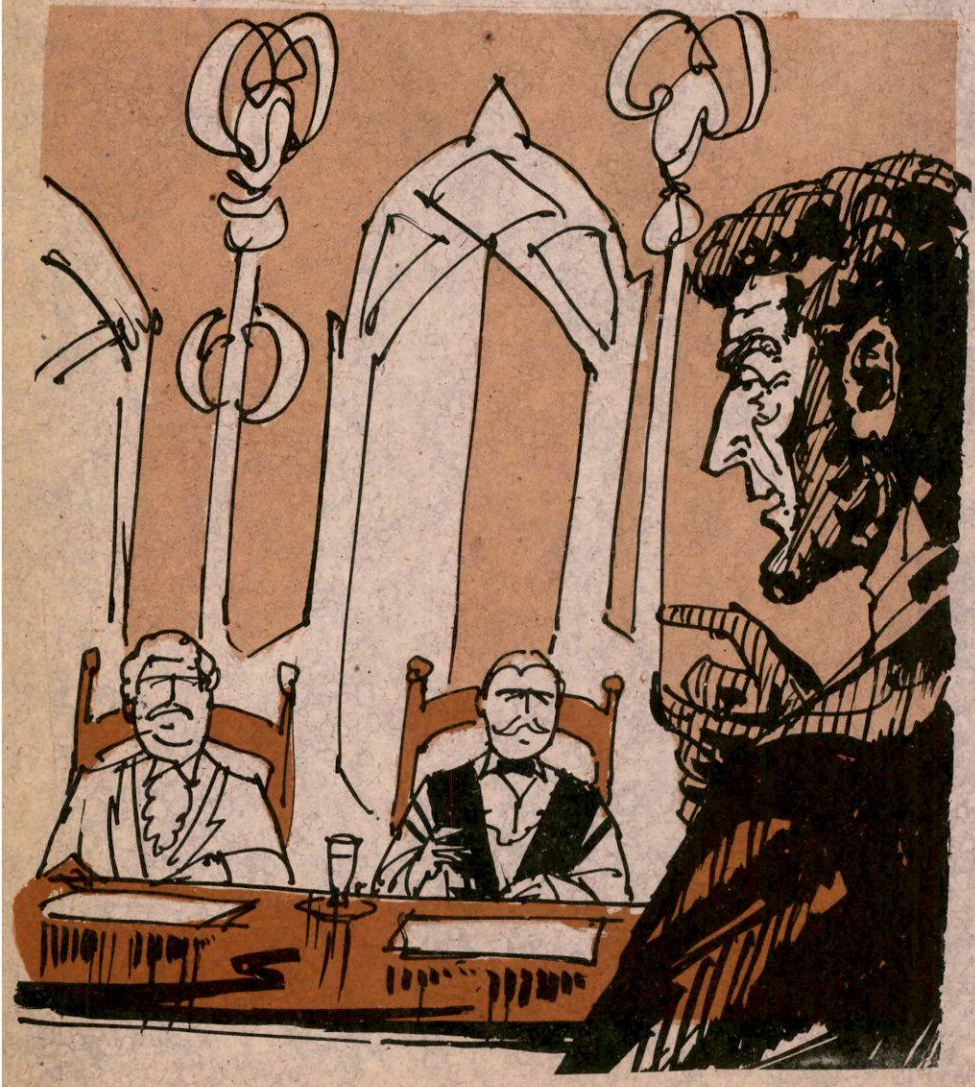
# अधिकारी का चुनाव

(100)

—कृष्ण कुमार 'आशु'

इब्राहिम लिंकन अमरीका के राष्ट्रपति थे। वह गुणों के पारखी थे और चाटुकारिता को अधिक पसंद नहीं करते थे। एक बार उन्होंने एक ऐसे व्यक्ति को अमरीका का सेनापति नियुक्त कर दिया जो उनका जाना-माना विरोधी था। वह व्यक्ति कई बार खुले जलसों में लिंकन का विरोध कर चुका था। इतना ही नहीं, कई सभाओं में वह लिंकन को अपमानित करने से भी बाज नहीं आया था। लोगों को ऐसे व्यक्ति का सेनापति के प्रतिष्ठित पद पर नियुक्त किया जाना कुछ अजीब लगा।

लिंकन के कुछ सहयोगियों को लगा कि शायद वह (लिंकन) उस व्यक्ति के विषय में पूरी जानकारी नहीं रखता। उन्होंने राष्ट्रपति लिंकन



पर उस व्यक्ति के लिंकन-विरोधी रवैये को ज़ाहिर करना ज़रूरी समझा। विचार-विमर्श के बाद कुछ सहयोगी बोले–"आपने जिस व्यक्ति की सेनापति के रूप में नियुक्ति की है, क्या आप उसके विषय में सब कुछ जानते हैं?"

"हां, मुझे पता है कि वह व्यक्ति कट्टर राष्ट्रवादी है। युद्ध की आधुनिक शैली की भी उसे अच्छी जानकारी है। मुझे आशा ही नहीं बल्कि विश्वास है कि उसके कार्यकाल में हमारे देश की सेना अत्यधिक सुदृढ़ और सशक्त बन पाएगी।" राष्ट्रपति लिंकन ने उत्तर दिया।

"लेकिन शायद आप यह नहीं जानते होंगे कि वह व्यक्ति आपका विरोधी है। वह कई सभाओं में आपके विचारों से असहमति ज़ाहिर कर चुका है। कुछ सभाओं में तो उसने आपके लिए आपत्तिजनक शब्द भी प्रयोग किए हैं।" एक अन्य सहयोगी ने लिंकन को जानकारी दी।

उस सहयोगी की बात सुनकर लिंकन मुस्करा दिया। फिर बोला–"मैं जानता हूं कि वह व्यक्ति मेरा विरोधी है, लेकिन क्या तुम इस बात से इंकार कर सकते हो कि वह पक्का देशभक्त तथा निपुण प्रशासक है।"

सभी सहयोगी उस व्यक्ति की देशभक्ति और प्रशासकीय कुशलता के कायल थे। सभी ने लिंकन की बात से सहमति ज़ाहिर की। फिर लिंकन बोला–"मैंने उस व्यक्ति को अपना नहीं बल्कि देश का सेनापति नियुक्त किया है और इस बात पर हम सभी सहमत है कि वह पक्का देशभक्त है। देश को तो देशभक्तों की जरूरत है, लिंकन भक्तों की नहीं। जब मैं अपने लिए किसी अधिकारी की नियुक्ति करूंगा तो अवश्य इस बात का ध्यान रखूंगा कि वह व्यक्ति मेरा विरोधी न हो, लेकिन देश के लिए किसी प्रशासक की नियुक्ति करते समय तो बस इसी बात पर ध्यान दिया जाना चाहिए कि वह व्यक्ति देश विरोधी न हो, देशभक्त हो, तथा उसे जो काम सौंपा जा रहा है, उस काम के लिए वह उपयुक्त व्यक्ति हो।

"मेरा तो यह मत है कि यदि मैं योग्य व्यक्ति को केवल इसलिए उपयुक्त पद नहीं देता क्योंकि वह मेरा विरोधी है तो वास्तव में देश की जनता ने मुझे जो अधिकार दिए हैं, जो मुझ पर विश्वास किया है, यह उन अधिकारों का दुरूपयोग है, जनता से विश्वासघात है।

"किसी व्यक्ति को कोई जिम्मेदारी सौंपते समय यही देखा जाना चाहिए कि वह उस जिम्मेदारी को निभाने में समर्थ भी है या नहीं तथा वह व्यक्ति ध्येय के प्रति, मिशन के प्रति, कितना ईमानदार है। यह कोई विचारने की बात नहीं होती कि जिसे हम जिम्मेदारी सौंप रहे हैं, वह हमारा प्रशंसक है या आलोचक। प्राथमिकता, ध्येय को मिलनी चाहिए, हमारे व्यक्तिगत स्वार्थों को नहीं।"

**पशु अस्पताल के सामने,**
**पुरानी आबादी, श्री गंगानगर**




**–राजेन्द्र निशेश**

मेघों ने इक सभा बुलाई,
सबने मिलकर बात बताई।
सूरज हमको रोज सताता,
सबको यहां, वहां छितराता।
उसकी दाल न गलने पावे,
सारे मिलकर बैठो भाई।

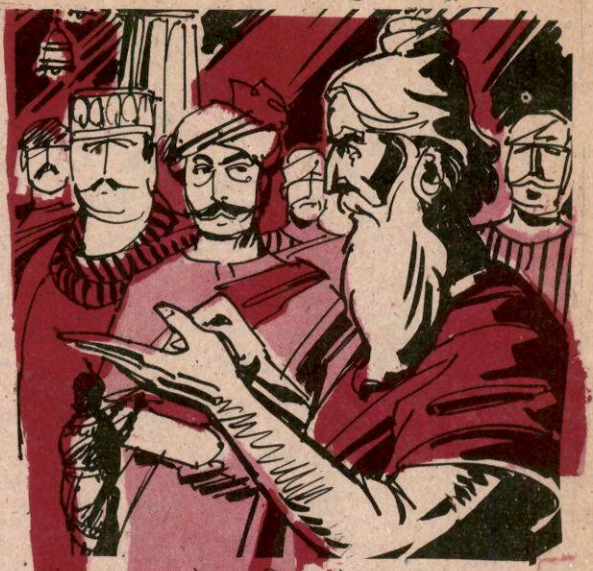
सूखी धरती को हम प्यारे,
प्यासे अधरों के हम तारे।
हमको अपना फर्ज निभाना,
सबकी इसमें छिपी भलाई।

छू-मंतर से बात न बनती,
है मशहूर बहुत किंवदंती।
विपदाएं आएंगी भारी,
रखनी जारी हमें लड़ाई।

**2698, सैक्टर 40 सी**
**चंडीगढ़- 160036**

# सबसे बड़ा दान

–राजेन्द्र कुमार साहू



एक पुराना मंदिर था। दरारें पड़ी थीं उसमें। एक रात खूब जोर से तूफ़ान आया और वर्षा हुई। मंदिर का बहुत-सा भाग लड़खड़ाकर गिर पड़ा। एक साधु, वर्षा से बचने के लिए, मंदिर में आकर ठहरे थे। भाग्य से, जहां वह बैठे थे, उधर का कोना बच गया, इसलिए साधु को चोट नहीं लगी।

रात भर साधु ठीक से सो न सके। उन्होंने सोचा कि मेरे रहते भगवान का मंदिर गिरा है तो इसे बनवाकर ही मुझे यहां से जाना चाहिए। सवेरे साधु ने पास के बाजार में और घर-घर जाकर चंदा एकत्र किया। कुछ समय में मंदिर बनकर तैयार हो गया।

साधु ने, मंदिर में भगवान की मूर्ति प्रतिस्थापना समारोह का आयोजन किया, तथा भंडारे की व्यवस्था की। साधु बाबा ने घोषणा की कि सबसे बड़े दानी के हाथ से ही मंदिर में मूर्ति प्रतिस्थापित की जाएगी। और इसके बाद साधु बाबा दानी लोगों की सूची लेकर खड़े हुए। सभी सेठ लोगों को अपने-अपने नाम का इंतजार था।

परंतु साधु बाबा ने कहा कि सबसे बड़ा दान एक बुढ़िया का है। लोगों ने सोचा जरूर उसने हजार-दो हजार रुपया दिया होगा, लेकिन जब साधु बाबा ने बताया कि बुढ़िया ने दो रुपये दिए हैं तो सभी क्रोधित हो उठे और उस बुढ़िया से मूर्ति प्रतिस्थापना का विरोध करने लगे। तब साधु बाबा ने समझाया कि वह बुढ़िया लोगों के छोटे-छोटे काम करके अपना पेट पालती है। ये दो रुपये उसने कई दिनों की मेहनत के बाद एकत्र किए हैं। यही दो रुपये उसकी सारी जमापूंजी के थे जो उसने मंदिर के लिए दान कर दिए और उसके साथ ही मजदूरों के साथ मिलकर उसने इस मंदिर के पुनर्निर्माण में अपना सहयोग दिया है। मैं, मदिर के निर्माण में अपना सर्वस्व लगा देने वाली, मां को, प्रणाम करता हूं।''

इन बातों को सुनकर लोगों की आंखें झुक गईं और सबने सहर्ष एक मत होकर बुढ़िया से ही मूर्ति की प्रतिस्थापना करवाई तथा बुढ़िया के हाथों प्रसाद ग्रहण किया।

मकान नं. 14, गल्ला बाज़ार पोस्ट
तेलियागंज, जिला इलाहाबाद

## प्रतीक्षा

–डी.सी. केशवराव

रात–
चांदनी के लिए
पृथ्वी–
बरसात के लिए
प्रकृति–
वसंत ऋतु के लिए
सर्व लोग
सूर्योदय
सुख, शांति और
प्रमोद के लिए–
प्रतीक्षा करते हैं।

मकान नं. 41-27-19,
विजयवाड़ा- 13
(आंध्रप्रदेश)

# साहस का पुतला

—राजेन्द्र भाटिया

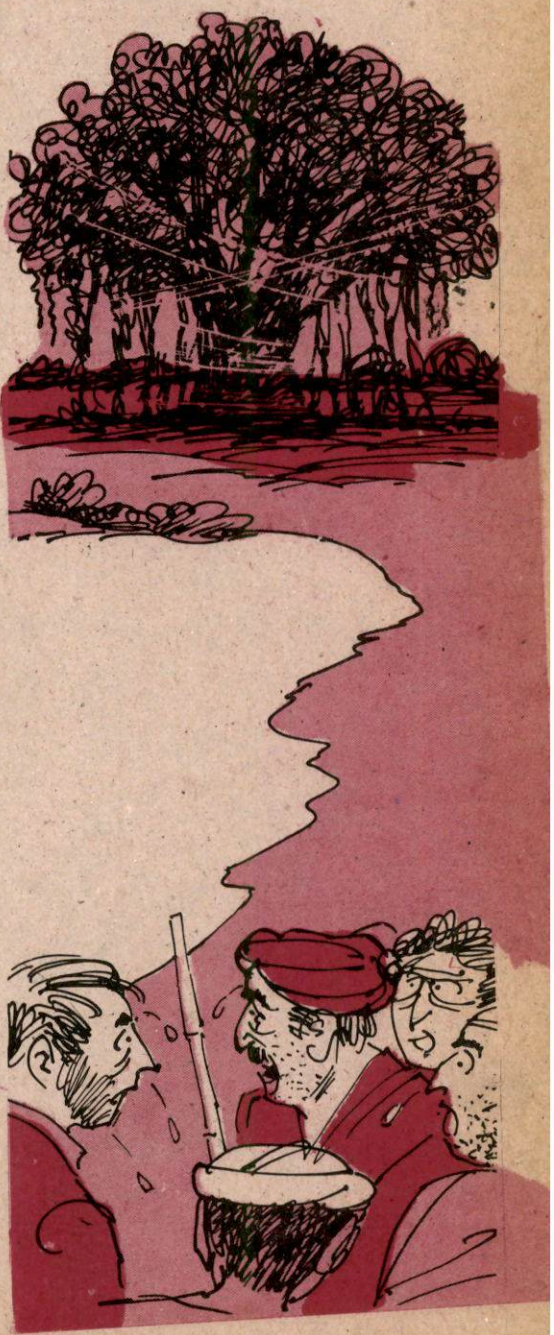
गांव की मुख्य सड़क पर बरगद का एक काफ़ी बड़ा और पुराना वृक्ष था। इतना पुराना कि उसकी नीचे की ओर लटकती हुई जटाएं भूमि को फाड़कर उसके भीतर प्रवेश कर गई थीं। इस तरह उन्होंने वृक्ष का तना पूरी तरह अपने भीतर ढक लिया था। बड़े बूढ़ों का विश्वास था कि ऐसे वृक्षों पर सदैव भूत बसते हैं। हालांकि आज तक किसी ने बरगद के भूतों को साक्षात् देखा नहीं था, फिर भी लोग रात को उस सड़क से गुजरने में डरने लगे।

कुछ साहसी लोग भी थे, जो भूत-प्रेतों के अस्तित्व पर जरा भी विश्वास नहीं करते थे। वे दिन हो या रात, आंधी हो या तूफ़ान, बेधड़क उस रास्ते से गुजर जाते थे और उनका आज तक बाल भी बांका नहीं हुआ था।

परंतु अचानक एक दिन ऐसी घटना हुई कि जिसने बड़े-बड़े साहसी लोगों का भी विश्वास ढहा दिया। एक रात जब पूरा गांव मीठी नींद में सोया हुआ था, बरगद के पेड़ से तरह-तरह के रोने-चीखने की आवाजें आने लगीं। लोगों ने घरों से बाहर निकल कर देखा तो उनकी आंखे भय से फटी ही रह गईं। बरगद के पेड़ के आसपास आग के शोले नाच रहे थे और एक कंकाल ठहाके लगा लगाकर पेड़ की डालों पर इधर से उधर छलांगें मार रहा था। लोगों के हृदय कांप गए। किसी तरह राम-राम करके रात काटी।

दूसरे दिन, पूरे गांव में उसी घटना की चर्चा थी। लोगों को आशंका होने लगी थी कि कुछ अनिष्ट होने वाला है।

आवाजें एक बार शुरू हुईं तो फिर शायद ही कोई ऐसी रात गुज़री हो जब वे आवाजें न आई हों। अब तो शोलों और कंकाल के नाच के साथ रात के सन्नाटे में पायलों की छम-छम का थिरकता स्वर भी चारों ओर के वातावरण और



लोगों के हृदय को कंपकपाता रहता। संध्या होते ही लोग अपने-अपने घरों में बंद हो जाते। लोग अपने-अपने खेतों से लौट आते और दुकानें बंद हो जातीं। पूरे गांव में श्मशान की सी शांति छा जाती। आधी रात होते ही फिर उन मनहूस आवाजों का सिलसिला शुरू हो जाता, जो सुबह होने तक बराबर चलता रहता। बरगद का भूत कुछ अहित न कर दे, इस वजह से कोई भी रात को घर से बाहर न निकलता।

आखिर ऐसा कब तक चलता। कब तक लोग ऐसे दहशत भरे वातावरण में जीवन गुज़ारते। एक दिन सभी लोग चौपाल पर जमा हुए और भूतों से छुटकारा पाने के उपाय पर विचार करने लगे। सभी लोगों का एक मत था कि किसी ओझा, मुल्ला,मौलवी या तांत्रिक को बुलाया जाए जिससे पेड़ पर रहने वाले भूत सदा के लिए समाप्त हो जाएं और किसी का कोई नुकसान न कर सकें।

पर मंगलू का मत सबसे भिन्न था। उसने लोगों से कहा–"यह भूत-प्रेत सब बकवास है। मुझे संदेह है कि यह किसी बदमाश की साजिश है और वह डरा धमकाकर हममें दहशत फैलाना चाहता है। यदि आप में से दो नौजवान मेरे साथ चलें तो मैं बरगद के अंदर तक जाकर रहस्य खोज लाऊंगा। यदि कोई अंदर छिपा होगा तो मैं उसे पकड़कर बाहर ले आऊंगा।"

पर कोई इसकी बात से सहमत न हुआ। लोगों में भूत का डर फैलाकर किसी आदमी का कोई स्वार्थ सिद्ध हो सकता है यह बात किसी के गले नहीं उतर रही थी। बूढ़े रमई काका ने कहा–"रहने दे मंगलू, भूत-प्रेतों से टक्कर लेना कोई हंसी-खेल नहीं। जवानी के जोश में आग से खेलना बचपना है। अभी तक तो भूत सिर्फ पेड़ और उसके आसपास ही हंगामा करता रहा है, कहीं तेरे वहां जाने से वह नाराज़ हो गया तो इसका परिणाम पूरे गांव को भुगतना पड़ सकता है। ना बाबा, हम ऐसी बला अपने सिर नहीं लेंगे और तुम्हें भी हिदायत देते हैं कि ऐसा कुछ मत करो। आखिर हमारे भी बाल-बच्चे हैं। हमें उनका भी सोचना है। तुम्हारे तो 'आगे नाथ न पीछे पगहा' वाली बात है।"

पर मंगलू बार-बार वहां जाने की जिद करने लगा तो गांव के एक अधेड़ व्यक्ति ने कहा–"करने दो इसे भी अपने मन की, देखते हैं भूतों से लड़कर कौन-सा तीर मार लाता है। पर देख मंगलू, तेरे साथ और कोई नहीं जाएगा। और हां, एक खास बात और अगर कल को तेरे साथ वहां कुछ उल्टा सीधा हो जाए तो गांव वालों को दोष मत देना कि हमने तुझे वहां भेजा था। पहले ही कहे देते हैं। हां।"

"ठीक है। जो कुछ होगा, उसकी सारी जिम्मेदारी मुझ पर होगी।" अपनी बात मान लेने पर मंगलू ने खुशी प्रकट करते हुए कहा–"मैं परसों की रात को वहां जाऊंगा। तुम लोग यहीं खड़े होकर मुझे देखते रहना।" गांव वाले उसे खुश देखकर उस पर तरस खाकर रह गए। आखिर परसों की रात भी आ गई। आधी रात होते ही बरगद के पेड़ से आवाजें आनी शुरू हो गईं और शोलों का नृत्य शुरू हो गया। मंगलू पहले ही लोगों के साथ तैयार खड़ा था। आवाजें शुरू होते ही उसने लाठी उठाई और चल दिया, पेड़ की तरफ। लोग सांस रोके उसके साहस को देख रहे थे और मन ही मन उसकी खैर मना रहे थे। लोगों के हृदय की धड़कनों के साथ-साथ मंगलू के कदम भी तेज होते जा रहे थे।

मंगलू के बरगद के पास पहुंचते ही सहसा रोने चिल्लाने की आवाजें काफ़ी तेज हो गईं और आग के शोले तेजी से इधर-उधर नृत्य करने लगे। फिर अचानक वे आवाज़ें आनी बंद हो गईं और आग के शोले पुनः पेड़ के भीतर चले गए। चारों ओर सन्नाटा छा गया। कुछ क्षणों तक ऐसा ही रहा और फिर अचानक उस सन्नाटे को मंगलू की एक दर्दभरी चीख ने तोड़ दिया।

मंगलू की चीख सुनते ही गांव वाले जैसे जड़ हो गए। उनकी चेतना शक्ति लुप्त-सी हो गई। फिर होश आते ही वे फ़ौरन अपने-अपने घरों की तरफ भाग खड़े हुए।

सुबह उठकर लोगों ने देखा कि मंगलू की

लाश मुख्य सड़क पर पड़ी हुई थी। लाश को जिस बेदर्दी से नोचा और फाड़ा गया था, उसे देखकर साहसी से साहसी व्यक्ति का कलेजा भी कांप उठा था और वह यह मानने को तैयार हो जाता कि यह अवश्य उन भूत-प्रेतों का काम है, जिनका निवास वही बरगद का वृक्ष है। मंगलू का चेहरा एकदम विकृत हो गया था और उसका शरीर जगह-जगह से इस प्रकार खाया गया था कि कोई कह ही नहीं सकता था कि वह मंगलू की लाश है पर गांव वालों ने उसकी कमीज और धोती से उसे पहचान लिया।

इस घटना से लोगों के दिल दहल गए। वे जल्दी से जल्दी इस गांव से पलायन करने की सोचने लगे।

इसके बाद एक और ऐसी बात हो गई जिसने लोगों का रहा-सहा साहस भी छीन लिया। अब मंगलू अक्सर उस पेड़ पर देखा जाता। जब भी वह किसी को देखता, उसके पीछे दौड़ने लगता। उस पर पत्थर फेंकता और रात होते ही मंगलू की मनहूस सिसकारियां गांव भर में गूंजती रहती। शोलों का नृत्य अब बंद हो चुका था, चिल्लाने की आवाजें और कंकाल की उछलकूद, पायल की छमछम सब खत्म हो चुकी थी। अब तो बस केवल वहां से मंगलू की सिसकारियां और उसकी अंतिम चीख ही सुनाई पड़ती। लोगों को विश्वास हो गया कि मंगलू ने मरकर पेड़ पर रहने वाले भूतों को तो परास्त कर दिया था पर स्वयं मुक्ति न पा सका। अब वह प्रेत योनि में पेड़ पर रहकर भटकता रहता है और लोगों को अपने इस दुष्परिणाम का दोषी मानकर उनका पीछा करता है। इस प्रकार मंगलू के प्रेत के आतंक ने पूरे गांव को जकड़ लिया।

इधर सरपंचजी के लड़के चंदर को पूरी घटना की जानकारी अपने पिता के भेजे पत्र से मिली। चंदर शहर के एक महाविद्यालय में एम.एस.सी. का विद्यार्थी था। सरपंचजी ने विस्तार से इस घटना की सारी जानकारी देते हुए और मंगलू के प्रेत का उल्लेख करते हुए लिखा था कि जब वह छुट्टियों में गांव आए तो रात को न आकर दिन में आए और मुख्य सड़क से होकर न आए अन्यथा मंगलू का प्रेत उसका अहित कर सकता है। यह सब पढ़कर चंदर को कुछ संदेह हुआ। वह गजब का साहसी लड़का था। उसने मंगलू के प्रेत से दो-दो हाथ करने की सोच ली और गांव जाने की तैयारियां करने लगा। भला विज्ञान का छात्र होकर भूत प्रेत की बात जानकर और उस पर से रहस्य का पर्दा न उठाने तक वह चैन से कैसे बैठ सकता था। उसने किसी भी तरह की स्थिति का सामना करने के लिए अपने एक मित्र से पिस्तौल भी मांग ली, शायद कहीं जरूरत पड़ जाए। वह जानबूझकर ऐसी गाड़ी में चढ़ा जो उसे लगभग आधी रात को उसके गांव के पास वाले स्टेशन पर पहुंचाती थी। गांव स्टेशन से चार-पांच किलोमीटर दूर था।

स्टेशन पर उतरकर वह पैदल ही घर की तरफ़ चल दिया। धीरे-धीरे वह मुख्य सड़क पर आ गया। बरगद का पेड़ अब उससे कुछ ही दूरी पर था। उसे आश्चर्य हुआ कि वहां से आवाजें क्यों नहीं आ रहीं, जबकि उसके पिता ने उसे लिखा था कि वहां से रोज आवाजें आती हैं।



पेड़ के पास पहुंचते ही एक छाया ने आकर उसका रास्ता रोक लिया और पूछा–"तुम कौन हो?"

"तुम कौन हो?" चंदर ने दृढ़ता और साहस के साथ उस छाया से ही पूछा।

"मैं मंगलू हूं। अब तुम बताओ तुम कौन हो?"

"मैं कौन हूं, इससे तुम्हें कोई मतलब नहीं।" कहते हुए चंदर ने टार्च की रोशनी इधर-उधर फेंकी।

टार्च जलते ही मंगलू के व्यवहार में आश्चर्यजनक परिवर्तन हुआ–"यार, तुम भी कमाल के आदमी हो। सीधी तरह नहीं कह सकते कि हमारे ही आदमी हो। तुम समय से पहले ही कैसे पहुंच गए?"

चंदर उसके इस प्रकार से बोलने से आश्चर्यचकित हो गया। पर उसने जाहिर न होने दिया। "लो यह पकड़ो बैग"–कहते हुए मंगलू ने अपने लबादे से एक बैग निकालकर उसके हाथ में पकड़ा दिया। "वैसे बास ने मुझे पहले ही बता दिया था कि तुम अपनी टोली में नए भर्ती हुए हो। इस कारण से न तो तुम मुझे पहचान पाओगे और न ही मैं तुम्हें। तुम्हें पहचानने के लिए उन्होंने मुझे बताया कि जो व्यक्ति यहां आकर टार्च की रोशनी फेंकेगा वह अपनी टोली का ही होगा। अब तुम इस थैले को सामने वाली पहाड़ी के पीछे बने हुए खंडहर में ले जाओ। वहां पर तुम्हें एक व्यक्ति मिलेगा, जो तुम्हारे कानों के नज़दीक चुटकी बजाएगा। तुम्हें यह बैग तुरंत उसे सौंप देना होगा। फिर कल रात को यहीं पर तुम्हें आना होगा। अब मैं चलता हूं।"

कहां जाओगे तुम? चंदर ने अपने कोट की अंदर की तरफ हाथ बढ़ाते हुए धीरे से पूछा पर न जाने क्या सोचकर उसने अपना हाथ बाहर निकाल लिया।

"अपने घर जाऊंगा। पर इससे पहले पेड़ के अंदर वाला टेपरिकार्डर चालू कर लूं फिर जाता हूं। और मंगलू अंदर चला गया।

चंदर ने बैग को मजबूती से पकड़ लिया और पहाड़ी के पीछे चल दिया। उसने सूझबूझ और चतुराई से काम लेने का निश्चय किया।

खंडहर में सचमुच एक आदमी खड़ा था। उसने चंदर के कानों के पास चुटकियां बजाई और चंदर से बैग देने को कहा। जवाब में चंदर ने कहा "बास को हममें से किसी पर शक हो गया है, क्योंकि पिछली बार हमारा काफ़ी माल पकड़ा गया था इसलिए बास ने सबको एक जगह इस बैग सहित वहां बुलाया है।"

"कहां जाना होगा हमें?"

"यह बताने को मना किया है। चुपचाप मेरे साथ चले चलो।"

वह व्यक्ति चुपचाप चंदर के साथ चलने लगा। घर पहुंचकर चंदर ने आदमी को बाहर खड़ा कर अपने पिताजी को आवाज दी। आवाज़ पहचानते ही उसके पिताजी ने दरवाजा खोला। चंदर ने पिस्तौल उस आदमी पर तान दी। अब वह आदमी विवश था।

दूसरे दिन गांव वालों ने जो कुछ सुना, उसे सुनकर उन्होंने दांतो तले अंगुली दबा ली। चौपाल पर सारा विवरण बताते हुए पुलिस इंस्पेक्टर ने चंदर के साहस की प्रशंसा करते हुए कहा–"इस गांव को चंदर जैसा साहसी, दिलेर और चतुर नौजवान पाकर गर्व करना चाहिए। जो कुछ उसने किया, एक साधारण व्यक्ति से ऐसे कार्य की कल्पना भी नहीं की जा सकती। इसने एक ऐसे बड़े गिरोह का भंडाफोड़ किया है जो मादक पदार्थों की तस्करी करता था। चंदर की सूझबूझ से सारा गिरोह पकड़ा गया। अब मैं आपको सारी घटना बताता हूं।"

"कुछ समय पूर्व जो हत्या हुई थी और लाश मुख्य सड़क पर पाई गई थी, वह मंगलू की नहीं थी। मंगलू आज भी जीवित है। उधर देखिए।"

लोगों ने पीछे नज़रें घुमाई। देखा, सचमुच मंगलू कुछ अन्य व्यक्तियों के साथ हथकड़ियां पहने पुलिस के साथ आ रहा था।

"आप लोग डरिए नहीं। यह मंगलू का प्रेत नहीं, सचमुच का मंगलू है। इसने और इसके गिरोह ने गांव में दहशत फैलाने का जो तरीका

ढूंढ निकाला था, वह अपने आप में बेमिसाल था।"

"मंगलू आदतन अपराधी है और वह कई बार पहले भी जेल जा चुका है। जिसके बारे में गांव वाले नहीं जानते, क्योंकि वह इस तरह के गलत काम शहर में जाकर करता है। वह एक बार जेल में एक ऐसे बदमाश से मिला था जो मादक पदार्थों के एक तस्कर गिरोह से जुड़ा हुआ था। जेल से छूटते ही उसने मंगलू को अपने इस धंधे की तरफ़ आकर्षित किया। सबसे पहले इसके मित्रों ने विभिन्न प्रकार से लोगों को भयभीत किया। टेपरिकार्डर में तरह-तरह की आवाजें भरकर गांव वालों को डराया और आग के शोलों के नृत्य के लिए पालतू कुत्तों को उपयोग किया। ये लोग जलती हुई मशालों को कुत्ते की पीठ पर बांध देते थे और उसे पेड़ के साथ लम्बी रस्सी से बांधकर इसे इधर-उधर दौड़ाते थे। दूर से देखने पर ऐसा लगता था मानों जलते हुए शोले नाच रहे हों।"

फिर शुरू हुआ, मंगलू के भूत से लड़ाई का नाटक। और जो लाश सड़क पर फेंकी गई थी, वह इन्हीं के किसी साथी की थी, जिस पर इनके बास को मुखबिर होने का शक था। मारने से पहले उसे मंगलू के कपड़े पहनाए गए थे और चेहरा इतना विकृत कर दिया गया कि कोई उसे पहचान न सके। उस व्यक्ति की कदकाठी मंगलू से इतनी मिलती थी कि सभी लोग धोखा खा गए और सभी ने मंगलू को मरा समझ लिया, जबकि मंगलू जीवित था। फिर मंगलू ने प्रेत बनने का नाटक किया और लोगों में आतंक फैलाया जिससे उसका और उसके गिरोह का धंधा अबाध चलता रहे।"

"कल जो बैग पकड़ा गया है, उसमें काफी बड़ी मात्रा में नशीले पदार्थ बरामद हुए हैं। ये मादक पदार्थ हमारी युवा शक्ति को निस्तेज कर रहे हैं। उनकी नसों में धीमा जहर भर रहे हैं। मुझे खुशी है कि युवा पीढ़ी के ही एक सदस्य ने अपने साहस और बुद्धिमता का प्रयोग कर ऐसे देशद्रोहियों, समाज विरोधी तत्वों के गिरोह को पकड़वाया और मैं सरकार से सिफारिश करूंगा कि वह देश के इस रत्न को पुरस्कार दे।"

लोगों ने बड़े ज़ोर से खुशी से तालियां बजाईं और चंदर को अपने कंधे पर उठा लिया।

"अच्छा चंदर भैया। एक बात बताइए। वह कंकाल कैसे पेड़ पर कूदता फांदता रहता था और अंधेरे में चमकता हुआ दिखाई देता था।" गांव के एक व्यक्ति ने पूछा।

चंदर ने हंसकर कहा–"वह और कुछ नहीं विज्ञान का चमत्कार था। एक काले लबादे पर फास्फोरस से कंकाल बना दिया गया था। फास्फोरस अंधेरे में चमकता है। आदमी ही उस लबादे को पहनकर पेड़ पर कूदता-फांदता था, जबकि दूर से देखने वालों को केवल कंकाल ही नजर आता था। सच पूछो तो भैया, भूत-प्रेत कुछ होते ही नहीं, यदि मनुष्य में साहस और हृदय में ज्ञान का प्रकाश हो तो उसके सामने अंधविश्वास का अंधेरा टिक ही नहीं सकता।" और लोग उस साहस के पुतले को देखते ही रह गए।

**2 क- 7, सेक्टर- 13**
**उदयपुर – (राज.) 313001**




**–अहद 'प्रकाश'**

चिड़िया कहे,
जल्दी उठो।
किरणें कहें,
जल्दी चलो।
जल्दी चलो,
आगे बढ़ो।
सूरज बनो,
ऊंचा चढ़ो।

**भारतीय खाद्य निगम**
**विधानसभा परिसर**
**भोपाल– 3**

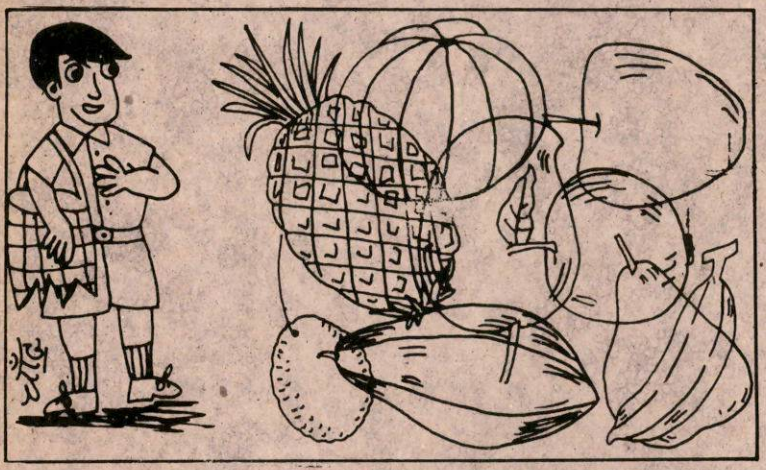
# भारतेन्दु हरिश्चन्द्र पुरस्कार-1988

सूचना और प्रसारण मंत्रालय से संबंधित विषयों जैसे प्रकाशन, दूरदर्शन, प्रसारण, विज्ञापन, पत्रकारिता, फिल्में आदि जनसंचार के विषयों पर हिन्दी में मौलिक लेखन को प्रोत्साहन देने के लिए सूचना और प्रसारण मंत्रालय के प्रकाशन विभाग द्वारा भारतेन्दु हरिश्चन्द्र पुरस्कार योजना के अन्तर्गत वर्ष 1988 के पुरस्कारों के लिए प्रविष्टियां प्राप्त करने के लिए अन्तिम तिथि 31 मई, 1989 रखी गई थी, जिसे अब आगे बढ़ाकर 31 जुलाई, 1989 कर दिया गया है, इस पुरस्कार योजना के अन्तर्गत प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार दिए जाएंगे जिनकी राशि क्रमशः 15,000 रुपये, 10,000 रुपये और 5,000 रुपये होगी। पुरस्कार के लिए इस वर्ष जनवरी, 1988 से 31 दिसम्बर, 1988 तक की अवधि में प्रकाशित पुस्तकें अथवा लिखी गई (टाइप की हुई) पाण्डुलिपियां विचारार्थ स्वीकार की जाएंगी। अधिक जानकारी के लिए सहायक निदेशक (राजभाषा), प्रकाशन विभाग, पटियाला हाउस, नई दिल्ली को लिखें अथवा सम्पर्क करें। अपने आवेदन पत्र के साथ 10x22 से.मी. आकार का बिना टिकट वाला एक सादा लिफाफा अवश्य भेजें या सम्पर्क करें।

## फलों के नाम बताओ

दौलतराम बाजार से फल लेकर लौट रहा था तब उसकी थैली फट गई और सारे फल नीचे गिर गये। बच्चो, चित्र में देखकर बताइए कि दौलतराम के नीचे गिरे हुए फलों के नाम क्या हैं?

—चांद मोहम्मद घोसी



शीर्षक बताओ
जुलाई 1989

नाम .....
आयु .....
शीर्षक .....
.....
पता .....
.....

## सूचना

1. 16 वर्ष तक के बच्चों से, उनके जीवन की अविस्मरणीय घटनाएं कहानी रूप में आमंत्रित हैं।
2. हास्य-व्यंग्य, रहस्य, रोमांचक तथा साहसिक कहानियां आमंत्रित हैं।

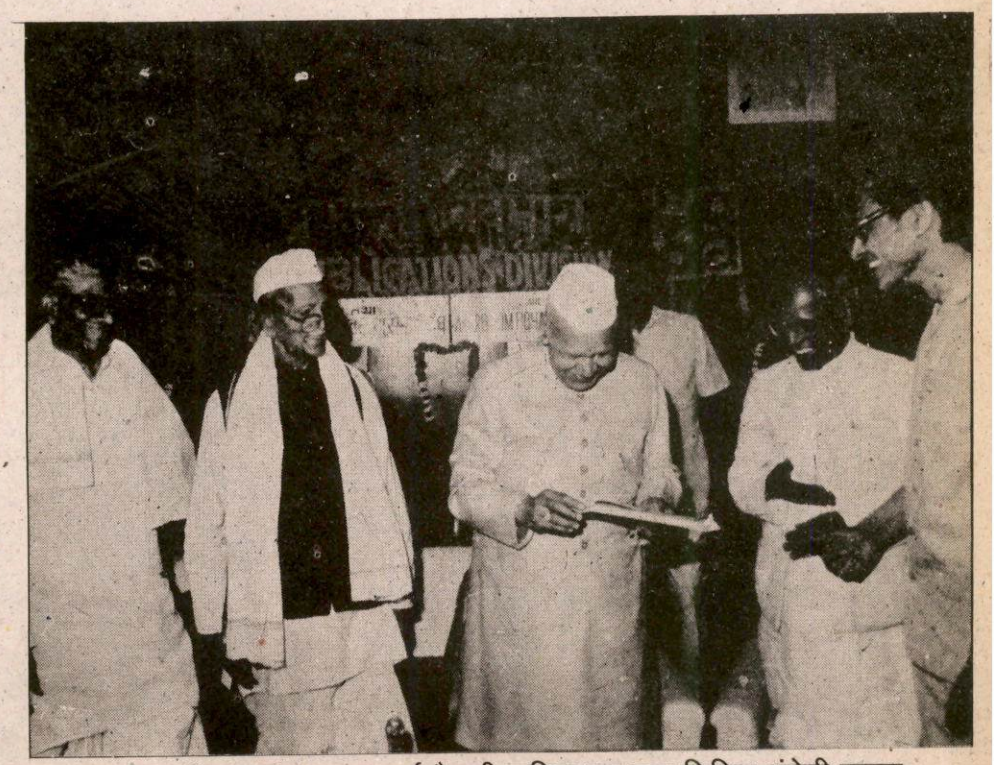
# उपन्यास सम्राट

–हेमंत कुमार चावड़ा

हिंदी पुस्तक एजेंसी का एक प्रेस कलकत्ता में भी था। जिसका नाम बनिक प्रेस था। श्री महाबीर प्रसादजी पोद्दार उसके मुद्रक थे। पोद्दारजी प्रेमचंदजी की रचनाएं बंगाल के प्रसिद्ध उपन्यासकार शरद बाबू को पढ़ने के लिए देते थे। एक दिन की बात है, शरद बाबू से मिलने के लिए श्री पोद्दारजी उनके घर गए तो शरद बाबू अपनी बैठक से घर की ओर गए हुए थे, इस अंतराल में पोद्दार ने देखा कि बैठक में वह जो पुस्तक पढ़ रहे थे वह प्रेमचंदजी का ही कोई उपन्यास था और बीच के कुछ पन्ने खुले हुए थे। कुतूहलवश उन्होंने उठाकर देखा तो उसमें दिखाई पड़ा कि खुले हुए पृष्ठ के एक पार्श्व पर शरद बाबू ने 'उपन्यास सम्राट' लिख रखा है, इसे देखकर पढ़कर वे आनंदित हुए। इसके बाद अपने यहां से प्रकाशित होने वाली प्रेमचंद की कृतियों एवं उनके विज्ञापनों में प्रेमचंदजी को वह उपन्यास सम्राट लिखने लगे।

इस वार्ता से यह स्पष्ट हो जाता है कि बंगाल के महान उपन्यासकार शरद बाबू की दृष्टि में प्रेमचंदजी का क्या स्थान था, और वे कितने बड़े उपन्यासकार थे।

लक्ष्मी होटल
सत्ती गुड़ी चौक
रायगढ़ (म.प्र.)- 496001



उपराष्ट्रपति डा. शंकरदयाल शर्मा, वैदुरती माणिक राव द्वारा लिखित अंग्रेजी पुस्तक 'फ्रीडम स्ट्रगल इन हैदराबाद' का विमोचन करते हुए। साथ में सबसे दाएं हैं प्रकाशन विभाग के निदेशक डा. श्यामसिंह शशि।

# अप्रतिम कलाकार वाल्ट डिज़नी

—पी.एस. शर्मा

वाल्ट डिज़नी का नाम किस ने नहीं सुना है? मिक्की माउस, डोनाल्ड डक, बाम्बी तथा मानव और पशुओं के कई अन्य कार्टूनों के लिए वे विश्व विख्यात हैं। हालीवुड के सर्वाधिक प्रसिद्ध फिल्मस्टार भी इतने प्रसिद्ध नहीं है जितने वाल्ट डिज़नी की ये कृतियां।

प्रतिभा के धनी इस अप्रतिम कलाकार की पारिवारिक पृष्ठभूमि कोई विशेष उत्साहवर्धक नहीं थी। वाल्ट डिज़नी (1901-66) का जन्म शिकागो के एक निर्धन किसान परिवार में हुआ था। परिवार का गुज़ारा चलाने के लिए वाल्ट को रेलवे स्टेशनों पर समाचार पत्र तथा खाने-पीने की चीजें बेचनी पड़ती थी।

'होनवार बिरवान के होत चीकने पात' कहावत के अनुसार आठ वर्ष का होते-होते वाल्ट अच्छे चित्र बनाने लगा था। विशेषतः जानवरों के सजीव चित्रण में वह सिद्धहस्त था। दिन में पढ़ाई करके उसने मैट्रिक की परीक्षा पास की और सायं को वह चित्रकला की कक्षाओं में जाता रहा।

बहुत शीघ्र वह एक विज्ञापन कम्पनी में कार्टूनकार बन गया। 1923 में वह हालीवुड गया और कई कार्टून चरित्रों का निर्माण किया परंतु सफलता नहीं मिली। एक दिन निराश होकर वह गहरी सोच में डूबा था कि उसे अचानक एक शरारती चूहे की याद आ गई जो उसे कांसास सिटी वर्कशाप में तंग किया करता था। उसने इस चूहे का नामकरण मिक्की माउस कर दिया और फिर उसके रेखाचित्र बनाने शुरू कर दिए। बात 1928 की है मिक्की माउस से वाल्ट डिज़नी की किस्मत का सितारा चमक उठा। फिल्मों में, टी.वी. पर, समाचार पत्रों के कार्टूनों में, बच्चों की पुस्तकों में खिलौनों के रूप में सर्वत्र मिक्की माऊस ही मिक्की माउस नज़र आने लगा।

मिक्की माउस ने वाल्ट डिज़नी को ख्याति के शिखर पर पहुंचा दिया। मिक्की माउस के बाद वाल्ट डिज़नी ने मिन्नी माउस, डोनाल्ड डक और प्लूटो दि डाग का सृजन किया। फिर उसने एक फिल्म बनाई 'स्नो व्हाइट एण्ड दि सैवन ड्वाफर्स'। यह फिल्म सर्वश्रेष्ठ कलाकृति सिद्ध हुई, अत्यंत लोकप्रिय हुई और इसने वाल्ट डिज़नी को करोड़पति बना दिया।

1930 में इस दिन उसकी दोनों बेटियां उसे बच्चों के एक मनोरंजन पार्क में ले गई थी। बच्चियाँ झूला झूल रही थी। वाल्ट डिज़नी बैंच पर बैठा-बैठा मूंगफली खा रहा था। अचानक उसे ख्याल आया कि एक ऐसा मनोरंजन पार्क होना चाहिए जहां बच्चों और व्यस्कों दोनों के मनोरंजन के साधन विद्यमान हों। अब वह करोड़पति बन गया था। उसने अपने सपने को कार्यान्वित करने का फैसला कर लिया।

तदनुसार 1954 में उसने केलिफोर्निया के लांस एजेंल्स से 27 मील दूर 160 एकड़ भूमि खरीदी और बच्चों की जादूनगरी के निर्माण का काम आरम्भ कर दिया। सबसे पहले उसने चारों ओर मिट्टी का एक बांध बनवाया। आश्चर्यचकित दर्शकों से उसने कहा—"मैं यह चाहता हूं कि लोग यहां आकर यह महसूस करें कि वे एक नई दुनिया में आ गए हैं। जुलाई 1955 में डिज़नीलैंड नामक यह मनोरंजन पार्क तैयार हो गया। इसके प्रवेश द्वार पर बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा गया:

इस आनंद धाम में आने वाले सभी लोगों का भव्य स्वागत।

डिज़नीलैंड आपका अपना धाम है। यहां युवाओं को भविष्य की आशाओं और चुनौतियों का आभास होता है।

डिज़नीलैंड को बच्चों का स्वर्ग कहा जाता है। किंतु इसे देखने जितने बच्चे आते हैं उनसे चार गुना वयस्क भी आते हैं। अमरीका में आने वाले यात्री डिज़नीलैंड की यात्रा करना अनिवार्य समझते हैं। वर्ष में लगभग 70 लाख दर्शक

डिज़नीलैंड की जादुई मोहकता से अपना मनोरंजन करते हैं।

डिज़नीलैंड को चलाने का काम डिज़नी फाउंडेशन करती है। डिज़नीलैंड के कई भाग हैं जिन्हें एडवेंचरलैंड, हुमारोलैंड, फेंटेसीलैंड, ब्यूटीज कास्सल जैसे मनमोहक नाम दिए गए हैं।

बच्चों के प्रिय सुप्रसिद्ध पात्रों का एक अलग जादूनगर भी है। जहां एलिस, जैक एण्ड जिल आदि से भेंट हो सकती है। झूलों की विविधता देखते ही बनती है। जानवरों, पक्षियों आदि के अलावा आप कप और सासर में बैठकर भी गोलाकार झूले का आनंद ले सकते हैं। अन्य दर्शकों में आपको चलते-फिरते नाचते-गाते मिक्की माउस और डोनाल्ड डक भी मिल जाएंगे। यह ऐसा स्थल है जहां बच्चों के सपने साकार होते हैं।

डिज़नीलैंड नई नवेली दुल्हन की तरह नित सजता रहता है। मनोरंजन के नए-नए साधन आते ही रहते हैं जबकि पुरानी संस्थापनाओं का रख रखाव भी उच्चतम कोटि का होता है। एक दर्शक जिसने डिज़नीलैंड चार-पांच बार देखा है का कहना है कि जब भी जाओ डिज़नीलैंड आपको नवीन साज सज्जा में ही मिलेगा।

**बी- 37/1**
**नारायणा विहार,**
**नई दिल्ली- 28**

# पहेलियां

**—कमला गर्ग**

1. पीला-हरा रंग है इसका
   गोल-मटोल शरीर
   बड़ों-बड़ों के दांत यह
   खट्टे कर दे वीर।
2. तीन अक्षरों का है नाम
   सबको पहुंचाती है धाम
   बीच कटे तो बनती मोर
   चलती है तब करती शोर।
3. मुझको मत समझो तुम ब्रह्मा
   यद्यपि मुख हैं चार
   खाता पैसे काठ के
   रिश्वतखोर न यार।
4. काली पीली लाल गुलाबी
   मेरे रंग हजार,
   बिन पंखों के उड़कर पहुंची
   मैं बादल के पार।
5. महाकवि वह कौन था
   जिसने राम की गाथा गाई
   हुलसी ने था जन्म दिया
   पत्नी ने राह दिखाई।
6. समर्थ ने जिसे समर्थ बनाया
   था वह कौन सिपाही
   भारत की रक्षा हित जिसने
   थी तलवार उठाई॥
7. आन बान मेवाड़ देश की
   आजादी का परवाना
   त्यागी तपस्वी महापुरुष का
   नाम जरा तुम बतलाना।
8. जिस डाली पर था बैठा वह
   उसे काटता जाए
   महामूर्ख उस महाकवि का
   कोई नाम बताए।

**द्वारा श्री रामसिंह का मकान**
**गुरुनानक कालोनी**
**बूंदी (राज.)**

# ज्ञान सागर

अंतरिक्ष में उपग्रहों को भेजा जाना अब से 32 वर्ष पूर्व आरम्भ हुआ था। प्रस्तुत है अंतरिक्ष के क्षेत्र में किए गए कुछ प्रथम कार्यों की जानकारी।)

आज प्रत्येक देश अपना एक उपग्रह अंतरिक्ष में भेजना चाहता है। उपग्रह हमारे लिए अत्यंत उपयोगी होते हैं। हमें उससे जहां मौसम की पूर्व जानकारी प्राप्त होती है। वहीं इनके माध्यम से संचार और जनसंचार आदि के कार्यक्रम प्रसारण में भी सुविधा होती है। ऐसे उपग्रहों ने हमें अन्य ग्रहों के सम्बंध में जानकारी दी है और उनके चित्र भेजे हैं।

– अंतरिक्ष में सर्वप्रथम भेजा जाने वाले कृत्रिम उपग्रह का नाम स्पूतनिक था। इसको रूस ने 4 अक्तूबर 1957 (शुक्रवार) को छोड़ा था।

– अंतरिक्ष में सर्वप्रथम जाने वाला प्राणी लाईका नाम की एक कुतिया थी। रूस ने नवम्बर 1957 में इसे अंतरिक्ष में भेजा था।

– यूरी गगारिन अंतरिक्ष में जाने वाला पहला मनुष्य था। उसे रूस ने 12 अप्रैल 1961 को 'वास्तोक' नामक अन्तरिक्ष यान में भेजा था। वह अन्तरिक्ष में 90 मिनट के लगभग रहा। एलन शेपर्ड अंतरिक्ष में जाने वाले प्रथम अमरीकी थे। वो मई 1961 में अंतरिक्ष में गए थे।

– अंतरिक्ष में अब तो अनेक महिलाएं भी जा चुकी हैं। किंतु रूस की वेलेन्तीना तारेशकोवा अंतरिक्ष में जाने वाली प्रथम महिला थी। जो 16 जून 1963 को 'वोस्तोक- 6' नामक अंतरिक्ष यान में गई थी।

– अंतरिक्ष यान से बाहर निकल कर अंतरिक्ष में घूमने वाली क्रिया को अंतरिक्ष में तैरना कहा जाता है। ऐसा करने वाले प्रथम व्यक्ति थे रूस के अलेक्सी लियोनोव।' यह करतब उन्होंने फरवरी 1965 में किया था। अमरीका के 'एडवर्ड व्हाइट' ने भी ऐसा जून 1965 में किया था।

चन्द्रमा पर उतरने वाले प्रथम व्यक्ति थे अमरीका के 'नील आर्मस्ट्रोंग' और दूसरे थे 'एडविन आल्ड्रिन'। दोनों 21 जुलाई 1969 को 'अपोलो- 11' से चन्द्रमा पर उतरे। अब तक कुल 12 व्यक्ति चन्द्रमा पर उतरे हैं। वो सब पुरुष थे और अमरीकी थे।

–चन्द्रमा पर अमरीका ने, अपोलो-श्रृंखला के 7 अंतरिक्षयान जुलाई 1969 से दिसम्बर 1972 तक भेजे। इनमें से अपोलो- 13 असफल रहा जबकि अन्य अपोलो यान, 11 से 17 तक चन्द्रमा पर उतरे।

रूस ने चन्द्रमा सम्बंधी जानकारी एक मशीन लूनाखोद वहां भेजकर प्राप्त की थी।

कभी-कभी अंतरिक्षयान अंतरिक्ष में पहुंचकर कुछ तकनीकी खराबी के कारण काम करना बंद कर देते हैं। इस कारण करोड़ों रुपयों की हानि होती है। अब ऐसे यानों की अंतरिक्ष में भी मरम्मत का काम आरम्भ हो गया है। अमरीकी अंतरिक्ष यान 'सोलर मैक्स' पहला यान था जिसकी मरम्मत अंतरिक्ष में अप्रैल 1984 में की गई थी।

भारत का पहला अंतरिक्ष यान आर्य भट्ट था। इसे रूस के अन्तरिक्ष अड्डे से छोड़ा गया था।

वर्ष 1981 से पूर्व एक अंतरिक्षयान केवल एक ही बार अंतरिक्ष भेजा जा सकता था इसका दुबारा उपयोग नहीं हो सकता था तब यह सोचा गया कि बार-बार उपयोग किए जा सकने वाले अंतरिक्षयान बनाए जाएं। इस दिशा में सर्वप्रथम प्रयास अमरीका ने किया। 12 अप्रैल 1981 को अमरीका ने कोलम्बिया नामक एक ऐसा अंतरिक्षयान अंतरिक्ष में भेजा जो कि बार-बार अंतरिक्ष में भेजा जा सकता है। इसके बाद अमरीका ने चैलेंजर, डिस्कवरी और एटलांटिस नामक ऐसे अंतरिक्षयान बार-बार अंतरिक्ष में भेजे।

रूस ने इस तरह का यान पहली बार दिसम्बर 1988 में भेजा, इस अंतरिक्षयान का नाम 'बुरान' (बर्फ का तूफान) था। □

# खेलकूद प्रश्नोत्तरी

—योगराज थानी

**प्रश्न :** इस समय टेबल टेनिस में पुरुष वर्ग और महिला वर्ग के राष्ट्रीय चैम्पियन कौन हैं?

**-कुमार यशवंत सिंह, दरभंगा (बिहार)**

**उत्तर :** इस समय टेबल टेनिस के राष्ट्रीय चैम्पियन हैं मनमीत सिंह। उनसे पहले यह गौरव तमिलनाडु के एस. श्रीराम को प्राप्त था। महिला वर्ग की राष्ट्रीय चैम्पियन हैं रिंकु गुप्ता, जिनकी उम्र केवल सत्रह वर्ष है।

**प्रश्न :** इस समय क्रिकेट जगत में सर्वश्रेष्ठ बल्लेबाज कौन है?

**-सुरेश चन्द्र सोनी, आमेट**

**उत्तर :** वेस्टइंडीज के कप्तान विव. रिचर्ड्स को आज की दुनिया का सर्वश्रेष्ठ बल्लेबाज माना जाता है। अब तो उनका नाम भी 100 टेस्ट मैच खेलने वाले खिलाड़ियों की सूची में जुड़ गया है। वेस्टइंडीज और आस्ट्रेलिया ने ब्रिसबेन में 1988 जो 63 वां टेस्ट खेला वह वेस्टइंडीज के कप्तान विव. रिचर्ड्स का 100 वां टेस्ट था

**प्रश्न:** भारतीय क्रिकेट की चयन समिति के सदस्यों के नाम बताएं?

**-दिनेश चन्द्र जोशी, हल्द्वानी**

**उत्तर :** क्रिकेट की चुनाव समिति के सदस्यों के नाम इस प्रकार हैं : रांजसिंह डूंगरपुर, नरेन्द्र तम्हाने, भगवत चन्द्रशेखर, रमेश सक्सेना और चेतन चौहान।

**प्रश्न :** भारतीय क्रिकेट खिलाड़ी कपिल देव ने किस देश के विरुद्ध पहला एक दिवसीय अंतरराष्ट्रीय मैच खेला?

**-संजीत कुमार वर्मा, चम्पारण (बिहार)**

**उत्तर :** पाकिस्तान के विरुद्ध 1978 में क्वेटा में। इसमें कपिल देव ने इमरान खान की विकेट ली। यह मैच भारत ने 4 रनों से जीता।

**प्रश्न :** ब्राजील द्वारा 1970 में जूले रीमें ट्राफी द्वारा तीसरी बार कब्जा करने के बाद यह ट्राफी उन्हें हमेशा के लिए मिल गई। अब विश्व कप (फुटबाल) में विजेता को कौन-सा कप दिया जाता है?

**-विवेकानन्द गुप्त 'विकी', ब्यौहारी (म.प्र.)**

**उत्तर :** नया कप अंतरराष्ट्रीय फुटबाल महासंघ (फेडरेशन आफ इंटरनेशनल फुटबाल एसोसिएशन) के नाम पर 'फीफा' ट्राफी के नाम से जाना जाता है। अब विजेता को यही ट्राफी दी जाती है। यह रनिंग ट्राफी है।

**प्रश्न :** संदीप पाटिल ने अपने टेस्ट जीवन की शुरुआत कब की?

**-भूपेन्द्र जाधव, बडवानी**

**उत्तर :** संदीप पाटिल ने पाकिस्तान के विरुद्ध 15 जनवरी 1980 को मद्रास में अपने टेस्ट जीवन की शुरुआत की।

**प्रश्न :** फुटबाल में कितने प्रकार के फाउल होते हैं?

**-मो. इम्तेयाज आलम, चम्पारण (बिहार)**

**उत्तर :** फुटबाल में मुख्यतः चार प्रकार के फाउल होते हैं : आफ साइड, विपक्षी खिलाड़ी को बाधा पहुंचाना, गेंद को हाथ से छूना और गेंद का खेल मैदान से बाहर हो जाना।

**प्रश्न :** फुटबाल सम्राट 'पेले' का पूरा नाम क्या है वह किस देश के हैं और कितने गोल कर चुके हैं?

**-जगत सिंह, हल्द्वानी (उ.प्र.)**

**उत्तर :** ब्राजील के एडसन अरांटेस डि नासिमेंटी पेले ने 17 वर्ष की आयु में विश्व कप में भाग लिया और 36 वर्ष की आयु तक खेले। लगभग 1278 गोल किए।




एक बार की बात है मुल्ला नसरूद्दीन समुद्री-यात्रा पर जा रहे थे। सयोग से जहाज पर वे अकेले यात्री थे। अचानक जहाज तूफान में फंस गया। जहाज के कैप्टन और नाविकों ने जहाज को बचाने की भरपूर कोशिश की। जब वे बचाने में असफल रहे, तो उन सब ने जहाज को अल्लाह के भरोसे छोड़ दिया और घुटनों के बल बैठकर प्रार्थना करने लगे।

नसरूद्दीन उन लोगों के पास शांत खड़े रहे। तब कैप्टन ने उन्हें देखकर कहा–"आप भी कुछ करें?" परंतु मुल्लाजी वैसे ही खड़े रहे। तब कैप्टन ने चीखते हुए कहा–"मुल्लाजी ! घुटनों के बल जल्दी बैठिए और प्रार्थना कीजिए। आप तो खुदा के बंदे हैं, अतएव आपको अवश्य इबादत करनी चाहिए।"

मुल्ला नसरूद्दीन ने अविचलित होते हुए कहा–"मैं तो इस जहाज का मात्र यात्री हूं और इस जहाज की सम्पूर्ण सुरक्षा व्यवस्था की जिम्मेदारी आपकी है, हमारी नहीं, तो फिर क्यों मैं प्रार्थना करूं?"

* * *

एक आदमी की रेलगाड़ी से गिरकर मृत्यु हो गई। उसकी पत्नी रोते हुए बोली–"यदि हमको मालूम होता कि आपकी गिरने से मृत्यु होगी तो मैं आपको हवाई जहाज से जाने को कहती। कम से कम मौत का एक लाख रुपया मुआवजा तो मिलता।"

इतने में उसका पुत्र मां को समझाने लगा–"मम्मी ! कोई बात नहीं, पचास हजार तो मिला। अब आप हवाई जहाज से गिरकर मरना।"

* * *

"अब पेट्रोल का खर्च अस्सी प्रतिशत बचाया जा सकता है।"

"वह कैसे?"

"यदि सड़कें ढलान वाली बना दी जाएं। तब तो गाड़ियां स्वयं नीचे की ओर भागेंगी।"

"यह नहीं सोचा कि वापसी आने पर क्या होगा?"

"वापस तो बीस प्रतिशत ही लोग आएंगे।"

* * *

मकान मालिक ने किरायेदार से पूछा–"तो आप मुझे किराया कब तक देंगे?"

वह किरायेदार लेखक था। उसने कहा–बस, जैसे ही मेरा उपन्यास छपकर आ जाएगा। मैं किराया तुरंत दे दूंगा।"

"तो उपन्यास कब तक छपेगा?" मकान मालिक बोला।

"जैसे ही कोई स्तरीय प्रकाशक मिल जाएगा। प्रकाशक के मिलते ही, मैं उपन्यास हेतु विषय पर विचार प्रारम्भ करूंगा और रात-दिन जुटकर उपन्यास लिख डालूंगा। प्रकाशक का जैसे ही चेक मिला, वह मैं आपके हाथ में तुरंत रख दूंगा।" लेखक ने उत्तर में कहा।

* * *

**विजय प्रकाश त्रिपाठी**

मौजी : "अगर तुम्हारी गाय खो गई है तो अखबार में विज्ञापन क्यों नहीं निकालते।"

राजेश : "कोई फायदा नहीं, मेरी गाय को पढ़ना नहीं आता है।"

* * *

विशाल : "कुक्कु आज हमारी गाय ने ऊन के गोले खा लिए।"

कुक्कु : "तो कोई डरने की बात नहीं है जब तुम्हारी गाय बच्चे देगी तो वह स्वेटर पहने हुए होंगे।"

**–राजेश गंभीर**

# कलम का रहस्य

(200)

—राकेश कुमार

मैं दरवाजे से सटे वाशबेसिन में हाथ-मुंह धो रहा था कि एक जोर की चीख सुनाई दी। इतने बड़े होटल में, मैं, पहली बार ही ठहरा था। मैं तो पहले ही घबरा रहा था, अब यह चीख सुनकर मेरी हालत और भी खराब हो गई। मैंने झटके से दरवाजा खोला, देखा सामने एक बेटर चाय का कप लिए जा रहा था। "यह चीख कैसी है?" मैंने पूछा।

"टी.वी. में कोई नाटक चल रहा है। उसमें ही आवाज आ रही है।" उसने कहा और आगे बढ़ गया।

मैंने, दरवाजा बंदकर, चैन की सांस ली। तभी गोली चलने की-सी आवाज हुई। यह भी नाटक में होगा—मैं सोच ही रहा था कि तभी 'खून-खून' की आवाज हुई और गलियारे में चहलकदमी बढ़ गई। मैं भी दरवाजा खोलकर बाहर आ गया। मेरे बगल वाले तेरह नं. कमरे में एक आदमी का खून हो गया था।

थोड़ी देर में पुलिस आ गई। इंस्पेक्टर ने आते ही मैनेजर से पूछा—"क्या नाम है इसका?"

"प्रभाकर"—मैनेजर ने फाइल खोलकर देखते हुए कहा।

"कब आया था?"

"आज ही रात लगभग आठ बजे।"

"इसके साथ कोई और आया था?"

"हां, "और मैनेजर ने मेरी ओर इशारा करके कह दिया। मैं कांप उठा।

"आप इसे जानते हैं?" इंस्पेक्टर मेरी ओर मुखातिब हुआ।

"नहीं, मेरे मुंह से निकला।

"ठीक है ! आप बिना सूचना दिए शहर से बाहर नहीं जा सकते, समझे।"

"जी"—मैंने कहा।

"मैं फ़ोन कर सकता हूं।" मैंने कुछ देर बाद पूछा।

इंस्पेक्टर के हां कहने पर मैं नीरज का नम्बर डायल करने लगा। नीरज उस शहर में मेरा एकमात्र परिचित दोस्त था। नम्बर एंगेज था। मैंने झुंझलाहट में एक दो बार फिर फोन मिलाया किंतु नम्बर न मिला। तभी मैनेजर के कमरे का दरवाजा खुला। मैंने देखा वह नीरज ही था। मैंने नज़र मिलते ही पूछा—"तुम यहां?"

"हां ! नई डिटेक्टिव एजेंसी खोली है। इसलिए जहां पुलिस पहुंचती है मैं भी पहुंच जाता हूं, लेकिन तुम यहां कैसे?"

"आया तो परीक्षा देने था, पर यहां इस झमेले में फंस गया।"

"घबराओ नहीं"—नीरज ने हाथ मिलाते हुए कहा और मुझे लेकर उस कमरे में चल पड़ा। कुछ बात करने के बाद नीरज ने कहा—"मरकर गिरा हुआ है लेकिन हाथ से रिवाल्वर पकड़ा हुआ है। वाह, क्या आत्महत्या है।"

"तो क्या इसने आत्महत्या नहीं की है?"

"ऐसा लगता नहीं।"

"लेकिन कौन इसका खून क्यों करेगा?"

"यही तो जानना है? पर ऐसा लगता है तुम इसे जानते हो।" नीरज ने मुझसे पूछा और मैं घबरा गया।

"आओ तुम्हारे कमरे में चलें।" नीरज ने कहा और मैं अपने कमरे में आ गया। बैठते ही नीरज ने कहा—"यह तो निश्चित है कि तुम उसे जानते हो। पर कितना जानते हो यह नहीं कह सकता।"

मैंने धीमे स्वर में कहना आरम्भ किया-"हम ट्रेन में साथ ही थे। कुछ हल्की-फुल्की बातचीत भी हुई थी।"

"इसके साथ कोई और भी था?" नीरज ने पूछा।

"एक आदमी तो था पर मैंने उससे बात नहीं की।"

"क्यों?"

"बात यह है कि वह एक पत्रिका पढ़ रहा था। उससे मैं पत्रिका लेकर कुछ देर तक तो यूं ही पलटता रहा। पर जैसे ही मैंने उसका महीना तथा मूल्य देखने के लिए कवर पलटा उसने मुझसे पत्रिका छीन ली।"

"कवर पर उसका नाम था क्या?" नीरज के स्वर में तेजी थी।

"हां नाम तो था! श्रीधर।"

"इसका मतलब है कि वह अपना नाम छिपाना चाहता था। और मैं इसका कारण समझ सकता हूं।" नीरज की आंखों में चमक थी। "वह ट्रेन से उतर कर कहां गया कुछ बता सकते हो?" नीरज ने आगे पूछा।

"वह तो पास ही होटल 'प्लाजा' में ठहरा है।"

"तो तुम लोग भी 'प्लाजा' में क्यों नहीं ठहरे?"

"वहां सिंगल सीटेड रूम खाली नहीं था। फिर श्रीधर ने ही कहा कि बगल में ही 'शीराज़ा' होटल है, हम लोग यहीं ठहर जाएं।"

"लेकिन डबल सीटेड रूम तो होंगे और वे दोनों अगर परिचित थे तो उसमें एक साथ रह सकते थे।"

"वे परिचित तो थे पर श्रीधर चाहता था कि प्रभाकर यहीं ठहरे।"

"ज़ाहिर है खूनी अपने होटल में खून करना नहीं चाहेगा। समझो मेरा पहला केस सफल हो गया।"

"पर इसका श्रेय मुझे जाता है श्रीमान जासूस।"

"आओ 'प्लाजा' होटल चलकर श्रीधर से कुछ पूछताछ करें।" नीरज ने कहा और हम चल पड़े।

होटल पहुंचते ही नीरज ने मैनेजर से श्रीधर का रूम नम्बर बताने को कहा। पर मैनेजर के अनुसार उसके होटल में श्रीधर नाम का कोई आदमी ठहरा ही नहीं था।

"भाग गया"—नीरज बुदबुदाया तो मैंने कुछ



सोचकर मैनेजर से पूछा—"आज आठ बजे किसी ने आपके यहां आखिरी सिंगल सीटेड रूम लिया है, उसका नाम क्या है?

"वेंकट, पर वह अभी नहीं है"—मैनेजर ने कहा।

"अगर उसका नाम वेंकट है तो उसे अपना नाम 'श्रीधर' छुपाने की क्या जरूरत थी। हो सकता है वेंकट उसका नकली नाम हो।" नीरज ने होटल से बाहर निकलते ही कहा।

मैं झुंझला उठा—"आखिर बिना किसी सबूत के तुम उसे खूनी कैसे मान रहे हो?"

"सबूत भी मिल जाएंगे। अभी तुम होटल जाओ रात काफ़ी हो चली है। वैसे मैंने सोचा है कि कल अखबारों में यह छपवाया जाए कि प्रभाकर बच गया है। निश्चित है खूनी फिर उसे मारने का प्रयत्न करेगा और पकड़ा जाएगा। इस तरह मेरा पहला केस सफल होगा।"

अगले दिन मैंने अखबार खोलकर देखा वैसा कुछ नहीं छपा था। किसी स्थानीय संवाददाता की पुलिस के हवाले से रिपोर्ट थी कि होटल 'शीराजा' में कल प्रभाकर नामक व्यक्ति का खून हो गया है। मैंने नीरज को फोन किया—"अखबार देखा तुमने?"

"हां, पुलिस इंस्पेक्टर झूठी खबर छपवाने

के लिए राजी नहीं हुआ। तुम वहीं रहना मैं आ रहा हूं। खबर पढ़कर वेंकट भी वहां पहुंचेगा।"

मैं जब काउंटर पर पहुंचा तो देखा, वेंकट उदास बैठा था। तब तक नीरज भी आ गया। उसने वेंकट से पूछा–"आपने प्रभाकर को होटल 'प्लाजा' में क्यों नहीं ठहरने दिया?"

"क्या जानता था कि ऐसा हो जाएगा। प्रभाकर निरामिषभोजी था इसलिए मैंने सोचा कि वह निरामिष होटल में ही ठहरे तो अच्छा है।" वेंकट ने कहा फिर उसने मैनेजर से पूछा–"उसके नाम कोई बिल है क्या?"

"हां दो रुपये, एक कप चाय के।"

"चाय के"–वेंकट चौंका और हम उसके करीब आ गए।" लेकिन वह तो कभी चाय नहीं पीता था।" वेंकट ने आगे कहा।

नीरज ने कहा–"शहर में आया है इसलिए हो सकता है उसने चाय पीना चाहा हो।"

फिर उसने मैनेजर से पूछा–"आप प्रत्येक रूम में चाय सर्व करते हैं क्या?"

"हम बिना आर्डर के कोई सामान नहीं देते।" मैनेजर ने कहा।

"यानी उसने आर्डर देकर चाय पी थी...असम्भव।" वेंकट ने कहा।

नीरज ने मैनेजर से पूछा–"आप उस वेटर को बुला सकते हैं जिसने उसे चाय दी थी।"

"हां" मैनेजर ने कहा–"उसका नाम राबर्ट है।"

"राबर्ट तुमने प्रभाकर को आर्डर पर चाय दी थी।"

"जी हां।" राबर्ट कुछ घबड़ा रहा था।

"और प्रभाकर उसे पी गया।"

"मैंने यह तो नहीं देखा पर वह पी रहे थे।" राबर्ट ने कुछ सोचकर कहा।

"हां मैंने भी चाय का खाली कप वाश बेसिन पर रखा देखा था।" मैंने पुष्टि की।

"चाय का खाली कप वाशबेसिन पर पड़ा और चाय का कुछ भाग वाश वेसिन में पड़ा था। लेकिन क्यों? रूम में टेबुल भी तो था।" नीरज ने कहा।

"राबर्ट क्या यह कहानी कुछ इस तरह नहीं हो सकती कि उस कमरे में तुम्हारा कोई राज था। प्रभाकर के अचानक आने से तुम्हें राज खुलने का खतरा महसूस हुआ। तुम चाय के बहाने भीतर गए। चाय को वाशबेसिन में उड़ेला और नाटक के वक्त उसका खून कर निकल आए।"

राबर्ट घबड़ा गया, उसने भागना चाहा और तभी पास आ चुके दो पुलिस के जवानों ने उसे गिरफ्त में ले लिया। बाद में राबर्ट ने अपना अपराध कबूल कर लिया।

वह कमरा जिसमें प्रभाकर का खून हुआ था तेरह नम्बर का था और मनहूस समझे जाने के कारण पिछले सात-आठ महीने से खाली पड़ा था। राबर्ट,जो कि ड्रग्स का धंधा करता था, उस कमरे को कभी-कभी स्टोर के रूप में इस्तेमाल



करता था तथा अलमारी में नशीली दवाएं रखता था। जब प्रभाकर ने वह कमरा लिया, राबर्ट होटल में नहीं था। जब वह लौटा तो चाय के बहाने अंदर गया तथा सामान रखने के लिए अलमारी खोल रहे प्रभाकर को गोली का निशाना बनाकर उसके हाथ में रिवाल्वर थमा कर बाहर आ गया। जल्दबाजी में वह चाय उड़ेलकर उसे टेबुल पर रखना भूल गया था और उसे वाश बेसिन पर ही छोड़ आया।

मैंने सोचा–'हम व्यर्थ ही वेंकट पर शक कर रहे थे।' पर पत्रिका वाली बात याद आते ही मैंने पूछा–"आपने ट्रेन में मुझसे पत्रिका छीन क्यों ली थी?"

वेंकट का आंसू भरा चेहरा हंस पड़ा, वह बोला–"आप नाराज़ हो गए थे क्या?" फिर उसने पत्रिका निकालकर दिखाते हुए कहा–"इसमें मेरे मित्र 'श्रीधर' की रचना छपी है तथा यह प्रति मुझे उसी ने भेंट की है। ट्रेन में ढेर सारे लोग थे। मुझे लगा कहीं पत्रिका को कुछ नुकसान न पहुंचे, इसलिए आपसे पत्रिका लेकर रख लिया। अब देख लीजिए।"

मैं पत्रिका पलटने लगा। नीरज धीरे-धीरे मुस्करा रहा था।

द्वारा श्री लोकमान मंडल
लड़कनियां टोला, कटिहार (बिहार) 854105

# पहुंचा हुआ साधु

–सुरेन्द्र साह

कुंदन वन में एक तालाब था। उस तालाब में बहुत सारी मछलियां रहती थीं। उस तालाब में अभी तक किसी मछुआरे ने अपना जाल नहीं डाला था, न ही कभी किसी बगुले की कुदृष्टि ही पड़ी थी। फलतः उस तालाब की मछलियां निर्भय होकर खेलकूद, नाच-गाना करती रहती थीं।

एक दिन उस तालाब में एक अपूर्व घटना घटी। एक बगुला तालाब में, जहां पानी छिछला था, केसरिया रंग के कपड़े और गले में रुद्राक्ष की माला पहने, खड़ा कुछ पढ़ रहा था।

उस तालाब की मछलियों ने कभी बगुला देखा नहीं था, अतः जिज्ञासावश बहुत सारी मछलियां झुंड बनाकर बगुले के पास आईं। मछलियों की मुखिया चंचल मछली ने बगुले से पूछा–"आप कौन हैं। कहां से आए हैं और क्यों आए हैं?"

"मैं साधु हूं, साधुओं का कोई घर-घाट नहीं होता है, आज यहां तो कल वहां। आकाशमार्ग से जा रहा था, आपका तालाब देखकर उतर गया, सोचा भगवान का नाम ले लूं।"

"आपका स्वागत है, परंतु आप खाएंगे क्या?"

"मेरे खाने-पीने की चिंता आप न करें। मैं ऐसा-वैसा साधु नहीं हूं। मुझे सिर्फ प्यास लगती है और तालाब में पानी की कमी तो होगी नहीं।"

एक बूढ़ी मछली, जो अब तक घूर-घूरकर बगुले को ही देखे जा रही थी, सभी मछलियों से फुसफुसाकर बोली–"यह साधु नहीं है, यह बगुला है, यह मछलियों का दुश्मन है। मेरी दादीजी ने मरने से पूर्व मुझे बताया था–'लम्बी चोंच और लम्बी गरदन वाला सफेद रंग वाला पक्षी बगुला होता है।"

"अच्छा इसकी परीक्षा हम कल ले लेंगी।" चंचल मछली गंभीर होकर बोली।

दूसरे दिन चंचल मछली ने बहुत सारी छोटी मछलियों को बगुले के पास खेलने-कूदने के लिए भेजा। कुछ देर बाद सारी मछलियां सुरक्षित वापस लौट गईं, तब एक नन्हीं चूं-चूं मछली को बगुले के पास खेलकूद करने के लिए भेजा और स्वयं भी छुपकर बगुले के पास ही बैठ गई।

चूं चूं मछली को अकेला देख, बगुले ने

झपट्टा मारकर पकड़ लिया। यह देखकर चंचल मछली, चूं-चूं मछली को बगुले की चोंच से झपट कर भाग खड़ी हुई।

अब तालाब की सारी मछलियां बगुले की सच्चाई जान गई थीं। देखते ही देखते ढोंगी बगुले को मजा चखाने की योजना बन गई।

तीसरे दिन चंचल मछली बगुले का अभिवादन कर बोली–"हमारी रानी बहुत बड़ी और मोटी है। वह छिछले पानी में आ नहीं पाती, लेकिन आप जैसे पहुंचे हुए साधु के दर्शन कर पुण्य लाभ करना चाहती है। क्या आप थोड़े गहरे पानी में जाकर हमारी रानी की इच्छा पूरी करेंगे?"

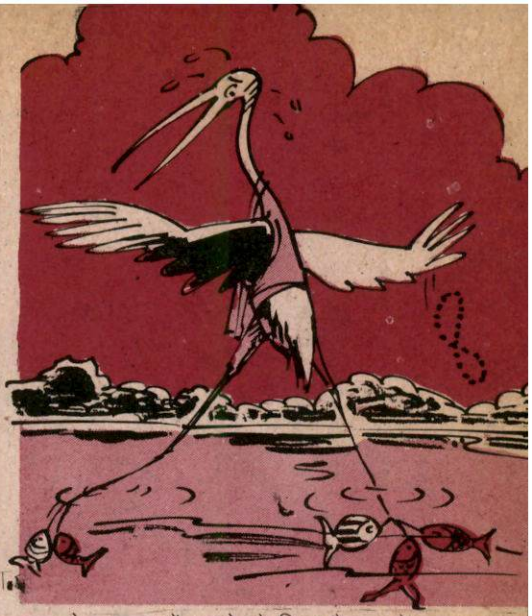
क्यों नहीं, मेरे जैसे साधु को डर कैसा? अभी चलता हूं।" और बगुला चंचल मछली के पीछे-पीछे गर्व के साथ चल पड़ा।

अभी कुछ ही दूर जा पाया था कि बगुला पंख फड़फड़ाकर चिल्लाने लगा–"बचाओ, बचाओ, मुझे कोई पानी के अंदर खींच रहा है।"

"महाराज, आप ठहरे पहुंचे हुए साधु। आपको बचाने की औकात भला हम में कहां?" चंचल मछली बनावटी आश्चर्य, पर, व्यंग्य के साथ बोली।

"मैं डूब रहा हूं और तुम्हें मज़ाक सूझता है। मैं शाप दे दूंगा।" बगुला गुस्से से बोला।

"बगुला महाराज, शाप बाद में दे दीजिएगा, पहले तालाब में डूबने के लिए तैयार हो जाइए, क्योंकि आपका परिचय हम पा चुकी हैं और आपके आगमन के उद्देश्य की भी परीक्षा ले ली है।"



अब बगुला बुरी तरह गिड़गिड़ाने लगा–"बहनों! मुझे माफ़ कर दो। मुझे तालाब में डुबाकर मत मारो। मैं फिर कभी भी इधर नहीं आऊंगा।"

तब तक मछलियां ढोंगी बगुले को सबक सिखाने के लिए खिलखिलाती हुई टूट पड़ीं।

**मिथिला फार्मेसी**
**ताजपुर, समस्तीपुर**
**(बिहार) 848130**

# नाचे बंदरिया

—मदन गोपाल शर्मा

(5)

रंग-बिरंगी पहन चुनरिया,
ठुमक-ठुमक नाचे बंदरिया।
बच्चे ताली खूब बजाते,
जोश मदारी को दिलवाते।
डमरू की धुन सुन-सुन कर,
बच्चे दौड़ लगाकर आते।
बंदर के आते ही चिढ़ जाए,
उसको आंख दिखाए बंदरिया।

हाथ जोड़ वह शीश झुकाए,
दौड़-दौड़ कर उसे मनाए।
पर बंदरिया तनिक न माने,
छोड़ उसे आगे बढ़ जाए।
अच्छा खेल दिखाए बंदरिया,
सबके मन को भाए बंदरिया।

**60, अनुपम नगर, नोलखा परेख**
**ग्वालियर- 474011**

# प्रकृति की घटाओं पर विमुग्ध जवाहरलाल नेहरू

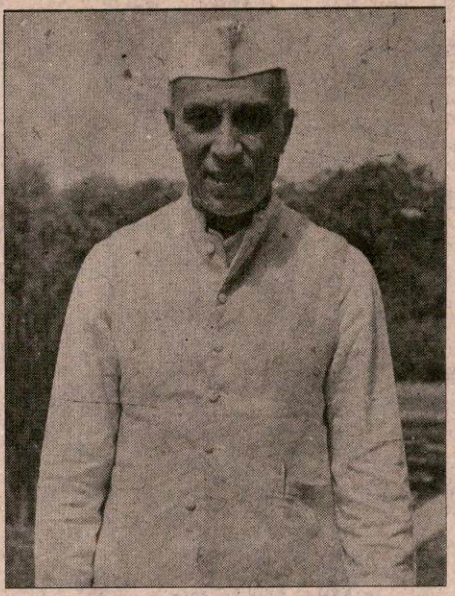
–विष्णु खन्ना

नेहरूजी ने एक बार विज्ञान की परिभाषा करते हुए कहा था–"विज्ञान क्या है? प्रकृति के संसाधनों को नियंत्रित करके उनका सदुपयोग करना विज्ञान है।" प्रकृति के दोहन, योगदान और विज्ञान की सकारात्मक परिभाषा इससे अधिक व सार्थक और क्या हो सकती है।

लेकिन ये केवल परिभाषा ही नहीं, एक संदेश व चेतावनी भी है। इसमें छुपा हुआ है प्राकृतिक सौन्दर्य को अछूता रखने का आह्वान और विज्ञान की नकारात्मक विध्वंसक भूमिका के प्रति वितृष्णा। पंडित नेहरू आधुनिक वैज्ञानिक युग के प्रति समर्पित, आस्थावान, सजग व सचेष्ट थे। साथ ही प्राकृतिक सौन्दर्य पर निछावर, उसके अनन्य पुजारी भी थे।

पानी को जीवन कहना ही शब्द की सार्थकता है। निर्झरों के प्रति नेहरूजी के प्यार का एक छोटा-सा उदाहरण दिया जा सकता है। जोशी मठ से बद्रीनाथ धाम तक सोलह निर्झर प्रवाहित हैं, इनके सौन्दर्य से विमुग्ध पंडितजी ने आदेश दिया था कि किसी भी वैज्ञानिक खोज अथवा प्रगति के नाम पर या स्वार्थों के कारण इनके प्रवाह में बाधा नहीं आनी चाहिए। और ये झरने आज तक सहज भाव से किलक रहे हैं।

बचपन से ही उनका स्वभाव घुमक्कड़ी था। विदेश में शिक्षा काल के दौरान जब भी उन्हें अवसर मिलता वहां के प्राकृतिक सौन्दर्य से परिचित होना चाहते। एक बार नार्वे की एक ठंडी तेज नदी में बहते-बहते बचे। विवाह के बाद पत्नी कमला के साथ जब वह भ्रमण के लिए कश्मीर गए तब भी एक दुर्घटना से बाल-बाल बचे। संकरी जोजीला घाटी में ऊपर और ऊपर चढ़ते चले गए, अब चारों तरफ सिर्फ बर्फ ही बर्फ थी, बर्फीली चट्टानों ने रास्ता रोक लिया। कमर में रस्सी बांध उसका सिरा किसी साथी के हाथ में पकड़ा कर आगे बढ़ना चाहा लेकिन फिसलकर



एक बर्फीली दरार में फंस गए। नीचे अथाह गहराई थी, यदि साथी सजग न होते तो नेहरूजी उसमें समा जाते।

नेहरूजी बचपन से ही प्राकृतिक सौन्दर्य की हर इकाई, हर क्षेत्र पर मुग्ध थे, वन्य प्राणियों से भी भरपूर लगाव था, साथ ही थोड़ा-बहुत शिकार का शौक था, लेकिन एक घटना ने इस शौक पर पटाक्षेप कर दिया और जानवरों के प्रति उनके मन में और भी प्यार उमड़ पड़ा। पर्वतों के ऊंचे शिखर और गहरी घाटियों में घूमना उन्हें बहुत पसंद था, इसी दौरान कभी कोई शिकार भी हाथ लग जाता। एक दिन एक हिरण का नन्हा मासूम बच्चा उनका शिकार बन गया। जवाहरलाल को लगा जैसे उसकी बड़ी-बड़ी तरल आंखें प्राण त्यागते हुए उसे, धिक्कार रही हैं। क्या यही तेरी बहादुरी है कि मुझ जैसे निरीह प्राणी का खून करता फिरे। बस नेहरूजी की आंखें भीग गईं और सदा के लिए बंदूक हाथ से छूट गई।

वन्य जीवन की मनोरम छटा पर विमुग्ध नेहरूजी की परिकल्पनाओं और योजनाओं में

अभयारण्य भी तैरते रहे। उन्होंने अपने जीवनकाल में जीव वैज्ञानिकों व वन्य विशेषज्ञों से भरे पूरे जंगलों में सर्वेक्षण कराया, लेकिन दुर्भाग्य से वह अपने जीवनकाल में इस सपने को साकार नहीं कर सके। और हम आज उन अभयारण्यों को देखकर प्रफुल्लित व रोमांचित होते हैं।

नेहरूजी के एकाकी जेल जीवन में सरस बनाने में भी जीव जन्तुओं का योगदान कम नहीं है। नेहरूजी ने भी उन्हें अपना मित्र समझा।

नेहरूजी का कहना था कि यदि हम जीव जन्तुओं को कुछ न कहें तो वह भी हमें कुछ नहीं कहेंगे। नेहरूजी ने इनके क्रिया कलापों को बहुत ही बारीकी से देखा:

"मैं चीटियों, दीमकों और दूसरे कीड़ों को घंटों देखता रहता था। छिपकलियां अपना शिकार चुपके से पकड़ लेती और अपनी दुम एक अजीब ढंग से हिलाती हुई एक दूसरे को लपेटती। गिलहरियां बहुत ढीठ और निशंक होकर हमारे पास आ जाती, लखनऊ जेल में जब मैं पढ़ रहा होता एक गिलहरी मेरे पैर पर चढ़कर घुटने पर बैठ जाती और चारों तरफ देखा करती और जब वह मेरी आंखों की ओर देखती तब समझती कि मै पेड़ या जो कुछ उसने समझा हो वह नहीं हूं और सहमकर दुबककर भाग जाती।"

कितना भाग्यशाली रहा होगा मैना का वह जोड़ा जिसकी सेवा नेहरूजी ने की

"देहरादून जेल में मैना के एक जोड़े ने मेरी कोठरी के दरवाजे के ऊपर घोंसला बना लिया था। मैं उन्हें दाना दिया करता। वे बहुत हिल गई थीं। जब कभी उनके दाने में देर होती वे मेरे नजदीक आकर बैठ जातीं और जोर से चीं-चींकर के खाना मांगतीं। उनके वह इशारे और अधीर पुकार देखते ही बनती थी।"

जेल में एक पिलिया को बचाने का पुण्य लाभ भी नेहरूजी को मिला:

"एक कुतिया मेरे पास रोटी के लिए आया करती। मैं उसे रोज खाना दिलाने लगा, उसने एक नाली में बच्चे दिए इसमें से एक पिलिया बीमार पड़ गई। वह बुरी तरह छटपटाती, मैंने बड़ी लगन के साथ उसकी सेवा टहल की, और मुझे इस बात की बहुत खुशी हुई कि वह बच गई।"

प्रकृति के अजस्र स्रोत का निर्माण कोई नहीं कर सकता, इनका विनाश न करना ही निर्माण में हाथ बंटाना है। प्रकृति तो स्वयं में एक निर्माता है जिसकी सतत् प्रक्रिया अपना व्यापक क्षेत्र स्वतः ही टटोल लेती है, उसी के अनुरूप सौन्दर्य और आनंद की सृष्टि होती है।

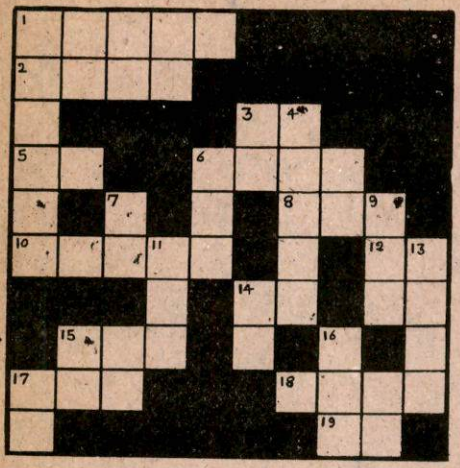
**प्रतीक कुंज,**
**ई- 43,मीनाक्षीपुरम**
**मवाना रोड- मेरठ**




यदि पानी की रखते हो इच्छा,
फिर ईश्वर से ही क्यों करते भिक्षा?
कुछ अपना श्रम भी तो लगाओ,
वृक्षारोपण कार्यक्रम अपनाओ।
श्रम से ही बनते हैं सभी काम,
श्रम से होता है जीवन में नाम।
श्रमेव जयते का नारा लगाओ,
वृक्षारोपण कार्यक्रम अपनाओ।
रोको अब वृक्षों का कटना,
इंदिरा का पूर्ण करो सपना।
कटने से वृक्षों के भू पर,
पर्यावरण भी है दूषित,
उसको अब स्वच्छ बनाओ,
वृक्षारोपण कार्यक्रम अपनाओ।

# विज्ञान वर्ग पहेली

राकेश कुमार



**संकेत :**

ऊपर से नीचे–

1. वैसे यौगिक जिनमें सिर्फ हाइड्रोजन तथा कार्बन उपस्थित होते हैं।
3. इस रंग के विकिरण की तरंग की लम्बाई न्यूनतम होती है।
4. ऐसे पदार्थ जिनमें इलेक्ट्रान त्याग करने की प्रवृत्ति होती है।
5. यह समांग होने पर विलयन तथा विषमांग होने पर निलम्बन कहलाता है।
7. हाइड्रोजन के इतने समस्थानिक होते हैं।
9. धातु पर अम्ल की प्रतिक्रिया से यह बनता है तथा हाइड्रोजन गैस मुक्त होती है।
11. इस वेग की इकाई रेडियन प्रति सेकेंड है।
13. समुद्र के पानी की एक खास विशेषता।
14. पर्यावरण असंतुलन हमारा... रहना असम्भव कर सकता है।
15. यहां पर पृथ्वी कुछ चपटी है।
16. हाइड्रोजन तथा आक्सीजन को जल बनने के लिए उनका निश्चित अनुपात में... आवश्यक है।
17. इसके पी.एच. का मान सात से कम होता है।

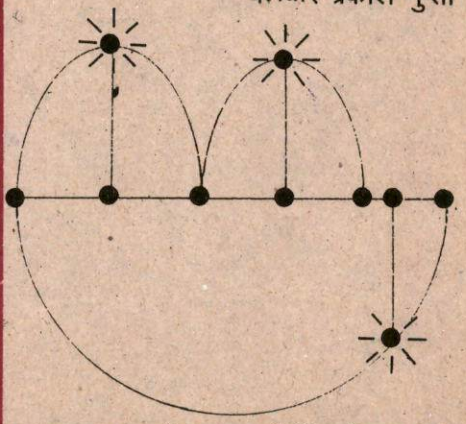
बाएं से दाएं :

1. एक ज्वलनशील गैस।
2. एक मौलिक कण, जिस पर इकाई ऋण आवेश रहता है।
5. एक अदिश राशि, जिसका मानक न्यूटन मीटर है।
6. विज्ञान के साथ-साथ इसके तरीकों में विकास उपभोक्ताओं की प्रमुख समस्या है।
8. कार्बन का बेरवादार अपररूप।
10. मुक्त लटके चुम्बक के चुम्बकीय अक्ष का क्षैतिय दिशा के साथ कोण।
12. इसकी रक्षा पर्यावरण संतुलन की आवश्यक शर्त है।
14. इसके और तांबे के मिश्रण से पीतल का निर्माण होता है।
15. इस क्षेत्र में काफी ठंड पड़ती है।
17. जिन तत्वों के बाह्यतम कक्षा में आठ इलेक्ट्रान होते हैं वे अक्रिय... होते हैं।
18. इसका उपयोग रोगाणुनाशी टिंक्चर आयोडीन के रूप में प्रमुखतः होता है।
19. कुत्ते इसके प्रति काफी संवेदनशील होते हैं।

**लड़कनिया टोला, कटिहार**
**(बिहार)- 854105**

## माथा पच्ची

–बलबीर प्रकाश गुप्ता



क्या तुम ऊपर के सात काले बिंदुओं पर 1 से 7 तक के अंक इस प्रकार लिख सकते हो कि किसी भी सितारे से जुड़े काले बिंदुओं पर के अंकों का योग 12 हो।

**उत्तर अन्यत्र**

# प्रतिभा के धनी वृंदावनलाल वर्मा

(149)

–पूर्णिमा

प्रत्येक व्यक्ति, समाज और संस्कृति के लिए उसके सम्मुख उपस्थित वर्तमान का जितना अधिक महत्व है, उतना ही उस वर्तमान को सुदृढ़ और परिपुष्ट बनाने के लिए भूत का महत्व है। भूत की उपेक्षा करके कोई भी समाज किसी भी क्षेत्र में अग्रसर नहीं हो सकता, चाहे वह राजनीति का क्षेत्र हो, धर्म का या फिर साहित्य का। साहित्यकार, मनुष्यों में सबसे संवेदनशील प्राणी है। उसका कर्तव्य बन जाता है कि वह समाज को उद्देश्यपूर्ण साहित्य प्रदान करे। अतः वह तो अपने अतीत को बिसार ही नहीं सकता। साहित्य की अनेक विधाओं में उपन्यास आधुनिक युग की देन है। यह एकमात्र ऐसी साहित्यिक विधा है जिसके माध्यम से मानव जीवन में उठने वाली अनेक सामाजिक समस्याओं पर सोच-विचार कर सकते हैं। इसी दिशा में इतिहास की पृष्ठभूमि पर तैयार ऐतिहासिक उपन्यास हमें अपने अतीत की सारगर्भित जानकारी प्रदान करते हैं जिसका श्रेय ऐतिहासिक उपन्यासकारों को जाता है। हिंदी के ऐतिहासिक उपन्यास जगत में अग्रगण्य थे वृंदावनलाल वर्मा। इस वर्ष इनका जन्म शताब्दी वर्ष मनाया जा रहा है।

वर्माजी का जन्म 9 फरवरी 1889 को झांसी के मऊ रानीपुर में हुआ। वहीं इनकी प्रारम्भिक शिक्षा हुई। पाठशाला की शिक्षा समाप्ति पर वर्माजी ने अपने चाचा के साथ ललितपुर रहकर वहां के जिला स्कूल से मिडिल की परीक्षा पास की। इसके बाद वे पुनः झांसी चले आए और वहीं के मैकडानल हाई स्कूल से मैट्रिक की परीक्षा पास की।

देशभक्ति की भावना इन्हें पैतृक सम्पत्ति के रूप में मिली थी। इनके परदादा आनंद राव 1857 ई. में झांसी की रानी लक्ष्मीबाई की सेना में थे और उनके दादा भी अंग्रेजों के प्रति विद्रोह प्रदर्शित करने वालों में शामिल थे, जिस कारण वे अंग्रेजों के बंदी भी बने। इनके परदादा को देशभक्ति के साथ-साथ कविता का भी शौक था। वर्माजी को अपने पूर्वजों की शौर्य गाथायें अपनी दादी-परदादी से सुनने को मिलती थीं।

वर्माजी के पिता के उच्च शिक्षा के विरोधी होने के कारण तथा परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण वर्माजी को जंगल के महकमे में मात्र 25 रुपये माहवार की नौकरी करनी पड़ी। परंतु करीब सात महीने पश्चात् इन्होंने यह नौकरी छोड़ दी और पुनः शिक्षा प्राप्ति की ओर अग्रसर हुए। उन्होंने बी.ए. और फिर एल.एल.बी. की परीक्षाएं पास की और झांसी में ही वकालत शुरू कर दी।

वर्माजी जीवन में शारीरिक बल और चरित्र की दृढ़ता बनाए रखने के लिए व्यायाम को सबसे उत्तम साधन मानते थे। उन्हें बचपन से ही डंड बैठक, प्राणायाम, कुश्ती लड़ने, लाठी चलाने, शिकार खेलने, तैरने, घूमने, हाकी, फुटबाल आदि खेलने का शौक था। यही कारण है कि उनकी कृतियों में शिकार, युद्ध, प्रकृति आदि के वर्णनों में सूक्ष्मता और प्राणमयता के दर्शन होते हैं। ऐसे स्थलों पर उन्होंने स्वतः अनुभूत ज्ञान का उपयोग किया है। इसके अतिरिक्त उनकी योग के प्रति बड़ी दृढ़ आस्था थी। यहां तक कि हठयोग तथा राजयोग का अभ्यास भी करते थे। शिकार का शौक कई बार उन्हें संकट की स्थिति में पहुंचा देता था, परंतु वे जरा भी विचलित नहीं होते थे। मैथिलीशरण गुप्त ने एक बार उनकी प्रवृत्ति को देखकर कहा था– "जब देखो तब कहीं जंगल में, नदी-नालों, पर्वतों-कंदराओं में बंदूक लिए घूमता रहता है जैसे शेर, चीते का डर ही नहीं।" शिकार के साथ ही इन्हें बागवानी का शौक भी बहुत था।

वृंदावन लालजी स्वतंत्र विचारों के व्यक्ति थे। वह प्राचीन, दकियानूसी अंधविश्वास, रुढ़ियों को पसंद नहीं करते थे। समाज में विद्यमान छूआछूत एवं दहेज प्रथा को समाज हित में बाधक समझते थे। इसी कारण उन्होंने अपने इकलौते पुत्र के विवाह में कुछ भी ग्रहण नहीं किया था।

समाज सुधारक वर्माजी का एक और रूप हमारे सामने आता है। वह रूप है उनका संगीत प्रेमी होना। संगीत में भी सितार उनका प्रिय वाद्य था।

वर्माजी की बचपन से ही इतिहास के प्रति अत्यधिक रुचि थी। विदेशी इतिहासकारों द्वारा अपनी कृतियों में भारत के प्रति किए गए अन्याय से उनके मन में अतीत के अध्ययन, वास्तविक तथ्यों की खोज की प्रेरणा जगी। पहले उनकी इच्छा सच्ची घटनाओं के आधार पर एक ग्रन्थ लिखने की हुई। उन्होंने 'नरान्तक वध' नाटक की रचना की। परंतु सर वाल्टर स्काट के दो उपन्यासों- 'आइवेनहो' और 'टेलिस्मैन' –को पढ़ने के बाद उन्होंने अपनी दिशा बदल दी और उन्होंने ऐतिहासिक उपन्यास लिखने का निश्चय किया। वर्माजी का कहना था कि भारत का इतिहास लिखने वाले अंग्रेज लेखकों ने शोध के परिश्रम और विद्वता के प्रवाह के साथ हमको न्याय नहीं दिया। और इस तरह उनके पहले ऐतिहासिक उपन्यास 'गढ़कुंडार' (1927) की रचना हुई। इस उपन्यास को लिखने में उन्हें लगभग 20-22 वर्ष (1905-1927) का समय लगा, लेकिन नाटक, कहानी तथा सामाजिक उपन्यास आदि लिखने का क्रम इन वर्षों में निरन्तर चलता रहा। 'गढ़कुंडार' लिखने के बाद तो उपन्यास लिखने का तांता जीवनभर चलता रहा। इन वर्षों में वृंदावनजी के चार उपन्यास प्रकाश में आए। जिनमें से एक तो ऐतिहासिक और तीन सामाजिक थे। इनके उपन्यासों को पढ़कर स्पष्ट प्रतीत होता है कि वे वाल्टर स्काट से प्रेरित अवश्य है, परंतु उनकी हू-ब-हू नकल उन्होंने कहीं नहीं की है। गढ़कुंडार की रचना के बाद वह पूर्णतया ऐतिहासिक उपन्यासकार हो गए। जिन्होंने जिस-जिस क्षेत्र को उपन्यासों के लिए चुना, उस क्षेत्र में जाकर और कुछ दिन वहां रहकर जो कुछ देखा, सुना, उसका उपयोग उन्होंने अपनें उपन्यासों में किया।

वर्माजी को उनकी कृतियों पर भारत सरकार, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश राज्य के साहित्य पुरस्कार तथा हरंजीमल डालमिया, साहित्यकार संसद, हिन्दुस्तान अकादमी और नागरी प्रचारिणी सभा, काशी के सर्वोत्तम पुरस्कार के साथ-साथ सोवियत नेहरू पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उन्हें 'मृगनयनी' कृति पर सबसे अधिक पुरस्कार मिले। वर्माजी की साहित्यिक सेवाओं के लिए आगरा विश्वविद्यालय ने डी.लिट् तथा भारत सरकार ने पद्मभूषण की उपाधि से सम्मानित किया। वर्माजी के कुछ उपन्यास हैं: गढ़कुंडार, विराटा की पद्मिनी, झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, कचनार, मृगनयनी, अहिल्याबाई, महारानी दुर्गावती, रामगढ़ की रानी आदि (ऐतिहासिक उपन्यास), लगन, संगम, सोना, कुंडलीचक्र, अमर बेल, आहत, उदय किरण आदि (सामाजिक उपन्यास)।

वृंदावनलाल वर्माजी अपने समय के सजग, जागरुक प्रहरी रहे हैं। उन्होंने अपने सम्मुख उपस्थित देश काल समाज की सब प्रकार की हलचलों, आंदोलनों परिवर्तनों की सूक्ष्म अनुभूति प्राप्त कर, अपने साहित्य के माध्यम से उनकी ओर देशवासियों का ध्यान आकृष्ट किया है। वर्माजी का दृष्टिकोण सामाजिक, आदर्शवादी

**इंगलैंड में जन्मे अंग्रेजी साहित्य मे ऐतिहासिक उपन्यासों के लिए विश्वविख्यात उपन्यासकार (1771—1832)**

और राष्ट्रीय रहा है। जिस समय उन्होंने अपनी कृतियों की रचना का श्रीगणेश किया था तो देश गुलाम था, और सामाजिक और धार्मिक रुढ़ियां भी अपने चरम सीमा पर थीं। यही कारण है कि इनके उपन्यासों में हमें राष्ट्रीय और सामाजिक समस्याओं का चित्रण और समाधान दोनों ही मिलते है।

23 फरवरी 1969 को इतिहास को सही रूप में अपने उपन्यासों की कथावस्तु बनाने वाले एक सच्चे इतिहासक़ार 'वृंदावनलाल वर्मा' चिरनिद्रा में सो गए।

सी- 7/201, हौज़ खास,
एस.डी.ए.
नई दिल्ली

# आशीर्वाद या शाप

—नैयर आज़म



कृष्णानंद एक धर्मप्रिय राजा थे। वे अक्सर साधु संतों को राजमहल में भोजन पर आमंत्रित करते रहते थे। एक बार उन्होंने एक बड़े भोज का आयोजन किया। राज्य भर के तमाम दरिद्र और निर्धन ब्राह्मण भोज में उपस्थित हुए। सभी ने पेट भरकर स्वादिष्ट भोजन किया। दक्षिणा प्राप्त करने के बाद जब सभी ब्राह्मण जाने लगे तो भीड़ में से एक ब्राह्मण कृष्णानंद के पास आया। उसने राजा को आशीर्वाद देने के लिए हाथ उठाया और कहा—"राजन् मेरा आशीर्वाद है कि आपके पैर में खारिश उठती रहे; आपके दरबारियों और अधिकारियों की नींद हराम होती रहे।" कहकर वह चला गया।

कृष्णानंद यह विचित्र और कौतुकपूर्ण आशीर्वाद सुनकर ठगे से रह गए। उस रात वह सो नहीं सके। रात भर करवटें बदलते रहे।

सुबह उठे तो उनका सिर भारी था। उन्हें लगा, अवश्य कोई अनहोनी घटना होने वाली है। उन्होंने तत्काल राजगुरू को बुलवाया और उन्हें सारी बात बताते हुए पूछा—"गुरूदेव! कोई संकट तो नहीं आने वाला है? क्योंकि ब्राह्मण कल कुछ कह गया था।"

सारी बात सुनकर राजगुरू ने हंसते हुए कहा—"राजन! ब्राह्मण ने तुम्हें आशीर्वाद ही दिया है, शाप नहीं। आपके पैर में खारिश हो, इसका अर्थ है आप राज्य का दौरा करते रहें। प्रजा का दुख-सुख जानते रहें। निश्चित है, आपके दौरे होंगे तो आलसी और कामचोर दरबारियों की नींद हराम होगी ही। इसी से राज्य की खुशहाली बढ़ेगी। प्रजा का दुख दूर होगा।"

कृष्णानंद यह सुनकर मुस्करा उठे। अब उनके चेहरे पर संतोष की झलक थी।

आजाद मंजिल (अपर फ्लैट),
मारफ गंज, गया (बिहार) 823001

# घड़ियाल का ब्याह

(10)

—डा. वीरेन्द्र शर्मा

बहुत समय पहले की बात है। सिंहलद्वीप की एक बड़ी नदी में एक घड़ियाल रहता था। उस नदी के किनारे पर उसका मित्र गीदड़ रहा करता था। एक दिन गीदड़ ने देखा कि नदी के दूसरे किनारे पर एक मरा हुआ हाथी पड़ा है। गीदड़ ने उसे देखा तो उसके मुंह में पानी भर आया। पानी के पास आकर उसने जोर से आवाज़ लगाई—"ओ मेरे मित्र घड़ियाल। पानी के नीचे से ऊपर निकल कर आओ।"

आवाज़ सुनकर घड़ियाल किनारे पर चला आया। उसे देखते ही गीदड़ ने कहा—"अरे भाई क्या हाल चाल है? क्या अभी भी अकेले ही हो? अकेले कैसे रहते हो? ब्याह क्यों नहीं कर लेते? अगर तुम कहो तो मैं तुम्हारा ब्याह करा सकता हूं। मैं तुम्हारे लिए एक बढ़िया पत्नी खोजकर ला दूंगा।"

घड़ियाल ने उत्तर दिया—"तुम मेरे सच्चे मित्र हो। फिर नेकी और पूछ-पूछ। शुभ काम में देरी काहे की? अगर तुम मुझे पत्नी दिला दोगे तो मैं जीवन भर तुम्हारा एहसान मानूंगा।" गीदड़ बोला—"ठीक है। मगर एक कठिनाई है। मुझे तुम्हारे लिए पत्नी की खोज करने दूसरे किनारे पर जाना होगा। लेकिन समस्या यह है कि मैं उस पार जाऊं तो जाऊं कैसे।"

घड़ियाल ने कहा—"अरे यह भी कोई बात है, जब तुम मेरी सहायता करोगे, मेरे लिए पत्नी की खोज करोगे, तो क्या मैं तुम्हें नदी के उस पार भी नहीं पहुंचा सकता? भला यह भी खूब रही।"

गीदड़ बोला— "अगर यही बात है तो अच्छे काम में देरी क्यों? मुझे नदी के पार पहुंचा दो। मैं इधर-उधर ढूंढकर तुम्हें अच्छी-सी पत्नी ला दूंगा और वापस लौट आऊंगा। और हां, एक बात याद रखना। हमारी इस बातचीत के बारे में किसी को भी नहीं बताना।"

घड़ियाल ने गीदड़ को अपनी पीठ पर चढ़ा दिया और तैर कर उसे दूसरे किनारे पर उतार दिया। फिर वह अपनी जगह, पानी में लौट आया।

गीदड़ ने पूरे दिन खूब मजे से हाथी का मांस खाया। शाम होते ही नदी के किनारे आकर उसने घड़ियाल को आवाज़ लगाई—"अरे मित्र !" सुनते ही घड़ियाल पानी से बाहर आया और पूछने लगा—"बोलो, क्या तुम्हें मेरे लिए कोई पत्नी मिली?"

गीदड़ ने उत्तर दिया—"मित्र, पत्नी तो मिली है लेकिन अभी मामला पक्का नहीं हुआ। लगता है कि मुझे कल फिर वहीं जाना होगा। आज मुझे वापस ले चलो।"

घड़ियाल गीदड़ को अपनी पीठ पर चढ़ाकर लौटा लाया। दूसरे दिन सुबह होते ही गीदड़ फिर नदी के किनारे आ गया और मित्र को आवाज़ दी। आवाज़ सुनते ही घड़ियाल पानी से बाहर आ गया। गीदड़ ने कहा—"आज मुझे दूसरे किनारे जाकर ब्याह का मामला तय करना है। इसलिए मुझे तुरंत उस पार जाकर लौटना होगा। घड़ियाल ने गीदड़ को पीठ पर चढ़ाकर नदी के पार छोड़ दिया।



गीदड़ आज भी पूरे दिन हाथी का मांस खाता रहा। उसे समय का भी ध्यान नहीं रहा और इस तरह रात घिर आई। वह दौड़कर हांफता हुआ किनारे आया और चिल्ला चिल्लाकर पुकारने लगा–"मेरे मित्र।"

घड़ियाल तुरंत बाहर आया और पूछने लगा–"पत्नी मिली?"

गीदड़ ने उत्तर दिया–"हां, हां, मिली। लेकिन उसे बुलाने के लिए मुझे कल फिर जाना होगा।"

घड़ियाल ने गीदड़ को दूसरे किनारे पर पहुंचा दिया।

अगले दिन फिर सुबह होते ही गीदड़ नदी के किनारे आ पहुंचा और घड़ियाल को बुलाकर कहने लगा–"आज तो तुम्हारे लिए पत्नी लानी ही है, मुझे दूसरे किनारे पर जल्दी पहुंचा दो।" और घड़ियाल ने गीदड़ को दूसरे किनारे पहुंचा दिया।

हाथी का मांस खाते-खाते समय व्यतीत हो रहा था। शाम हो गई। रात घिरने लगी। गीदड़ दौड़ता हांफता, थका-थका-सा किनारे पर आकर घड़ियाल को पुकार कर कहने लगा–"बड़े बेकार लोग हैं ये सब। किसी का भी विश्वास नहीं किया जा सकता। कोई भी वचन का पक्का नहीं है। मेरा पूरा दिन ही बेकार कर दिया–कभी यहां भेजा, कभी वहां। कल फिर मुझे वापस बुलाया है। आज मुझे घर वापस जाना होगा। कल तुम्हें पत्नी अवश्य मिल जाएगी।

घड़ियाल ने गीदड को वापस पहुंचा दिया। जब गीदड़, ऊंचे, सुरक्षित स्थान पर आ गया तो उसने घड़ियाल से कहा–"अरे पगले घड़ियाल! कहां तो मैं सामान्य-सा गीदड़ और कहां तू पानी का राजा? क्या जमीन पर रहने वाला मैं तुम जैसे, पानी में रहने वाले प्राणी के लिए पत्नी खोजकर ला सकता हूं? मैं तो दूसरे किनारे, एक मरे हाथी का मांस खाने जाता था। आज वह पूरी तरह खत्म हो गया। अब दुबारा मैं नहीं जाऊंगा। तुम निरे बुद्धू हो।" ऐसा कहकर गीदड़ नौ-दो-ग्यारह हो गया।

909, सेक्टर- 12,
रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली- 22

# चतुर खरगोश

–सुरजीत

एक बार की बात है कि एक खरगोश पानी पीने के लिए एक नदी पर पहुंचा। अभी वह पानी पी ही रहा था कि एक शेर भी पानी पीने वहां आ पहुंचा। खरगोश ने शेर को देखा, तो वहां से भाग खड़ा हुआ। शेर भी उसके पीछे दौड़ा। अब खरगोश और शेर दोनों आगे-पीछे दौड़ रहे थे। खरगोश अपनी जान जाने के डर से भाग रहा था, और शेर उस खरगोश का शिकार कर लेना चाहता था। खरगोश यों तो सिर पर पांव रखकर भाग रहा था, लेकिन उसे अपने बचाव की कोई राह दिखाई नहीं देती थी। अचानक उसे अपने सामने एक गुफा दिखाई दी और वह झट उसमें घुस गया। गुफा का मुंह छोटा था, अतः शेर गुफा के दरवाजे पर खड़ा हो गया और खरगोश के आने की प्रतीक्षा करने लगा।

यह गुफा, वास्तव में, एक गीदड़ का घर था और उस समय गीदड़ गुफा के अंदर एक कोने में लेटा दोपहर की नींद के मजे ले रहा था। खरगोश के आने की आहट से उसकी आंख खुल गई। उसने खरगोश को देखा और अपने जी में कहने लगा– "वाह, वाह! बड़ा भाग्यवान हूं मैं भी। कैसा पला-पलाया खरगोश सीधा मेरे घर में चला आया है। खूब मजे से खाऊंगा इसे।"

गीदड़ को देखकर खरगोश घबरा गया। अगर वह आगे बढ़े तो गीदड़ उसे खा जाएगा और वापस जाए तो शेर का ग्रास बन जाएगा।

सहसा उसे एक तरकीब सूझी। वह आगे बढ़ा और गीदड़ के कदमों में जा गिरा– "महाराज! जंगल के सभी जानवरों ने मुझे आपकी सेवा में यह सूचना देने के लिए भेजा है कि



हम सबने, आपको, अपना राजा बनाने का निश्चय किया है।"

गीदड़ खरगोश की यह बात सुनकर हैरान हुआ और सम्भल कर बैठ गया। खरगोश फिर कहने लगा—"महाराज! हमने हाथी के बारे में सोचा। यद्यपि वह बहुत बड़ा जानवर है, तथापि चतुर नहीं है।"

"फिर महाराज! हमने चीते के बारे में सोचा, पर उसका कोई भरोसा नहीं। वह बहुत तेज स्वभाव है।"

महाराज! हमने शेर के बारे में सोचा, पर वह बहुत गुस्से वाला है।"

"महाराज! हमने रीछ के बारे में सोचा, पर उसके इतने लम्बे-लम्बे बाल हैं और उसे हर समय बुखार चढ़ा रहता है।"

"इसलिए आखिर हम सबने आपके बारे में निर्णय कर लिया। क्योंकि आप सबसे अधिक चतुर हैं। हाथी, चीता, रीछ और शेर भी आपकी चतुराई के सामने कोई महत्व नहीं रखते।"

गीदड़ ने जब खरगोश की यह बातें सुनीं तो बहुत प्रसन्न हुआ। वह सोचने लगा—'इस संसार में या तो राजा का बेटा राजा बन सकता है, या जिसका सितारा ऊंचा हो वह। निश्चय ही मेरा सितारा ऊंचा है कि जंगल के जानवरों ने मुझे अपना राजा बनाने का निश्चय किया है। मैं कभी सोच भी नहीं सकता था कि किसी दिन जंगल का राज मुझे मिल जाएगा।'

यह सोचते हुए गीदड़ एक शान के साथ मुस्कुराया और खरगोश से कहने लगा—"बहुत अच्छा! मुझे जंगल के जानवरों का यह निर्णय स्वीकार है। आओ, उनके पास चलें। तुम आगे-आगे चलो। मैं पीछे-पीछे आता हूं।" लेकिन खरगोश ने तुरंत कहा—"महाराज आप हमारे राजा हैं। मैं आपके आगे-आगे चलने की गुस्ताखी कैसे कर सकता हूं।"

गीदड़, खरगोश की इस प्रकार वफादारी प्रकट करने से प्रसन्न हुआ और कहने लगा—"तुम बहुत समझदार भी हो और वफादार भी। तुम्हारी बातों ने मेरा दिल खुश कर दिया है। राजा बनने के बाद में मैं तुम्हें अपना मंत्री बनाऊंगा।"

यह कहते हुए गीदड़ गुफा से बाहर निकला।

शेर तो गुफा के बाहर प्रतीक्षा में खड़ा ही था। गीदड़ के बाहर निकलते ही शेर ने एक छलांग लगाई और गीदड़ को अपने जबड़ों में दबोच कर जंगल की ओर भाग गया।

खरगोश वापस गुफा के अंदर गया और आराम से लेट गया। उसे एक बना बनाया घर जो मिल गया था।

सी- 34, सुदर्शन पार्क
दिल्ली- 15



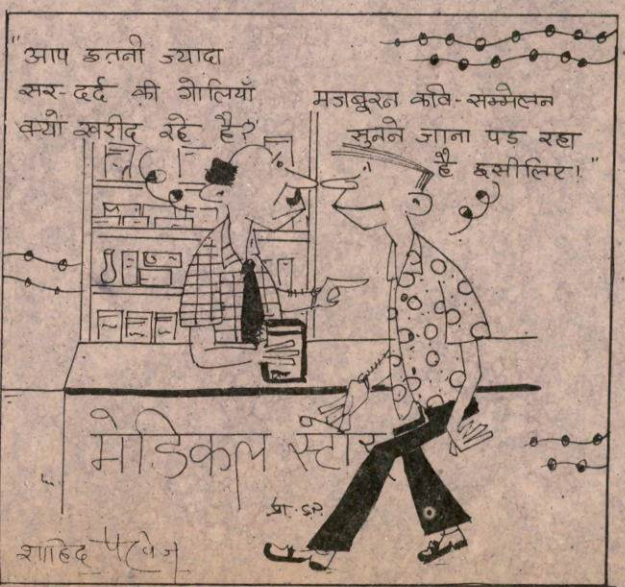
## वर्षा आई

—संजय द्विवेदी

वर्षा आई, वर्षा आई,
टर्र टर्र मेढ़क को लाई।
हरियाली मन भाने वाली,
घिरी घटाएं काली-काली।
वर्षा रानी है मतवाली,
दिल को बहुत लुभाने वाली।
मेघाच्छादित अब हुआ गगन है,
खट्टा मीठा सबका मन है।
वर्षा आई, वर्षा आई,
मैं तो कहता, आफत आई।

1, महेन्द्र सिंह कालोनी,
गांधी नगर,
बस्ती (उ.प्र.) 272001


भई यह जंगल धड़ाधड़ क्यों काटे जा रहे हैं।
PARVEZ FEATURES
विशदर, मंत्री जी का आगमन होने जा रहा है।
मंत्री जी के आगमन और जंगलो के काटे जाने से उनका क्या— सम्बन्ध।
है क्यो नही। वह जो वृक्षा रोपण करने वाले है।
PARVEZ FEATURES


"आप इतनी ज्यादा सर-दर्द की गोलियाँ क्यों खरीद रहे है?
मजबूरन कवि-सम्मेलन सुनने जाना पड़ रहा है इसीलिए।"
मेडिकल स्टो
शाहिद परवेज

पुण्य तिथि (31 जुलाई) पर

## आवाज़ का जादूगर :

# मोहम्मद रफ़ी

-सुरेन्द्र श्रीवास्तव



एक बालक, अपने मोहल्ले में, सुबह-सुबह गाकर भीख मांगने वाले भिखारी के गाने और आवाज़ से, इतना प्रभावित होता था कि वह प्रतिदिन आने वाले, उस फकीर के पीछे-पीछे बहुत दूर तक जाता था। कुछ वर्ष बाद वह बालक भी गायक बना और उसके पीछे-पीछे थे उसके करोड़ों दीवाने। वह गायक था—मोहम्मद रफ़ी।

आज से कोई नौ वर्ष पूर्व 31 जुलाई 1980 के दिन आवाज के जादूगर 'मोहम्मद रफी' एकाएक हमेशा के लिए, हमसे बिछड़ गए थे। वह फिल्मी और गैर फिल्मी गीतों का कभी समाप्त न होने वाला भंडार छोड़ गए हैं। उन्होंने अपने जीवनकाल में लगभग 26,000 गीत रिकार्ड करवाए थे, जिनमें से अधिकांश गीत हिंदी फिल्मों के थे।

रेडियो पर आज भी मोहम्मद रफ़ी के गीत बजते हैं और उसी शान से बजते हैं। यही नहीं, अब तो श्रोता उनके सुरीले, मधुर लोच वाले गीत सुनने को और लालायित रहते हैं। इतिहास गवाह रहेगा कि 1980 में उनके हमारे बीच से चले जाने के बाद उनकी कमी आज तक पूरी नहीं हो सकी है और भविष्य में उन जैसा गायक कब मिलेगा कहना कठिन है।

मोहम्मद रफ़ी का जन्म पंजाब के कोटला सुल्तान सिंह (जिला अमृतसर) गांव में 24 दिसम्बर 1924 को हुआ था। उन्हें बचपन से ही संगीत का शौक उत्पन्न हो गया था। उनके एक बड़े भाई हमीद संगीत के बड़े प्रेमी थे। वह सप्ताह में एक बार गाने बजाने की महफ़िल जरूर जमाते। उन महफ़िलों में कई प्रसिद्ध गायक आया करते थे।

एक बार ऐसी ही एक महफ़िल में शास्त्रीय गायक उस्ताद बड़े गुलाम अली खां ने बालक मोहम्मद रफ़ी से कुछ सुनाने को कहा। रफी ने एक पंजाबी गीत गाकर उन्हें सुनाया—"की जाणां वे मैं तुवाड्डे दिल दी।" गीत सुनते ही गुलाम अली ने प्रसन्नता से कहा—"हमीद, तुम्हारे भाई का गला तो वाकई बहुत अच्छा है। यदि वह

रियाज करे, तो एक दिन बहुत बड़ा सिंगर बनेगा।'' मात्र छः साल की उम्र में प्रशंसा पाने वाले बालक मोहम्मद रफ़ी ने आगे चलकर उस्ताद बड़े गुलाम अली खां की बात एकदम सत्य साबित कर दिखाई।

भाई हमीद ने मोहम्मद रफ़ी की ओर समुचित ध्यान दिया और उसे संगीत की जमकर शिक्षा दिलाई। रफ़ी साहब के गुरु थे उस्ताद बरकत अली, उस्ताद वाहिद खां तथा फ़िरोज़ निज़ामी (दिल्ली रेड़ियो स्टेशन के) इन उस्तादों के संग रहकर मोहम्मद ने संगीत की सभी बारीकियों को सीखा, आरोह-अवरोह का रियाज किया और इस प्रकार सोना आग में तप कर मुखर हो उठा।

मोहम्मद रफ़ी को संगीत का नशा हो गया। वह हरदम संगीत में ही लगे रहते। धीरे-धीरे उनकी प्रतिभा निखरने लगी। एक घटना तब की है जब वह मात्र चौदह वर्ष के थे। किस्सा लाहौर का है। वहां एक संगीत सम्मेलन आयोजित किया गया था। उस समय के सर्वाधिक प्रसिद्ध गायक के.एल. सहगल उसमें आने वाले थे, इसलिए हजारों की संख्या में लोग उन्हें सुनने के लिए एकत्र थे।

कार्यक्रम शुरू हुआ, लेकिन तभी माइक फेल हो गया। अब क्या हो? संयोजक बड़े पशोपेश में पड़े। तभी एकाएक उन्हें न जाने क्या सूझा कि उन्होंने बालक मोहम्मद रफ़ी को गाने के लिए प्रस्तुत कर दिया। मोहम्मद रफ़ी गाने लगे। लोगों के लिए यह आवाज एक नया अनुभव थी। रफ़ी तन्मय होकर गा रहे थे और जो श्रोता कुछ समय पूर्व हो हल्ला कर रहे थे, वे अब एकदम शांत होकर इस बालक को सुन रहे थे। यह एक प्रकार का चमत्कार ही था।

मोहम्मद रफ़ी का गीत समाप्त होते ही चारों ओर तालियों की गड़गड़ाहट गूंज रही थी। के.एल. सहगल तो इस बालक से इतने प्रभावित हुए कि उसे सीने से लगा लिया और भविष्य में सफलता के लिए आशीर्वाद दिया। सहगल जैसे महान स्वर सम्राट का आशीर्वाद फलीभूत हुआ और रफ़ी भविष्य में सफलता की बुलंदियों पर पहुंचे।

अब मोहम्मद रफ़ी ने फिल्मों में भाग्य आज़माने की सोची। संगीतकार श्याम सुंदर के संगीत में पंजाबी फिल्म 'गुल बलोच' में उन्होंने गीत गाए। 1941 में बनी इस फिल्म का एक गीत–'सोनिए नी हीरिए नी' काफ़ी लोकप्रिय हुआ और मोहम्मद रफ़ी लोगों में प्रसिद्ध होने लगे।

इसके बाद रफ़ी साहब लाहौर से बम्बई चले आए। जहां उन्होंने हिन्द कम्पनी की 1945 में बनी फिल्म 'गांव की गोरी' के लिए गीत गाया।

किंतु प्रसिद्धी उन्हें 1947 में फिल्म जुगनू (दिलीप कुमार और नूरजहां, संगीतकार फ़िरोज़ निज़ामी) के गीत ''यहां बदला वफ़ा का बेवफ़ाई के सिवा'' से मिली। इसी बीच 1948 में, गांधीजी की मृत्यु के बाद लगभग 14 मिनट का प्रसिद्ध गीत–'सुनो-सुनो ए दुनिया वालों, बापू की ये अमर कहानी' गाया। इस गीत ने रफ़ी साहब को अप्रतिम सफलता दिलाई।

अब तो मोहम्मद रफ़ी पूरी तरह से स्थापित हो गए। फिल्मी दुनिया में एक नए गायक का उदय हो चुका था जिसे आगे जाकर एक चमकता सितारा बनना था। 1945 में प्रसिद्ध फिल्म शाहजहां के एक गीत–रुही-रुही रुही मेरे... का गीत उन्होंने के.एल. सहगल के साथ गाकर उनसे शाबाशी और आशीर्वाद प्राप्त किया। इन्हीं दिनों रफ़ी ने 'लैला मंजनू' 'जुगनू' और 'समाज को बदल डालो' फिल्मों में छोटी-छोटी भूमिकाएं भी की थीं।

एक बार प्रकाश में आने के बाद तो रफ़ी फिल्मी दुनिया के लिए एक आवश्यकता बन गए। उन्होंने उस समय के सभी प्रमुख संगीतकारों के लिए गाया। तब संगीतकार व गायक संगीत को साधना के रूप में लेते थे। मोहम्मद रफ़ी ने भी उसी परिपाटी का पालन किया और गीत गायन को साधना के रूप में लिया। इसीलिए तो उनकी विविधता, उनके गीतों की गम्भीरता, उनका रस, दर्शनीय है।

रफ़ी ने सैकड़ों गैर फिल्मी गीत भी गाए और भजन भी। रफ़ी साहब ने शास्त्रीय, अर्द्ध शास्त्रीय सीधे-सादे गीत तथा पाश्चात्य संगीत, हर रंग के गीत गाए और बाखूबी गाए। वो गीत चाहे हास्य कलाकार जैसे महमूद या जानी वाकर के लिए गाए हों या शम्मी कपूर के लिए, दिलीप कुमार के लिए या देवानंद के लिए, सब के लिए गीत उस गायक ने खूब गाए।

किसी भी कलाकार के जीवन में उतार-चढ़ाव आते ही हैं किंतु रफ़ी साहब के जीवन में चढ़ाव ही आया। वे 1947 से 1980 तक फिल्म संगीत पर पूरी तरह छाए रहे।

रफ़ी साहब महान गायक के साथ-साथ महान इंसान भी थे। वो प्रतिमाह हजारों रुपये दान के रूप में दिया करते थे। कहा जाता है कि एक बार वो कार से कहीं जा रहे थे। कार में किसी नए गायक का गाना बज रहा था। कार में सवार किसी ने रफ़ी साहब को कहा कि इस गायक की आवाज कच्ची है। इस पर रफ़ी साहब ने कहा–"सुनो जब मैं फिल्मी दुनिया में आया था मैं भी कच्चा था। वक्त के साथ-साथ इंसान सीखता है।"

रफ़ी साहब आज हमारे बीच नहीं हैं। लेकिन अपने गीतों से संगीत की जो सुरभि वे बिखेर गए हैं, वह हमेशा हम सबको अभिभूत करती रहेगी और हम उस महान गायक को हमेशा याद करते रहेंगे।

केसोराम काटन मिल्स
42 गार्डेन रीच रोड
कलकत्ता- 700024



—मारग्रेट बोरीसन

रिम झिम-रिमझिम पानी बरसा,
चम-चमाचम बिजली कड़की।
'पुट्टी' का दिल डर से धड़का,
देखा, बिजली पानी का झगड़ा।

टुकुर-टुकुर ताक रहे,
खुसुर-फुसुर बतिया रहे।
बूंदों को हाथों में लेकर,
खेलने को ललचा रहे।

बरसाती और बूट पहनकर,
सर पर छाता लाल तानकर।
छम-छम-छम-छम कूद मचाने,
मम्मी को मना रहे।

बिजली फिर चमकी दोबारा,
'पुट्टी' का उत्सव हारा।
मम्मी के आंचल में छिपकर,
आंख मूंद ली 'पुट्टी' ने डरकर।

23/4, स्टेनली रोड,
इलाहाबाद (उ.प्र.)



—अशोक आनन

खूब मनाई छुट्टियां,
खेले तुमने खेल।
करो पढ़ाई मन लगाकर,
होगे वरना फेल।

सोचो मन में श्रेणी अच्छी,
लाकर होना पास।
गया समय, तुम उसे भुलाओ,
यही समय है खास।

पल कोई भी व्यर्थ न जाए,
करनी तुम्हें पढ़ाई।
उम्र कभी न होगी वापस,
यूं गर इसे गंवाई।

जीवन में कुछ बनना है तो,
मूल्य समय का सीखो,
गौतम, गांधी, नेहरूजी के,
जीवन से कुछ सीखो !

नया बाजार मकसी
जिला–शाजापुर (म.प्र.) 465106

# स्कूल-बस

–कीर्ति प्रमोद

हार्न बजाती खड़ी-खड़ी,
'पीं पीं' करती घड़ी-घड़ी।

मुझसे ज्यादा इसको जल्दी,
जैसे बैठा फौरन चल दी।

अजब बहुत स्कूल की बस,
करना सफर कई बरस।

मैं भी जब कालेज जाऊंगा,
अपनी साइकिल ले आऊंगा।

बस की बात न मेरे बस की,
बात है बांकी आठ बरस की।

जे- 11/103, राजौरी गार्डन
नई दिल्ली- 110027

# मिठाई खाई

–चन्द्रपाल सिंह यादव 'मयंक'

बहुत मिठाई खाई,
कीड़ा लगा दांत में, भाई।
उसने मुझे रात भर काटा,
किया दांत में सैर-सपाटा।
इतना काटा, इतना काटा–
दैया ! मेरी आफत आई।
मैंने रो-रो रात बिताई।
दैया ! दैया ! खूब मचाई।
पकड़े कान, कसम यह खाई–
खाऊंगा अब नहीं मिठाई।
तुम मत अधिक, मिठाई खाना,
वरना पड़ेगा फिर पछताना।
रोना-धोना, शोर मचाना,
इससे-उससे हंसी कराना।

261, फेथफुलगंज कैंट
कानपुर- 208004

## पहेलियों के उत्तर

1. नीबू, 2. मोटर, 3. कैरमबोर्ड, 4. पवन, 5. तुलसीदास, 6. शिवजी, 7. महाराणा प्रताप, 8. महाकवि कालीदास।

## वर्ग पहेली के उत्तर

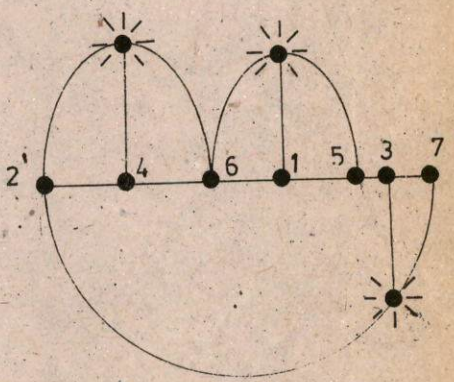
### ऊपर से नीचे

1. हाइड्रोकार्बन, 3. नीला, 4. अवकारक, 6. मिश्रण, 7. तीन, 9. लवण, 11. कोणीय, 13. नमकीन, 14. जिंदा, 15. ध्रुव, 16. संयोग, 17. अम्ल।

### बाएं से दाएं–

1. हाइड्रोजन, 2. इलेक्ट्रान, 5. कार्य, 6. मिलावट, 8. काजल, 10. नमनकोण, 12. वन, 14. जिंक, 15. ध्रुवीय, 17. अवश्य, 18. आयोडीन, 19. गन्ध।

## माथा पच्ची का उत्तर




## फलों के नाम

1. आम 2. अनानास 3. पपीता 4. खरबूजा 5. अमरूद 6. केला 7. सेब 8. नाशपाती 9. लीची

# भारत विकास की ओर

—साधना श्रीवास्तव

पापा अभी घर में ही घुसे थे कि संजू उनके पास आया और बोला—"पापा ! पापा सप्ताह बाद हमारे कालेज में एक निबंध प्रतियोगिता है, सर जी ने मुझे भी भाग लेने को कहा है। मुझे तैयारी करवा दीजिए।" पापा ने कहा—"हां ! हां ! क्यों नहीं? अभी चाय पी ले फिर तुम्हें निबंध भी तैयार करवा देंगे।

चाय पीने के बाद पापा ने संजू को पास बुलाया और पूछा—"हां, तो बेटे ! अब बताओ तुम्हें किस विषय पर निबंध लिखना है?"

**संजू :** पापा, देश में अब तक हुई प्रगति पर।

**पापा :** तो ठीक है, चलो लिखो। सबसे पहले हम उन चीज़ों के उत्पादन की बात करते हैं जिनका सम्बंध हमारे खाने से है मेरा मतलब चावल, गेहूं, मक्का, ज्वार, बाजरा, चना व दालों से है। बेटा हमारे देश में कुल खाद्यानों के उत्पादन में काफी वृद्धि हुई है। 1950-51 में कुल खाद्यान्नों की पैदावार 508 लाख टन थी जो 1987-88 में 1384 लाख टन के करीब हो गई। तथा अब मार्च 1989 में 1710 लाख टन से अधिक अनाज हुआ। पिछले दो वर्षों में चावल बाहर से नहीं मंगाया गया। दूध का उत्पादन 1987-88 में लगभग 4½ करोड़ टन था वह मार्च 1990 तक 5 करोड़ टन से अधिक होगा।

**संजू :** पापा खेती के लिए पानी की आवश्यकता होती है तो यह बताइए कि हमारे देश में सिंचाई के लिए क्या-क्या हुआ है?

**पापा :** यह तुमने बहुत अच्छी बात पूछी है। खेती के लिए पानी की कमी न रहे उसके लिए सरकार ने काफी कुछ किया है और कर रही है।

देश में सिंचाई की क्षमता में भी वृद्धि हुई है। 1950-51 में देश में कुल 226 लाख हेक्टेयर भूमि में सिंचाई होती थी। 1984-85 के अंत तक 675 लाख हेक्टेयर भूमि में सिंचाई होने लगी। सातवीं योजना में 1985-90 में 129 लाख हेक्टेयर अतिरिक्त भूमि सींचने की क्षमता हो जाएगी।

**संजू :** पापा, अब बिजली के उत्पादन के बारे में कुछ बताइए?

**पापा :** बिजली के उत्पादन में हमारे देश ने काफी उन्नति की है। जब 1947 में देश आजाद हुआ था। तब बिजली का उत्पादन सिर्फ 1200 मेगावाट था। 1988-89 में यह बढ़कर लगभग 59000 मेगावाट हो गई। मार्च 1995 तक यह बढ़कर 97000 मेगावाट हो जाएगी। और बेटे ! सरकार ने गांवों में बिजली पहुंचाने की ओर काफी ध्यान दिया है। 1951 में करीब 3,061 गांवों में ही बिजली थी जबकि मार्च 1989 तक करीब साढ़े चार लाख से भी अधिक गांवों में बिजली पहुंच गई है। 6 राज्य ऐसे हैं जिनमें सभी गांवों में बिजली पहुंच गई है।

**संजू :** पापा मैंने पढ़ा था कि हमारे देश में काफी संख्या में लोग पहले चेचक प्लेग, आदि जैसी महामारियों से मर जाते थे। तपेदिक का नाम मौत का नाम बनकर आता था।

**पापा :** हां बेटे ! तुमने ठीक पढ़ा है। सरकार ने पिछले 40 वर्षों में इन महामारियों पर काबू पाने के लिए अनेक उपाए किए हैं तथा अब उन महामारियों पर प्रायः काबू पा लिया गया। तपेदिक का अब इलाज सुलभ है। 1967 से देश में प्लेग के कारण कोई मौत नहीं हुई है। चेचक जो एक भयानक बीमारी थी। जुलाई 1975 से उसका देश में नामोनिशान नहीं है। मलेरिया, हैजा जैसी बीमारियों पर जो पहले काफी लोगों की जान ले लेते थे अब काफी कम है। यही नहीं, लोगों के मरने की दर में भी काफी कमी आई है। वर्ष 1949-50 में यह दर 27.4 प्रति हजार थी परंतु 1986 में यह घटकर प्रति हजार 11.1 रह गई है। इन 40 वर्षों में देश में डाक्टरों, नर्सों व अस्पतालों में बिस्तरों की संख्या में काफी बढ़ोत्तरी हुई है। पहली योजना से लेकर अब तक डाक्टरों व अस्पतालों में बिस्तरों की संख्या में ढाई गुना व नर्सों की संख्या में 6 गुना की बढ़ोत्तरी हुई। 1987 में पंजीकृत डाक्टरों की संख्या 3.25 लाख

थी तथा 1986-87 में अस्पतालों में बिस्तरों की संख्या 5.59 लाख थी। सरकार ने गांव के लोगों का स्वास्थ्य सुधारने के लिए वहां पर प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र खोले हैं जो पी.एच.सी. के नाम से प्रसिद्ध हैं। जून 1988 में देश में 16.454 प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र थे, 5.65 लाख प्रशिक्षित दाइयां थीं व 3.94 लाख हेल्थ गाइड थे। यही नहीं, देश में मेडिकल शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए मेडिकल कालेजों की संख्या भी बढ़ाई गई है। 1950-51 में केवल 30 मेडिकल कालेज थे, परंतु अब 125 मेडिकल कालेज हैं।

**संजू :** गांवों में विकास के लिए सरकार क्या कर रही है?

**पापा :** बेटा गांव तो हमारे देश की आत्मा है। उनके विकास के लिए सरकार ने अनेक कार्यक्रम चलाए हैं। 1950 के प्रारम्भिक वर्षों में ही सामुदायिक विकास कार्यक्रम के अधीन गांवों में विकास केन्द्रों का जाल बिछाया गया। 1970-71 में गांवों को सूखे के समय राहत पहुंचाने की दृष्टि से ग्रामीण कार्यक्रम चलाया। 1977 में काम के बदले अनाज कार्यक्रम चलाया तथा 1980 में राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार कार्यक्रम रखा गया। 1976-77 में समेकित ग्रामीण विकास कार्यक्रम चलाया गया। 1983 में उन गांव वालों के लिए जिनके पास भूमि नहीं थी रोजगार गारंटी का कार्यक्रम चलाया।

इसी वर्ष अप्रैल (1989) में सरकार ने गांव में रहने वालों को काफी रोजगार दिलाने के उद्देश्य से एक योजना की घोषणा की है उसे जवाहर रोजगार योजना कहते हैं। इस कार्यक्रम को लागू करने के लिए गांवों की पंचायतों को काफी धन दिया जाएगा। ऐसी आशा है कि उसे 4 हजार की जनसंख्या वाली प्रत्येक पंचायत को 80 हजार से एक लाख रुपये मिलेंगे। इसमें महिलाओं के लिए 30 प्रतिशत रोजगार सुरक्षित किया गया है। इसमें ऐसी व्यवस्था की गई है कि इस योजना का लाभ गांववालों को सीधा मिल सके। इस योजना जिसमें इस वित्तीय वर्ष में 21 अरब रुपये खर्च होंगे, से उन 440 लाख परिवारों को लाभ पहुंचेगा जो अभी गरीबी की रेखा से नीचे हैं। गांवों में पंचायत को बढ़ावा देने हेतु संविधान में संशोधन करने की बात सरकार सोच रही है।

**संजू :** पापा ! क्या सरकार ने कुछ ऐसा भी किया है जिससे शिक्षा के साथ-साथ मनोरंजन भी है?

**पापा :** हां, बेटे इसके लिए सरकार ने रेडियो व दूरदर्शन जैसे संचार माध्यमों का विस्तार किया है। हमारे देश में 1947 में केवल 6 रेडियो स्टेशन थे, परंतु अब उनकी संख्या बढ़कर 94 हो गई है। रेडियो के कार्यक्रम देश की 82.93 प्रतिशत जनता सुनती है। हमारे देश में दूरदर्शन की शुरुआत 1959 में प्रयोगात्मक में हुई थी। आज देश में दूरदर्शन के 400 ट्रांसमीटर हैं तथा देश की 80 प्रतिशत जनता उसके कार्यक्रमों को देखती है।

**संजू :** पापा ! दादी कहती हैं कि उनके जमाने में कल-कारखाने बहुत कम थे। छोटी-से-छोटी चीज़ के लिए विदेशों का मुंह ताकना पड़ता था।

**पापा :** बेटा ! दादी कहती तो ठीक ही हैं, देश स्वतंत्र होने के बाद सरकार ने उस ओर काफी ध्यान दिया है। सरकार के प्रयासों के फलस्वरूप इस दिशा में काफी उन्नति हुई है। 1951 में जहां लोहा व इस्पात बनाने के मात्र 2 कारखाने थे, अब देश में सात ऐसे कारखाने हैं जिनमें लोहा व इस्पात बनता है जिन उद्योगों का 1951 में नामोनिशान नहीं था वे अब न केवल स्थापित ही हुए है बल्कि उनका विकास भी काफी हो गया है उनमें खेती के लिए ट्रैक्टर खाद इलेक्ट्रानिक आदि के उद्योग प्रमुख हैं। अब कपड़े के कारखानों में सिर्फ जूट व सूत के कपड़े ही नहीं बनते तरह-तरह के कृत्रिम रेशे भी तैयार होते हैं। इंजीनियरिंग उद्योग इतना बढ़ गया है कि उनमें बिजली, रेल, सड़क और संचार आदि के जरूरत के लिए लगभग सारे उपकरण बनने लगे हैं।

यही नहीं बेटा। देश इस स्थिति में पहुंच गया है कि विदेशों में उद्योग लगाने के लिए हम अपनी तकनीकी सलाह उनको दे सकते हैं। तकनीशियनों को भेज सकते हैं।

# पुराना किला

प्रस्तुति–सुप्रिय

दिल्ली में चिड़ियाघर और प्रगति मैदान के बीच स्थित है पुराना किला। इंडिया गेट से केवल दो किलोमीटर दूर यह किला हुमायूं (1530—40 और 1555—1556) तथा शेरशाह सूरी (1540-45) ने अपने-अपने समय में बनवाया। किंतु यह कहना कठिन है कि किले का कौन-कौन सा भाग इन दोनों ने बनाया। किंवदंती है कि किले की दीवारें हुमायूं ने बनवाई जबकि अंदर की इमारतें शेरशाह सूरी ने बनवाई। एक किंवदंती यह भी है कि इस स्थान पर महाभारत काल में पांडवों की राजधानी इन्द्रप्रस्थ थी। इस किले में खुदाई करने पर मौर्य काल (320 ईसा पूर्व) से लेकर मुगल काल तक की वस्तुएं प्राप्त हुई हैं। ये सभी वस्तुएं किले के प्रवेश द्वार के दाहिनी ओर बने एक संग्रहालय में देखी जा सकती हैं।

हुमायूं ने किले की दीवारें और उसके आसपास एक शहर बनाया जिसे दीनपनाह कहा जाता था। इस शहर के लिए निर्माण सामग्री फिरोज़शाह तुगलक (1351—88) के द्वारा बनाए गए शहर फिरोज़ाबाद (आज का कोटला फिरोज़शाह) से प्राप्त की गयी। यह स्थान पुराना किला से लगभग कोई दो किलोमीटर उत्तर की ओर है। इससे पूर्व खिलजी काल और तुगलक काल में बनाए गए दो शहरों सीरी और जहांपनाह को उजाड़ कर फिरोज़ तुगलक ने फ़िरोज़ाबाद बनाया था। ऐसा प्रतीत होता है कि शेरशाह ने अपनी असामयिक मृत्यु के कारण कुछ अधिक निर्माण कार्य नहीं किया। उस समय की केवल दो इमारतें-शेरमंडल और एक मस्जिद जिसे किला-ए-कोहना के नाम से पुकारा जाता ही यहां प्राप्य है।

आयताकार आकार का यह किला लगभग एक मील के क्षेत्र में फैला हुआ है। इसकी पूर्वी और पश्चिमी दीवारें अन्य दो दीवारों के मुकाबले में अधिक लम्बी हैं। दीवारें पहाड़ी पत्थरों की बनी हैं और इनकी मोटाई 13 इंच है। किले के हर कोने पर एक बुर्ज बना है। किले के तीनों ओर चौड़ी और गहरी खाई बनी हुई थी, जबकि पूर्वी भाग पर यमुना नदी बहती थी। किले की एक यह भी बिशेषता है उसके तीन दरवाजे जो कि हिन्दू-मुस्लिम शैली का सुंदर मिश्रण है। दरवाजों पर छोटी-छोटी छतरियां बनी हैं ; जिन पर स्पष्ट रूप से हिन्दू प्रभाव झलकता है। किले के दक्षिणी दरवाजे को 'तलाकी दरवाजा' (जिसका अर्थ है—प्रवेश मना है) कहा जाता है। इस दरवाजे पर अंदर की तरफ सुंदर पच्चीकारी की गई है जिसमें एक व्यक्ति को शेर से लड़ता दिखाया गया है। ठीक इसी प्रकार से किले के दक्षिणी दरवाजे पर भी सुन्दर पच्चीकारी की गई है और यही दरवाजा आजकल किले का प्रवेशद्वार है। तलाकी दरवाजा दिल्ली के ऐतिहासिक इमारतों में एक अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

किले के अंदर केवल दो ही इमारतें हैं—शेरमंडल और किला-ए-कोहना नामक एक मस्जिद है। शेरमंडल अष्टकोण आकार की एक दुमंजिली इमारत है। इसे हुमायूं अपने पुस्तकालय के रूप में प्रयोग करता था। वह इसी इमारत की सीढ़ियों से फिसला और उसके सिर में गम्भीर चोट पहुंची जिसके कारण जनवरी 1556 में उसकी मृत्यु हो गई। आजकल यह इमारत दर्शकों के लिए बंद कर दी गई है।

किला-ए-कोहना मस्जिद सम्भवतः 1540 में शेरशाह सूरी द्वारा बनाई गई थी और यह हिन्दू और इस्लाम स्थापत्य कला का एक उत्कृष्ट नमूना है। यह मस्जिद आयताकार क्षेत्र में एक सौ 68 फीट लंबी, लगभग 45 फीट चौड़ी और 86 फीट ऊंची है। इसकी पश्चिमी दीवारों पर अच्छी नक्काशी की गई है। इसकी महराबों पर बहुत ही सुंदर नीले रंग की पच्चीकारी भी की गई है। जो कि लगभग 450 वर्ष बाद आज भी लगभग नई जैसी प्रतीत होती है। □

# कपीश

अनंत पै

मोहनदास • आलोक माथुर

साड़ियां बेचनेवाला जंगल में से गुज़र रहा था...

...कि छज्जू डाकू ने उसे ललकारा.

गठरी नीचे रखो. मेरी है.

क्या मतलब? यह मेरी है. मैं साड़ियां बेचने शहर जा रहा हूं!

छज्जू ने जेब से एक छुरा निकाला.

यह गठरी तेरी थी. जब मेरी नज़र इसपर पड़ी, वह मेरी हो गयी. समझे?

हां...

1641 © RANG REKHA FEATURES PVT. LTD.

मैं ग़रीब हूं, सरकार. कर्ज लिया है बहुत. मैं बरबाद हो जाऊंगा...

...और इस गठरी में सिर्फ साड़ियां हैं! आपके काम की नहीं!

तो क्या हुआ! इन्हें बेचकर मैं पैसा कमाऊंगा. अरे हां...

छज्जू के दिमाग में कुछ बात आयी.

देखो, पुलिस मेरे पीछे है. सारे रास्ते रोक रखे हैं उन्होंने. गठरी नीचे रखो. और एक साड़ी मुझे दे दो.

गठरी नीचे रखी गयी.

अब याद रहे, तुम्हें मेरे आगे-आगे चलना होगा। ऐसे पेश आओ, मानो तुम मेरे पति हो...

...ज़रा भी चूं-चां की तो मेरा छुरा आर-पार हो जायेगा!

और पुलिस को पता तक नहीं चलेगा कि मेरे हाथ में छुरा है!

सौदागर डर से कांप उठा! पर क्या कर सकता था बेचारा?

जंगल की सीमा के पास—

रुक जाओ, कौन हो तुम?

बोलो!

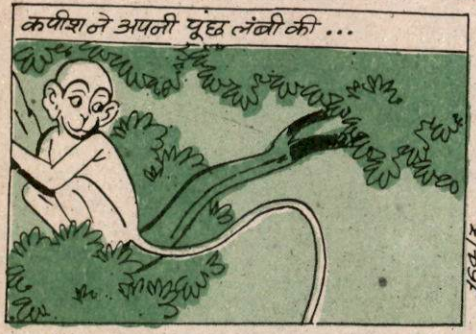
मैं... साड़ियों का सौदागर!

क्या तुमने जंगल में किसी डाकू को देखा? उसी की तलाश है हमें.

और वह तुम्हारी पत्नी है शायद.


नहीं, मैंने तो देखा नहीं


और इस तरह छज्जू डाकू पुलिस से बच निकलता! लेकिन कपीश ने सब कुछ देखा था!
नहीं, मुझे इस डाकू को भागने का मौका नहीं देना चाहिए!


कपीश ने अपनी पूंछ लंबी की ...


... और लंबी की, और छज्जू की टांग को ...


... एकाएक ऐसे खींचा ...


... कि छज्जू लड़खड़ा कर गिर गया!


छज्जू ने फिर भी अपना मुंह साड़ी से ढंक कर रखा ...


कपीश की पूंछ अब छज्जू के मुंह के पास गयी ...

...और उसने छज्जू के सिर पर से साड़ी का पल्लू नीचे उतारा !

... छज्जू मौरवला गया !

अरे, तुम्हारी बीवी मूंछों वाली है !

अरे ! यह तो छज्जू है !

पुलिसवाले छज्जू पर टूट पड़े ...

...और उसे हथकड़ियां पहना दीं

झूठ क्यों बोले तुम ?

नहीं, सरकार ! वह कुश मेरी पीठ में भोंक देता ! लाचार था.

अरे हां ! वह रस्सी छज्जू के सिर पर किसने डाली ?

रस्सी ? पता नहीं.

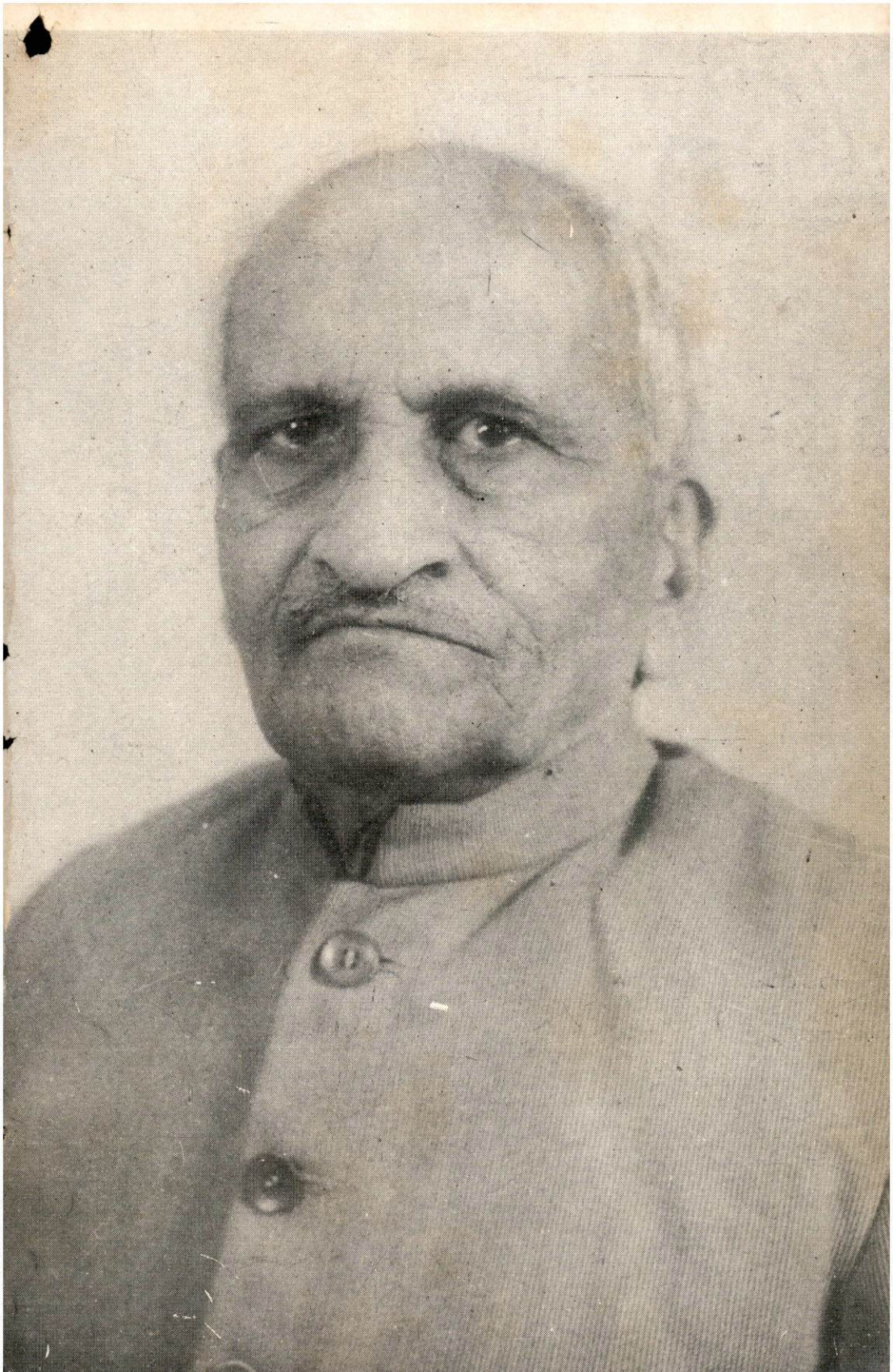
उसी रस्सी ने तो छज्जू का घूंघट उतारा.

मैंने भी देखा, पर वह रस्सी गयी कहां ?

बाद में कपीश ने बुंदिला की पीठ पर सवारी करते हुए सारा किस्सा सुनाया !

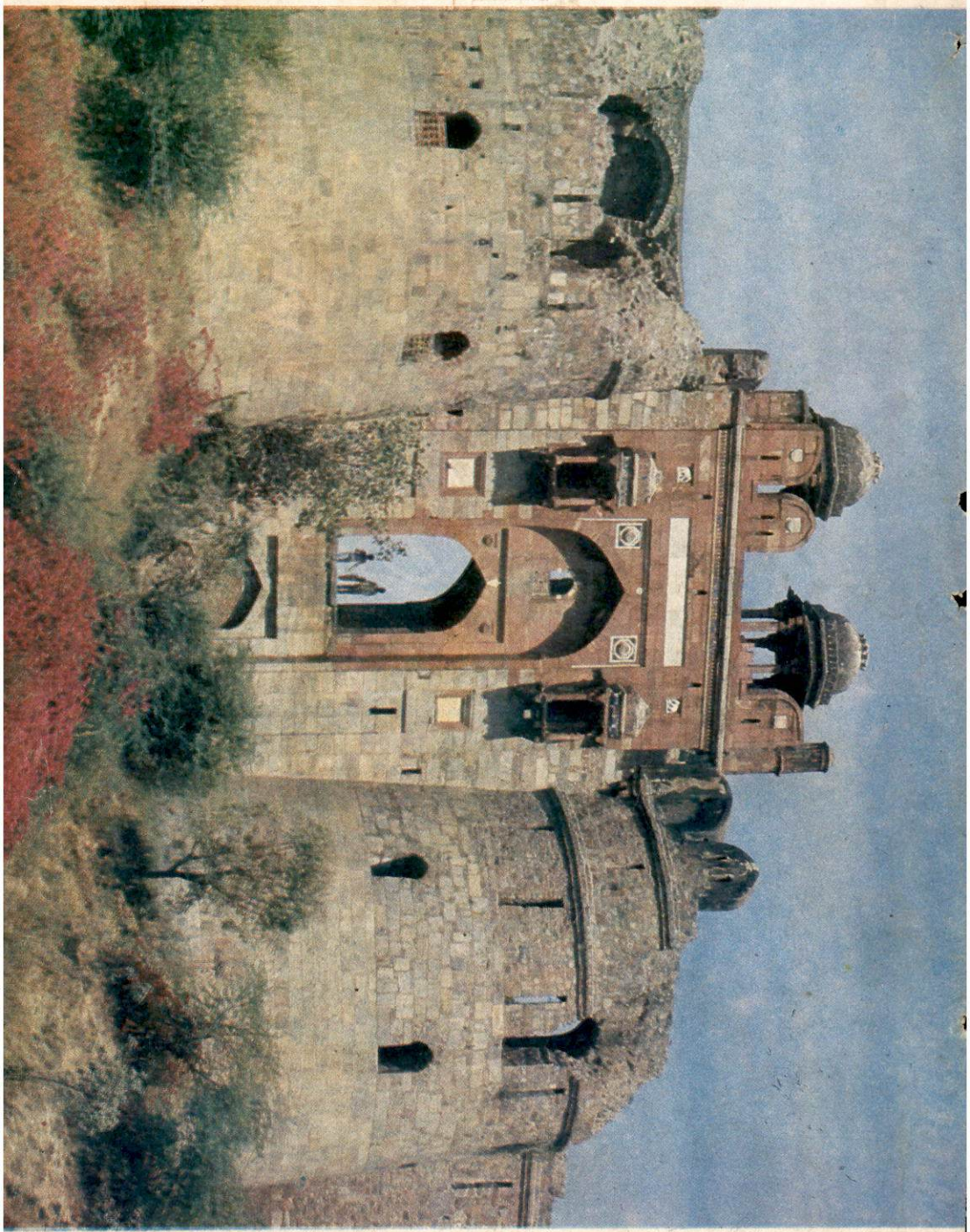
शहर लौटने के बाद भी पुलिसवाले हैरान रहे होंगे कि रस्सी गयी तो कहां गयी !

समाप्त



आर. एन. 699/57
डाक तथा तार रजिस्टर्ड सं.डी. (डी.एन.) 104
लाइसेंस यू. (डी.एन.)- 56
के अधीन-एन.डी.पी.एस.ओ. से पूर्व भुगतान
के बिना भेजने का अधिकार
(दिल्ली डाक)

RN 699/57
P&T Regd. No. D(DN) 104
Licenced U(DN) 56 to
Post without pre-payment at
N.D.P.S.O
(Delhi Postal)



डॉ० श्यामसिंह शशि, निदेशक, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार, पटियाला हाउस,